Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

SPS
891.431 G 97 M
8203

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

—: या :—

* मधुर कविताञ्जली *

(पांच भाग)

अर्थात् प्रधानतया ब्रजभाषा के प्राचीन सुकवियों की
सुकविताओं का अपूर्व संग्रह

संग्रह कर्त्ता :—
चोणवें फुल्ल, भारतदीआं आदर्श देवीआं, जपुजी
सटीक और विजय किसकी ? आदि कर्त्ता
श्री गुरांदित्ता खन्ना
एग्जैक्टिव मेम्बर काशी नागरी प्रचारिणी सभा

साहित्य भवन
घंटाघर अमृतसर ।

मूल्य १)

Sri Pratap Singh
Public Library
Srinagar.
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८८०३

प्रकाशक

साहित्य भवन

घंटा घर अमृतसर ।

प्रथम बार १००० माघ १९८७

बिना संग्रह कर्त्ता की आज्ञा के, कोई सज्जन किसी भी अक्षरों में इसे छापने का साहस न करे ।

मुद्रक—
ज्ञानी पिण्डीदास,
आर्य्य प्रेस अमृतसर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण

यह पुस्तक
काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्राण
और
हिन्दी के धुरन्धर विद्वान्।
श्रद्धेय राय साहब।
बाबू श्यामसुन्दरदास जी बी० ए०।
महोदय के।
पवित्र कर कमलों में।
सादर समर्पित है।

गुरांदित्ता खन्ना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Rajpal Ram Rakha Price Rs. 1/- 3/8/31

निवेदन

इस में कोई सन्देह नहीं कि हिन्दी साहित्य भण्डार में ब्रज भाषा के प्राचीन कवियों की कविताओं के कई संग्रह ग्रन्थ हैं, जिन में "राग रत्नाकर" भी एक बड़ा प्रसिद्ध और सर्वोत्तम ग्रन्थ है। परन्तु मेरा विचार मुद्दत से एक और ऐसा ही, लेकिन कुछ अपने ही ढंग का, नया संग्रह-ग्रन्थ तैयार करने का था, जो कि ईश कृपा से आज पूरा कर पाया हूं।

यह ग्रन्थ कुल पांच भागों में विभाजित है। पहले भाग में मंगलाचरण, उद्बोधन और प्रार्थनात्मक कविताएं हैं, दूसरे में श्री कृष्ण जी के जन्म से लेकर उन के मथुरा गमन और उद्धव-गोपी संवाद सम्बन्धी सुकृतियें हैं तीसरे में श्री रामलीला प्रसंग है, चौथे में केवल शृङ्गार विषयक सुकविताएं हैं और पांचवें भाग में नीति सम्बन्धी और फुटकल सुकृतियें हैं।

यद्यपि इस संग्रह-ग्रन्थ में प्रधानतया ब्रज-भाषा की ही कविताएं संग्रहीत हैं, तथापि अवधी, उर्दू, पंजाबी, खड़ी बोली और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुरुघर की हिन्दी* इत्यादि की भी कुछ एक कविताएं रख दी हैं। आशा है कि रसिक जनों को जरूर ही यह बात रुचिकर होगी, क्योंकि यह भाषाएं भी बड़ी ही मधुर, सुबोध और हिन्दी का ही रूप हैं।

इस संग्रह ग्रन्थको तैयार करते समय इस बातका विशेष ध्यान रक्खा गया है कि एक तो यह ग्रन्थ बहुत बड़ा न बन जाय और दूसरा इस में अङ्कित तमाम कविताएं बड़ी ही सुन्दर, सरल और स्वाभाविक हों। फिर उन की संख्या हजारों तक की तो कौन कहे, सैकड़ों तक भी भले ही न पहुँचें और जो लीलाएं लिखी जाँय, वह भी बेशक समग्र और पूरी पूरी भी भले ही न हों। और इस प्रकार यह एक सुच्चे मोतियों का, परन्तु छोटासा खजाना तैयार हो जाय, ताकि हर कोई इस को हस्तगत कर सके। कहा नहीं जा सकता कि इस में कुछ सफलता हुई भी है या नहीं और यदि हुई है तो कहां तक हुई है!

यह ग्रन्थ मैंने लग भग २५ ग्रन्थों की सहायता से तैयार

---

* जिस हिन्दी में सिख गुरुओं ने कविता की है, उसे मैं गुरुघर की हिन्दी कहता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया है और अपनी जाने तमाम हिंदी कवितायें प्राचीन कवियों की ही रखी हैं।

इस संग्रह में जिन जिन सुकवियोंकी सुकृतियें संग्रहीत हैं, उन सब की सूची प्रायः इस प्रकार है—

१ सूरदास, २ तुलसीदास, ३ केशवदास, ४ नन्ददास, ५ कुम्भणदास, ६ नागरीदास, ७ हरिदास, ८ कबीरदास ९ रविदास, १० धर्मदास, ११ भाई गुरुदास, १२ गिरिधरदास, १३ राधाकृष्णदास, १४ श्री निवासदास, १५ बिहारीलाल १६ मतिराम, १७ देवदत्त, १८ पद्माकर, १९ गंग, २० ग्वाल, २१ सुन्दर, २२ सेनापति, २३ नरहरि, २४ तोष, २५ हितहरिवंश, २६ रसिकविहारी, २७ नारायणस्वामी, २८ परमानन्द, २९ महाराज रघुराजसिंह, ३० राजालक्ष्मणसिंह, ३१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ३२ गुरुनानक देव, (महल्ला पहला) ३३ गुरु अंगददेव (महल्ला दूसरा) ३४ गुरुरामदास (महल्ला चौथा) ३५ गुरु-अर्जुनदेव (महल्ला पांचवां) ३६ गुरु तेगबहादुर (महल्ला नौवां) ३७ गुरु गोविन्दसिंह (पातशाही दसवीं या "स्याम") ३८ रसखान ३९ नवाब अब्दुर्रहीम खान खाना, ४० शेखफ़रीद, ४१ शाहहुसैन ४२ बुल्हेशाह, ४३ मीरांबाई, ४४ चन्द्र सखी, ४५ ललिताकि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शोरी, ४६ ताजबीबी, ४७ शेखबीबी, ४८ चन्द्र कवि, ४९ लाला लाल-चन्द "फ़लक" ५० लाला धनीराम "चात्रिक", ५१ लाला कृपासागर, ५२ सरदार ऐस ऐस चरनसिंह, ५३ बाबू फ़िरोज दीन "शर्फ़" ५४ सरदार मुन्शासिंह 'दुःखी'।

यदि भगवद्भक्तों और साहित्य रसिकोंने इसे पसन्द किया और इसके द्वितीय संस्करण का सुअवसर आया, तथा अपनी अनुकूल परिस्थिति हुई, तो इस संस्करण में जो त्रुटियें रह गई हैं, वह इस में से निकाल दी जायेंगी।

चौक लोहगढ़ अमृतसर
वसंत पंचमी १९८७ वि.

गुरांदित्ता खन्ना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ विषय-सूची ॥

विषय	पृष्ठ संख्या
अ—आ	
अखियां हरिदरसन की प्यासी	१६४
अति ही उताल है निहाल रघुलाल	१८२
अनल ते विरह अगिन अति ताती	१३७
अपने लाल को जिमावत मैया	६०
अब विलम्ब जनि करो लाडली	३८
अब के राखि लेहु गोपाल	४२
अब नए रूपमें ऐ बंसरी वाले आजा	४३
अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल	४७
अब तुम कही हमारी मानो	१२३
अब बर्षा को आगम आयो	१४१
अब अति चकितवंत मन मेरो	१७३
अब ही कौन को मुख हेरौं	१९४
अरिहु दन्त तृन धरत	२६७
अव्वल अल्लाह नूर उपाया	३४
अरा कृपाण खण्डोखड्ग	२८२
अहो तुम सोच करो मति प्यारी	१०७
अहो अहो बनके रूख कहुं देख्यौ पीय प्यारो	१३०
अहो यह शरद शम्भु है आई	
अन्तर ते हरि प्रगट भए	२३१
आई ऋतु पावस न आये प्रान प्यारे यातें	१४१
आओ मेरे भूठन के सिरताज	४३
आओ मेरे मोहन प्यारे भूठे	११६
आज श्री गोकुल में बजत बधाबरारी	५३
आजु बन नीको रास बनायो	१२६
आजु दशरथ के आँगन भीर	१८१
आतुर है वृषभानु सुता	१५६
आये स्याम सुन्दर सनेही घर	२३४
आरती कीजै स्याम सुन्दर की	८
आलीरी तू क्यों रही मुरझाय	८१
आयो चापभंग समाय	१८२
इ—ई	
इतते राधा जात जमुनातट	१०७
इस दुनिया पर रोज मुसाफ़िर	२७
उ—ऊ	
उन्नत चित्त है आर्य	२८२
उर म माखन चोर गडे	१६७
उलटे पग कैसे दीन्हे नंद	१३८
ऊच अपार बेअन्त स्वामी	४०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं	१४५
ऊधो ब्रज को गमन करो	१४६
ऊधो इतनो कहियो जाई	१४७
ऊधो को उपदेस	१५०
ऊधो मन न भयो दस बीस	१५५
ऊधो जोग जोग हम नाहीं	१५५
ऊधो कान्ह दी गल्ल सुना सानूं	१५६
ऊधो धन तुम्हरे विवहार	१६२
ऊधो अँखियाँ अति अनुरागी	१६४
ऊधो कारे सबै बुरे	१६६
ऊधो करमन की गत न्यारी	१७२
ऊधो हम आजु भईं बडभागी	१७२
ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाई	१७४
ए–ऐ	
एक कहैं हँसि ऊधवजू	१६२
एकहिं बेर कहौं सुकहौं	१६३
एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे	११६
ऐरी हुस्नवारी प्यारी	११०
ऐरे मतिमंद चंद धिगहै आनंद तेरो	१४२
ऐसी लाल तुझ बिन कौन करे	३८
ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई	१८५
ऐसो बाबा भरम न भूलहु कोई	२०
ऐसो कब करिहौ मन मेरो	४०
ऐसो को उदार जग माहीं	४७

विषय	पृष्ठ संख्या
क	
कजरी को पय पियहु लालतेरी चोटीबढ़े	५६
कत्त कुड़े न वत्त कुड़े	२२
कन्हैया मेरी छोह बिसारी	१३६
कनक बरन बाल नगन लसतभाल	२१६
कबहुं स्याम जमुना तट जात	१०६
कबहूं ससि मांगत रारि करैं	१८७
कमलसी अँखियाँ लाल तिहारी	६६
क्योंकर जाइए काब नूं	२८
कर कत्तन वल्ल धिश्राण कुड़े	२३
कर विचार वृषभानु दुलारी	११३
करि मूरख मित्र मिताई	२५
करुनामयी रसिकता है तुम्हरी सब झूठी	१२५
कृपानिधान सुजान प्राणपति	१८५
कहत कान्ह जननी समुझाई	६८
कहन स्याम संदेस	१५०
कह्यो कान्ह सुन जसुमति मैया	१४६
कहा कहौं कछु दिवस ते	१४६
कहा लौं कहिए ब्रज की बात	१७५
कहा करौं बैकुंठहिं जाय	३७
कहां हो मेरे कृष्ण कन्हैया	४२
कहां करुनानिधि केशव सोए	४५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
कहूं बनमाल कहूं गुञ्जनि की-माल कहूं	२२१
कहँ को चंद बदन की सोभा	१०६
कहो वह कैसे बरनैं रूप	१०६
कापर दान पहरि तुम आए	६२
काबुल में मेवा करे	२६७
कितकों ढुरिगो वह पार सबै	१०५
किन लई देहु बताय मुरलिया राधा	८०
कुसल स्याम अरु राम	१५२
कुंज पधारो जी रंग भरी रैन	११७
कुंद इंदु समदेह	४
केते दिन हरि सिमरण बिन खोए	१७
कैसे झूलों हिंडोरे	१२०
कैसे भ्रमर चुम्बन करत	२२२
को जानै हरि चरित तुम्हारो	६२
कोउ कहै मेरे आगे नेक तू नाच लाल	६३
कोऊ कहैरे मधुप कहैं अनुरागी तुमको	१६७
कोऊ कहैरी मधुप भेस	१६७
कोऊ कहै री विस्व माँझ	१६६
कोऊ कहैरे मधुप कहा तू रस-की जानैं	१६७
कोऊ कहैरे मधुप कहा मोहन गुनगावै	१६८
कोऊ कहैरे मधुप प्रेम	१६८
कोऊ कहैरे मधुप कौन कहै	१६८
कोऊ कहैरे मधुप निगुन	१६६
कोऊ कहैरे मधुप ज्ञान	१६६
कोऊ कहैरे मधुप तुम्हें लज्जा	१७०
कोऊ कहै रे मधुप साधु	१७०
कोऊ कहै अहो मधुप	१७०
कोऊ कहै रे मधुप होहिं	१७१
कोउ नहिं पकरत मेरो हाथ	२७६
कौन ठगोरी भरी हरि आज	७८
कौन विधि पावें यह कर्म बलवान उदय	१४६
कौन ब्रह्म की जोति	१५२

ख

विषय	पृष्ठ संख्या
खल गगन सों सज्जन दुखी	२८२
खाइ गयो हरि जी जब माखन	६३
खात हैं हरामदाम	२६६
खुरासान खसमाना कीआ	५६
खेलन अब मेरी जात बलैया	५६
खेलन के मिस पै हरि जी	६२
खेलन के मिस कुँवरि राधिका	६८
खञ्जन नैन रूप रस माते	१६५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या

ग-घ

गई आइ दसो दिसि ते गुपिया	१२२
गये स्याम तिहि ग्वालिन के घर	६१
गहो मन सब रस को रस सार	२४
ग्वालन सैन दियो तब स्याम	६७
गाइये गणपति जग बंदन	३
गाइहौं मलारे और जनाइहौं हिये में	२२४
गागर न भरन देत	८३
गांठ में न दाम तातें सूनो लगे-निजधाम	२५५
गारी मत दीजो मो गरीबनी को जायो है	८४
गिरि जनि गिरे स्याम के करते	८७
गिरिवर कैसे लियो उठाई	८७
गिरिवर धरयो आपने घर को	६०
गोपिका अति आनंद भरी	६३
गोरस को निज नाम भुलायो	६६
गोरी रूप दिखाय तबै	१७७
घट भर दियो स्याम उठाइ	८१
घूँघट को पट खोल रे तोहिं पीय-मिलेंगे	१४

च

चढावत मोपै काम कमान	१०६

विषय	पृष्ठ संख्या
चलन चलन स्याम कहत	१३७
चलत देखि जसुमति सुख पावै	५५
चलत न फेरि चितए लाल	१३८
चलहि किन मानिनि कुंज कुटीर	११५
चली प्रातही गोपिका	६५
चले गये दिलके दामनगीर	१४३
चलो चलो चलो मेरीओ सईओ	२१
चलो पिया वाही कदम तरे झूलें	११८
चार वर्ण चार मजहबां	२२
चारहु आश्रम बर्न बसैं	२५६
चैन नहीं दिन रैन परै	११६
चोट लगी इन नैनन की	२२५
चन्द खिलौना लैहौं मैया मेरी	५७
चन्द की कलासी चपलासी तिय सेनापति	२२१
चन्द टरै सूरज टरै	२५६

छ

छतियां लेहु लगाय सजन	१७३
छलियन सों रहो सावधान	२५०
छबि अच्छी बनी बनवारी की	७७
छाडु मन हरि बिमुखन को संग	१०
छांडो लंगर मोरी बहियां गहो ना	८२
छांडो मोरी गैल	८३
छिपाये छिपत न नैन लगे	६६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
छूटी लोक लाज	८२

ज

विषय	पृष्ठ संख्या
जग में पतिब्रत सम नहिं आन	१२५
जग में घर फूट बुरी	२६४
जग सूरज चन्द टरै तो टरै	२५५
जग में तेई चतुर कहावें	२५१
जबहिं स्याम तन अति विस्तारयो	७४
जब लौं तन में प्रान	२५७
जब लौं जग में मान	२५७
जब हरि मुरली अधर धरत	७७
जब हरि मुरली नाद प्रकास्यो	७७
जब आई हैं कातक की रुत सीतल	१२१
जम की सब त्रास बिनास करी	२६३
जमुना जल बिहरत ब्रज नारी	६८
जय जय जगदीस राम	५
जय केशव करुणा कंदा	५
जसुमात बार बार यह भाखै	
जसोदा हरि पालने झुलावै	५४
जसोदा कबहिं बढैगी चोटी	५६
जसोदा कहा कहौं हौं बात	६४
जहि वल वञ्ञां मौत तिते वल	३०
जहँ पिय तहीं सबै सुख साज	१०५
जाके प्रिय न राम बैदेही	३२
जागिये गोपाल लाल	५४
जालम नयन मेरे नहीं रहिंदे	१०६
जाहि कहत तुम कान्ह	१५३
जिन्द मैंडीए तेरे नालदीआं	१३
जिनके हितकारक पंडित हैं	२५१
जिन कुल की मरजाद	२५७
जिन कै अन्तर वसिआ मेरा हरि	१९
जिहिं तन ना हरि भजन कियो	३५
जीभि जोग अरु भोग जीभि बहु-रोग बढावै	२५४
जीवन संगीत	२७७
जुगुल छबि आज अनूप बनी	११३
जुगलबर झूलत दे गर बांहीं	११९
जुवति एक आवति देखी स्याम	८०
जे सउ चंदा उगवेहि	१८
जेहि सुमिरत सिधि होइ	३
जैसे तुम दीनो तन	१४८
जैसी तेरी कटी है तू तैसो मान-करि प्यारी	२२६
जो तुम गोपालहि नहीं गैहौ	१५
जो तुम सुनो जसोदा गोरी	६३
जो देखे द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी	१२९
जो मुख नाहिन हतो	१५३
जो मथुरा हरि जाय बसे	१६०
जोगी तजें जगत हम जोग जगत-दोउ तजे	१६१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
झ	
झूलत पाटकी डोरी गहे	२२४
झूलन चलो हिंडोरना	११८
ट–ठ	
टका करैं कुल हूल टका मिरदंग-बजावै	२५४
ठाकुर तुम सरनाई आयो	३६
ठुमक गति चलत अनोखी चाल	७२
त	
तजि मोहिं काके ऊपर नाथ	२७५
तनक हँस हेरो मेरी ओर	११४
तब हरि भए अंतर्धान	१४८
तुम बिनु ऐसी को करै	४७
ताहि बताओ जोग	१५४
तुम नीके दुहि जानत गैया	७३
तू मोहि को मारन जानति	८४
तू तो मोहिं प्राणन ते प्यारी	११४
तेरो मुख चन्द्र चकोरी मेरे नयना	७६
तेसिय जगति जोति सीस सीस-फूलन की	७५
द	
दधि बेचन चली ब्रज नारि	८९
दही बेचत ब्रज गलिन फिरैं	६६
दया चट्ट ह्वै गई धरम धँसि-गयो घरन में	२५३
दान दिये बिन जान न पैहो	८६
दानी भये नये मांगत दान हो	६०
दिलदार यार प्यारे	६१
दीन मलीन अधीन हैं अंग बिहंग	१८८
दुनियां तों मरजाणा बत न आवणा	२६
देखी गंग की रीति	२६३
देखो री यह कैसा बालक	५४
देखो माई बादर की बरि आई	८५
दो में एको तो न भई	२५
दोउ राजत स्यामा स्याम	१२७
ध	
धन धन भारत की छत्रानी	२७६
धिक है वह देह औ गेह सखी	१०३
धूर भरे अंग खेलत मोहन	५५
न	
न वह रीझै जप तप कीन्हे	२८
नखरा राह राह को नीको	१००
नई अबला रस भेद न जानत	२३७
नवल किशोर नवल नागरिया	१२७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
नव उज्ज्वल जलधार	२६१
नवक नहीं हौं लै आऊं	१८६
नाथ अनाथन की सुधि लीजै	१४८
नाथ अनाथन की सुधि लीजै	१७२
न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां	७२
निठुर बचन जिनि बोलहु स्याम	१२५
निसि बनको काहि उठि धाई	१२३
निसि दिन बरसत नयन हमारे	१६५
नीति दोहावली	२४१
नील सरोरुह स्याम	४
नैन सिलोने स्याम हरि कब-आवहिंगे	१३६
नैन नीर बरसत देखिबेको तरसत	२३१
नैनन को तरसैये कहा लौं	२३२
नंद के कुमार कुरबान तांडी-सूरत पै	५०
नंद बुलावत हैं गोपाल	५६
नंद गये खरिकै हरि लीन्हें	६६
नंद नंदन इक बुद्धि उपाई	८८
नंद कुमार कहा यह कीन्हौं	६४
नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं	१३४

प

विषय	पृष्ठ संख्या
पतझर नाल मरे वृछ बूटे	२६७
पथिक महेनियां डारे जात	१८७
पनघट रोके रहत कन्हाई	८०
प्रथम समागम चाव भरी	७
प्रथम सनेह दुहुन मन जान्यो	६७
प्रथमहिं देउ गिरिहि बहाइ	८५
प्रथम सकल शुचि	२३६
प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो	३६
प्रभु जु तो कहँ लाज हमारी	४८
प्राणी परम पुरुष पग लागौ	१६६
प्रीतम जानि लेहु मन माहीं	३६
प्रीति करि काहू सुख न लह्यो	१४३
प्रीति तौ मरनौ ना विचारै	१६५
प्रेम तरङ्ग	२२७
पाती मधुबन ते आई	१५५
प्यारी को शृङ्गार करत नंदलाल	७६
प्यारी जी तोरे अंग में फूलन की	७६
प्यारी क्यों सुधि हाय विसारी	१४०
प्यारी बिन कटत न कारी रैन	२१८
प्यारी खंड तीसरे रसीली रंग-रावटी	२१६
प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे	१०८
परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे-ऊधो	१४७
पवन लगि डोलत बन की पतियां	१८५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
पाद प्रहार सों जाइ पताल	७
पहिले तो अदा दिखा कत्ल किया	१०८
पिया प्यारी दोउ खेलत होरी	१३२
पुनि पुनि कहैं अहो चलो	१७५
पैंजनी गढ़ाई चोंच सोने से मढाइ-देहौं	२३१

फ

विषय	पृष्ठ संख्या
फरीदा चिंत खटोला वाण दुख	३०
फूली फूलबेली सी नबेली अलबेली बधू	२२३

ब

विषय	पृष्ठ संख्या
बरो है राम नाम की श्रोट	४६
ब्रज के लता पता मोहिं कीजै	३७
बन में बृषभानु कुमारि मुरारि	११८
ब्याकुल भई घोष कुमारी	१२६
ब्याकुल काम सतावत मोहिं	१४२
ब्रज बसिन पटतर कोउ नाहीं	६६
ब्रजबासी यह मुनि सब आए	७४
बृषभानु सुता अतिप्रेम छकी	१४०
बरु सूरज पच्छिम उगे	१५६
बसैं बिन्दु माधव	२५८
बसो मेरे नैनन में नंदलाल	३६
बहुरीं वे तबीबा मैंडी जिन्द गईआ	२६
बात सुनी जब गोपिन की	६४
बातन में लई राधा लाई	७०
बाधा दे राधा कित गई	१११
बामकर टेक्यो ब्रजराज	८६
बार बार जसुमति सुत बोधति	५७
बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय	२५२
बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे	१७१
बिहारी रत्नावली	१६८
बीत गये दिन भजन बिना रे	१४
बीती ताहि बिसारि दै आगे की सुधि लेइ	२५२
बुल्लेह नूं लोक मत्ती देंदे	२६
बूझत स्याम कौन तू गोरी	६७
बैठी शकुन मनावत माता	१६४
बैठी थी सखिन संग पिय को गवन सुन्यो	२१८
बोली एक नारी सुनो अवध-बिहारी	१८३
बंदउं गुरु-पद-कंज	४
बंदौं हरिपद सुखदाई	४
बंसीवारे तू मेरा गली आजारे	७६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
भ	
भजिमन चरण कमल अविनाशी	१२
भजुमन राम चरण सुखदाई	६
भरत मुख निरखि राम बिलखाने	१८८
भाई रे ऐसा पंथ हमारा	३२
भावत न पानी पान आकुल	२३३
भीगत कुंजन में दोऊ आवत	१२१
भुक्खे दे मूंह पावणा एं	२६
भूलति ना वह भूलनि बाल की	२२५
भेज्यो तुम जोग हम लियो धर	१६०
भोर भए उठ आए मोहन	११३
भोरी बैस इन्दुमुखी सांकरी गली	२२०
म	
मधुकर स्याम हमारे चोर	१६३
मधुकर इतनी कहियहु जाई	१७१
मन पछितैहैं अवसर बीते	१०
मन रे परसि हरि के चरन	११
मन हाली किरसाणी	१७
मन मोहन तें बिछुरी जब सों	२०५
मन भावनि भई सांझ सुहाई	२३५
मनौ हौं ऐसे ही मरि जैहौं	१४४
ममता तू न गई मेरे मन तें	२७
मरदाने की	२८३
मरे बैल गरियार मरे वह	२५३
महरि पुकारति कुँवर कन्हाई	७४
माखन चोर री हौं पायो	६२
माखन खात पराए घर को	६४
माघ बितात भए रुत फगुन	१३२
मानुष हौं तो वही रसखान	३७
मानो भुजंगिनि कंज चढी	११०
मुख जाहि निसापति की सम है	१२१
मूक होइ वाचाल	४
मेरी सुध लीजो श्री नंदकुमार	४६
मेरे पिया मिले सतज्ञानी	३२
मेरे तो गिरिधर गोपाल	४१
मेरे कमल नयन प्रान ते प्यारे	
मेरो मन हरि हठ न तजै	३८
मेरो मूंह चूमे तेरी पूजि साध	२२२
मैने नाम रतन धन पायो	३४
मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो	५८
मैया मोहिं बडो करलै री	६०
मैया री मोहिं माखन भावै	६७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो	६५
मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै	६६
मैया मैं गाय चरावन जैहौं	७१
मैया मेरी कमरी चोर लई	७३
मैं जानति हौं ढीठ कन्हैया	८४
मैं अपने मन गर्व बढायो	१३०
मैं तुम सों सति भाव कही है	१८६
मो सम कौन कुटिल खल कामी	४१
मोहन इतनो मोहि चित धरिए	१३६
मंडलरास बिलास महारस	१२७
मन्द ही चँवते इन्द्र बधु के बरन	२२१

य

विषय	पृष्ठ संख्या
यह कमरी कमरी कर जानत	६१
यह नयना रिझवाव नयेरी	१०१
यह युवतिन को धर्म न होई	१२४
यह ससि सीतल काहेते कहियत	१४२
यह सब सगुण उपाधि	१५३
या रितु रूस रहन को नाहीं	१२०
या ब्रज में कैसी धूम मचाई	१३३
यौवन रूप अनूप नवीन यह	२२६

र

विषय	पृष्ठ संख्या
रचित प्रभासी भासी	२५६
रति रन विषे जो रहेहैं पति सनमुख	२३२
रहहु भवन हमरे कहे भामिनि	१८४
रहसि २ हँसि २ के हिंडोरे चढि	२२३
राजैं सुर ह्यां तो यह	२६०
राधा सों माखन हरि मांगत	६३
राधा स्याम स्याम राधा संग	१२
राधा प्यारी परम उजारी	११५
राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी	११५
राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो	११६
राधिका माधवै एकाह सेज पै	७०
राधे निरखि भूली अंग	६५
राम सिमर पछुत हिंगा मन	१३
रास रस करत गोपियन बिहार	१३६
री बंसी कौन तप तैं कियो	७६
रे मन ऐसो करि सन्यासा	११
रे मन इहि विधि जोगु कमाओ	१५
रैन संजे गिन को सुखदाई	२३४
रैनि रस रास सुख करत बीती	१३१

ल

विषय	पृष्ठ संख्या
लटकत चलत जुवती सुखदानी	७२
लहौ सुख सब विधि भारत वासी	२८१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
लाग गई तब लाज कहां री	१०७
लाज मेरी राखो श्याम हरि	४६
लाल को नचन सिखावत प्यारी	१२८
व	
विलम्भ तज माखन दे री माई	७१
वै तुम तें नहीं दूरि	१५२
श	
शिक्षा दे रही जी हमको रामयण	१६५
श्री रघुनाथ की प्रान प्रिया	१०४
शहु नूं तूं केहड़े गुण लगेंगी प्यारी	२०
शोर उठत महि खूब लटपटत	१८२
शौकी बंसरी या	२६६
स	
सखी याकी बंसी लीजे चोर	७६
सखी ये नैना बहुत बुरे	१०१
सखी मेरे मन की को जानै	१०२
सखी हम कहा करैं कित जाँय	१०१
सखी नन्दलाल आवन नहिं पावैं	११३
सजनी नवल कुंज बन फूले	१०२
सब से ऊँची प्रेम सगाई	६७
सब मिलि गाओ प्रेम बधाई	६७
सब को सुख दाई अति मन भाई	१२२
सबै दिन गये विषय के हेत	२५
स्याम तिहारी मदन मुरलिया	७८
स्याम सुनहु इक बात हमारी	६४
स्याम भये वृषभानु सुता वश	१०८
स्याम कर पत्री लिखी बनाइ	१४३
स्याम तन स्याम मन स्याम	१६१
स्वामी सल्ल जुदाई दे बुरी कीती	१८६
ससि बिन सूनी रैन ज्ञान बिन	२५४
सहत विविध दुख मरि मिटत	२५६
साधो मन का मान त्यागो	२४
साईं अपने भ्रात को कबहुं दीजै	२५१
सांवरे क्यों मोसों रिस मानी	१०४
सिंहासन बैठारा	१५१
सिंह गमन सुपुरुष बचन	२५६
सीखत कोउ न कला	२८१
सीतल समीर ढार मंजन कै	२३२
सुख सागर है साध संग	२१
सुनहु बात जुवती इक मोरी	६४
सुनहु गोपी हरि को संदेस	१५४
सुनत स्याम को नाम	१५१
सुनु दिल जानी साडे दिल की	५०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठ संख्या
सुन सखी आज झूलन नहिं जैहौं	१२०
सुनत सखा के बैन नैन भरि	१७६
सुनु कपि वह रघुनाथ नहीं	१८९
सेल गई बरछी गई	२०६
सेस गनेस महेस	६६
सोओ सुख निंदिया प्यारे ललन	२३०
सँदेसो देवकी सों कहियो	१४५
ह	
हम पर रिस करति ब्रजनारी	९२
हम भक्तन के भक्त हमारे	२५८
हांसी गई भूल यम दूतन	२६१
हम से रूठ रहत क्यों प्यारी	११४
हमारो दान देहु ब्रजनारी	८९
हमहूं सब जानतीं लोक की	१०३
हरि की गति नहिं कोऊ जानै	३२
हरि दरसन कउ मेरो मन	४०
हरि की प्रीति उर महिं करके	१३५
हे वृषभानु सुत ललिते	१४८
हो सचेत कहि भलो सखा	१७६
हौं इक नई बात सुनि आई	५३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

प्रथम-भाग

मंगलाचरण, उद्बोधन

और

प्रार्थना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओ३म्

सरस साहित्य

मंगलाचरण

(राग भूपाली)

गाइये गणपति जग बंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ॥
सिद्धि सदन गज वदन विनायक ।
कृपासिंधु सुंदर सब लायक ॥
मोदक-प्रिय मुद मंगल दाता ।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥
मांगत तुलसी दास कर जोरे ।
बसैं राम सिय मानस मोरे ॥

(२)

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करि वर-वदन ।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ-गुन सदन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३)

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़इ गिरिवर गहन ।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलि-मल दहन ॥

(४)

नील सरोरुह स्याम, तरुन-अरुन वारिज-नयन ।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीर-सागर-सयन ॥

(५)

कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करउ कृपा मर्दन मयन ॥

(६)

बंदउं गुरु-पद-कंज, कृपासिन्धु नर-रूप हरि ।
महा-मोह-तम-पुंज, जासु बचन रवि कर निकर ॥

राग भैरव (७)

बन्दौं श्री हरिपद सुखदाई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधरे को सब कछु दरसाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहरो सुनै गुँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बारंबार नमो तिहिं पाई।

ध्रुवपद चौताला (८

जय जय जगदीस राम, श्याम धाम पूर्ण काम।
आनँद घन ब्रह्म विष्णु, सत् चित सुखकारी॥
कंस-रावनादि काल, सतत-प्रनत-भक्त पाल।
सोभित गल मुक्तमाल, दीन ताप हारी॥
प्रेम भरन पाप हरन, असरन जन-सरन-चरन।
सुखहि-करन दुखहि-दरन, वृन्दावनचारी॥
रमा-वास जग-निवास, राम रमन समन त्रास।
बिनवत हरिचन्द दास, जय जय गिरिधारी॥

—:०:—

चाल नाम कीर्तन महाराष्ट्री कटाव (६)

(६)

जय केशव करुणा कंदा।
जय नारायण गोविंदा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जय गोपीपति राधानायक।
कृष्ण कमल-लोचन सुखदायक ॥
माधव सुरपति रावण-हंता।
सीतापति जदुपति श्रीकंता ॥
बुद्ध नृसिंह परशुधर बावन।
मच्छ कच्छ बपुधर गज-पावन ॥
कल्कि बराह मुकुंदा।
जय केशव करुणा कंदा ॥
जय जय विष्णु भक्त भयहारी।
बृन्दावन वैकुंठ बिहारी ॥
जसुदा सुअन देवकी नंदन।
जगबंदन प्रभु कंस निकंदन ॥
शंख चक्र कौमोदकि धारी।
वंशीधर बक-वदन-विदारी ॥
जय बृंदाबन चंदा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जय केशव करुणा कंदा ॥
जय नारायण गोविंदा।

(१०)

पाद प्रहार सों जाई पताल न भूमि सबै तनु बोझके मारे॥
हाथ नचाईवे सों नभ मैं, इतके उत टूटि परैं नहीं तारे॥
देखन सों जरि जाहिं न लोक न खोलत नैन कृपा उरधारे।
यों थल के बिनु कष्ट सों नाचत शर्व हरौ दुख सर्व तुम्हारे॥

(११)

प्रथम समागम चाव भरी पिय सम्मुख धाई।
पै पाछे कछु सोच फिरी अति मनहि लजाई॥
पुनि सूधी भई सीख बन्धु वधुवन की मानी।
सम्मुख पियहि निहारि भई अति भयरस सानी॥
तन पुलकावलि छाई तियहि, धाय ईस अङ्कहि भरैं।
ऐसी पिय प्यारी गिरिसुता, नित तुम्हार मंगल करैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग रामकली (१२)

आरती कीजै स्याम सुंदर की।
नंदकुमार राधिका बर की॥
भक्ति कर दीप प्रेम कर बाती।
साधु संगत कर अनुदिन राती॥
आरती ब्रज युवती मन भावै।
स्याम लीला हित हरिवंश गावै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग विभास(१३)

भजु मन राम चरण सुखदाई ।

जिहि चरणन से निकसी सुरसरी, शंकर जटा समाई ।
जटा-शंकरी नाम पर्यो है, त्रिभुवन तारन आई ।
जिहि चरणन की चरण पादुका, भरत रह्यो लिव लाई ।
सोई चरण केवट धोय लीनो, तब हरि नाव चलाई ।
सोई चरण संतन जन सेवत, सदा रहत सुखदाई ।
सोई चरण गौतम ऋषि नारी, परस परमपद पाई ।
दंडक बन प्रभु पावन कीनो, ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोकि के स्वामी, कनक मृगा संग धाई ।
कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल, तिन जाए छत्र फिराई ।
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर, परसत लंका पाई ।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, सेस सहस मुख गाई ।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१४)

छाड़ु मन हरि बिमुखन को संग ।
जाके संग कुबुद्धि उपजै परत भजन में भंग ।
कागहि कहा कपूर खवाये स्वान न्हवाये गंग ।
खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषन अंग ।
पाहन पतित बान नाहिं बेधत रीतो कर निषंग ।
सूरदास खल कारी कामरी चढ़त न दूजो रंग ।

(१५)

मन पछतैहैं अवसर बीते ।
दुरलभ देह पाइ हरि पद भजु करम बचन अरु ही ते ।
सहस बाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते ॥
हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते ।
सुत बनितादि जानि स्वारथ रत न करु नेह सब ही ते ॥
अन्तहुं तोहिं तजैंगे पामर तू न तजै अब ही ते ।
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुरासा जी ते ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुझै न कामअगिनि तुलसीकहुं विषयभोग बहु घी ते ।

राग रामकली पातशाही दसवीं(१६)

रे मन ऐसो करि संन्यासा ।
बनसे सदन सबै करि समझहु,मन ही माहिं उदासा । रहाउ
जत की जटा जोग को मँजनु, नेम के नखन बढ़ाओ ।
ज्ञान गुरू आतम उपदेसहु, नाम बिभूति लगाओ ॥१॥
अल्प अहार सुल्प सी निद्रा, दया छिमा तन प्रीति ।
सील संतोष सदा निरबाहिबो, ह्वैबो त्रिगुण अतीति ॥२॥
काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन सों ल्यावै ।
तबही आतम तत्त को दरसै परम पुरुष कहँ पावै ॥३॥

(१७)

मन रे परसि हरि के चरन ।
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन ।
जे चरन प्रहलाद परसे इन्द्र पदवी धरन ।
जिन चरन ध्रुव अटल कीनो राखि अपने सरन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिन चरन ब्रह्मंड भेट्यो नख सिखौ श्री भरन ।
जिन चरन प्रभु परसि लीने तरी गौतम घरन ।
जिन चरन कालिहि नाथ्यौ गोप लीला करन ।
जिन चरन धारयो गोवरधन गरब मघवा हरन ।
दास मीराँ लाल गिरिधर अगम तारन तरन

(१८)

भजि मन चरन कमल अविनासी ।
जेतइ दीसे धरनि गगन विच तेतइ सब उठि जासी ।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीने कह लिए करवट कासी ॥
इस देही का गरब न करना माटी में मिलि जासी ।
यो संसार चहर की बाजी साँझ पड्यां उठ जासी ॥
कहा भयो है भगवाँ पहरयाँ घर तज भए सन्यासी ।
जोगीहोय जुगुतिनहिं जानी उलटि जनम फिरि आसीं ॥
अरज करौं अबला कर जोरे स्याम तुम्हारी दासी ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर काटौ जम की फाँसी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफ़ी (१६)

जिंद मैंडड़ीए तेरे नालदीआं दा वख़्त विहाणा ।
रातीं कत्तें रातीं अटेरें गोशे लावें ताणा ॥
इक तंद अवल्ली पै गईआ, साहिब मूल न भाणा ।
चार दिहाड़े गोइल वासा, उठ चलणा गुलवाणा ॥
आई चिट्ठी ढिल्ल न करनी, की राजा की राणा ॥२॥
किसे नवां किसे पुराणां किसे अद्धोराणा ।
कहे हुसैन फ़कीर साईं दा, बिन मतलब उठ जाणा ॥३॥

राग मारू (२०)

राम सिमर, पछुताहिंगा मन ।
पापी जियरा लोभ करत है, आज काल उठि जाहिंगा। रहाउ
लालच लागे जनम गवाया, माया भरम भुलाहिंगा ।
धन जोबन का गरब न कीजै, कागद ज्यूं गल जाहिंगा ॥१
जौ जम आइ केस गाहि पटकै, ता दिन कछु न बसाहिंगा ।
सिमरन भजन दया नहीं कीनी, तौ मुख चोटाँ खाहिंगा॥ २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धरमराज जब लेखा मांगै क्या मुख लैके जाहिंगा ।
कहत कबीर सुनहु रे संतहु, साध संगति तर जाहिंगा ॥३॥

(२१)

बीत गये दिन भजन बिना रे ।
बाल अवस्था खेल गँवायो जब जवानी तब मान कियो रे ।
लाहे कारन मूल गँवायो अजहुँ न मिटी तेरे मनकी तृषा रे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पार उतरि गयो सन्त जना रे ।

(२२)

घूंघट का पट खोल रे, तोहिं पीय मिलेंगे ।
घट घट में वह साईं रमता. कटुक बचन मत बोल रे ॥
धन जोबन को गरब न कीजै, झूठा पचरंग चोल रे ।
सुन्न महल में दियना बारिले, आसन सों मत डोल रे ॥
जोग जुगत सों रंगमहल में, पिय पायो अनमोल रे ।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम कली पा० १० (२३)

रे मन इहि विधि जोगु कमाओ ।

सिङी साँच अकपट कंठला ध्यान बिभूति चढ़ाओ ।रहाउ

ताती गहु आत्म बसिकर की भिच्छा नाम अधारं ।
बाजे परम तार ततु हरि को, उपजै राग रसारं ॥१॥
उघटै तान तरंग रंग अति ज्ञान गीत बंधानं ।
चकि २ रहे देव दानव मुनि, छकि २ ब्योम विमानं ॥२॥
आतम उपदेस भेस संजम को, जाप सु अजपा जापै ।
सदा रहै कंचन सी काया, काल न कबहूं ब्यापै ॥३॥

—:०:—

(२४)

जो तुम गोपालहि नहीं गैहौ ।

तो तुम को सुख में दुख उपजै सुखहिं कहाँ ते पैहौ ।
माला नाय सकल जग डहको झूँठो भेख बनैहौ ।
झूँठे ते साँचे तब होइ हौ हरि की सरन जब ऐहौ ।
कनरस बतरस और सबै रस झूँठहि मूड़ डुलैहौ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझ जैहौ ।
जौ जन राम नाम रंग राते और रंग न सोहै हौ ।
कहे रौदास सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितै हौ ।

रामकली पा० १० (२५)

प्रानी परम पुरुष पग लागो ।
सोवत कहा मोह निद्रा मैं कबहूं सुचित ह्वै जागो ।१ रहाउ
औरन कहा उपदेसत है पसु, तोहि प्रबोध न लागो ।
सिंचित कहा परे बिषियन कहँ, कबहुँ बिषै रस त्यागो ॥२
केवल करम भरम से चीन्हु, धरम करम अनुरागो ।
संग्रह करो सदा सिमरन को, परम पाप तजि भागो ॥३
जाते दूख पाप नाहिं भेटै, काल जाल ते तागो ।
जो सुख चाहो सदा सभन को, तौ हरि के रस पागो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग जंगला (२६)

इस दुनिया पर रोज मुसाफ़िर नित उठ बाग बहार नहीं ।
काची कंध बालू का गारा, तिस पर महल उसार नहीं ।
भाई बंधु कुटुंब घनेरा, भीर पड़ी कोई यार नहीं ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आवन दूसरी बार नहीं ।

—:○:—

राग धनाश्री (२७)

केते दिन हरि सिमरण बिन खोए ।
पर निन्दा रसना के रस सों अपने करम बिगोए ।
तेल लगाय कियो तनु मरदन, बस्तर मल मल धोए ।
तिलक लगाए चले बन स्वामी, विषयन के संग जोए ।
काल बली ते सब जग कांप्यो, ब्रह्मादिक मुनि रोए ।
सूर अधम की कौन गती है, उदर भरे भर सोए ।

सोरठ महल्ला पहिला घर दूसरा (२८)

मन हाली किरसाणी करणी सर्म पाणी तन खेत ।
नाम बीज संतोष सुहागा रक्ख गरीबी वेस ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भउ करम कर संजमी से घर भागठ देख ॥ १ ॥
बाबा माया साथ न होई ।
इन माया जग मोहिआ विरला बुझै कोई ॥ रहाउ ॥
हाण हट्ट कर आरजा सच्च नाम कर वत्थ ।
सुरत सोच कर भांडसाल तिस विच्च तिसनो रक्ख ॥
वणजारिआं सिउ वणज कर लै लाहा मन हस्स ॥२॥
सुण सासत सउदागरी सत घोड़े लै चल्ल ।
खर्च बन्न चंगिआईआं मत मन जाणहिं कल्ल ॥
निरंकार के देस जाह ता सुख लहहि महल्ल ॥ ३ ॥
लाइ चित्त कर चाकरी मन्न नाम कर कम्म ।
बन्न बदीआं कर धावणी ताको आखै धन्न ।
नानक वेखै नदर करि चढै चवगण वन्न ॥

श्लोक महल्ला दूसरा (२९)

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चढहि हजार ।
एते चानण होदिआं गुर बिन घोर अंधार ॥
जो सिर साई न निवै सो सिर दीजै डार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नानक जिस पिंजर मै बिरहा नहीं सो पिंजर लै जार ॥
जिस पिआरे सिउ नेह तिस आगै मर चलिये ।
धृग जीवरा संसार ताकै पाछै जीवरा ॥

—:०:

राग सूही महल्ला चौथा (३०)

जिन कै अन्तर वसिआ मेरा हरि हरि तिनके सभ रोग गवाए । ते मुक्त भए जिन हरि नाम ध्याया तिन पवित परम पद पाए ॥१॥ मेरे राम हरि जन अरोग भए । गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रह्मा बिसनु महादेउ त्रै गुरा रोगी विच हउमै कार कमाई ॥ जिन कीए तिसहि न चेतहि बपड़े हरि गुरमुख सोझी पाई ॥ २ ॥ हउमै रोग सब जगत् व्यापिआ तिन कोउ जन्म मरन दुख भारी ॥ गुरपरसादी को विरला छूटै तिस जन कउ हउ बलिहारी ॥३॥ जिन सिसट साजी सोई हरि जानै ताका रूप अपारो । नानक आपे वेख हरि विगसै गुरमुख ब्रह्म विचारो ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी (३१)

शहु नूं तूं केहड़े गुण लगेंगी पिआरी ।
अंदर तेरे कूड़ा भरिआ, मूल न दित्तीआ बुहारी ॥१॥
शहु नूं तूं केहड़े गुण लगेंगी पिआरी ।
चर्खा कत्त वलल्लीए कुड़ीए, चर्खे दी करलै कारी ॥२॥
कहे हुसैन फ़कीर अल्लाह दा, अमलां बाझ खुआरी ।

—:०:—

राग केदारा (३२)

ऐसो बाबा भरम न भूलहु कोई ।
अठसठ तीर्थ क्यों निसतरियै जब लग आतम सुद्ध न होईं
गंगा जाइ बनारस जावै बदरी जाइ किदारै,
भी तारन समरत्थ न कोई जौ लौं मनहु न तजै विकारै ॥१॥
मथुरा जाइ गुदावरि जावै द्वारका जाई जगन्नाथ रे ।
भी तारन समरत्थ न कोई जौ मनहु न उतरै पाप रे ॥२॥
जत संजम तीरथ नबेरा दया धर्म्म कर वार रे ।
कर कठिनाई तरन की इह विध छाड झूठ कर साद रे ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आतम सुद्ध तीर्थ कर जानहु खिमा धर्म्म इसनान रे ।
काह्ना सत् संगति ते सीझसी अवर सकल उनमान रे ॥४॥

काफ़ी (३३)

चलो चलो चलो मेरीओ सईओ नी !
असां तां मुल्क अनडिठड़े नूं जाणा ।
ना मैं कत्तिआ ना मैं तुम्मिआ, ना मैं लाही छल्ली ।
इस चर्खे दी सार न जाती, दाज विहूणी चल्ली ॥
बाबल मैनूं दाज जु दित्ता, इक चुन्नी इक चोली ॥
रल मिल सईआं टोरन आईआं, डोली पई अवल्ली ।
कहे हुसैन फ़कीर निमाणा, ओड़क जंगल मल्ली ॥

वार (३४)

सुख सागर है साध संग, सोभा लहर तरंग अतोले
माणक मोती हीरिआं, गुर उपदेश अवेस अमोले ॥
राग रंग अनहद धुनी शब्द सुरत लिव अगन अबोले ।
रिधासिध निध सभ गोल्लीआं, चार पदार्थ गोइल गोले ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लख लख चंद चरागची लख लख अमृत पीवन झोले।
काम धेन लख पारजात जंगल अंदर चरन अडोले।
गुरमुख सुख फल बोल अबोले।

वार (३५)

चार वर्ण चार मजहबां जग विच हिन्दू मुसलमाणे।
खुदी बखीली तक्कबरी खिच्चो ताण करेण धिङाणे।
गंग बनारस हिन्दूआं, मक्का काबा मुसलमाणे।
सुन्नत मुसलमाण दी तिलक जञूं हिन्दू लुभाणे।
बेद कतेब भुलाइ कै मोहे लालच दुनी सैताणे।
सच किनारे रहि गिआ, खहि मरदे बाहमण मौलाणे।
सिरों न मिटे आवण जाणे।

काफी (३६)

कत्त कुड़े ना वत्त कुड़े,
छल्ली लाह भरोटे घत्त कुड़े।
दाज विहूणी जावेंगी, तां किसे भली नां भावेंगी।

8203

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण होसी तां शहु भावेंगी, तूं लैखां काई मत्त कुड़े ।
तेरे बाबल गंढीआं पाईआं नी, दिन थोड़े चा मंगाईआं नी
तैनूं खबरां अजे न आईआंनीं, घर पेकिआं दे दिन सत्त कुड़े
तेरे नालदीआं दाज रंगाए नी, उन्हां सूहे सालू पाएनी ।
तूं उलटे पैर क्यों चाए नी उथे जाएं तां लग्गी तत्त कुड़े ।
"बुल्लाह शाह" तैनूं विआहवन आवेगा,
चूड़ा बड़ा हार लिआवेगा ।
गुण होवे तां गल लावेगा, नहीं रोवेंगी हञ्झू रत्ता कुड़े ।

काफ़ी (३७)

कर कत्तन वल्ल धिआण कुड़े ।
जे दीवा अपने पास जगावें, कत कत सूत भरोटे पावें ।
अक्ख विच्चों तू रात लंघावें, औक्खी करके जान कुड़े ।
राज पेका दिण चार कुड़े, ना खेडो खेड गुजार कुड़े ।
तूं सदा न पेके रहिणा ए, न पास अम्बड़ी बहिणा ए ।
तू नित्त विछोड़ा सहिणा ए, वस पैसें सस्स निशान कुड़े ।
जद घर बिगाने जावेंगी, मुड़ वत्त न ओथों आवेंगी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओथे जाके पछोतावेंगी, कुछ अगदों कर समिआरण कुड़े ।
जदसब सईआं टुरजाणगीआं, फिरमूल न ओथोंआणगीआं
ओह चर्खेमूल न डाहणगीआं, तेरा त्रिंजण होसी वैराणकुड़े ।
इक ऐसा वेला आवेगा, सब अंग साक तज जावेगा,
कर मद्दत पार लंघावेगा, ओह बुल्लेहेदा सुलतान कुड़े

राग गौड़ी महल्ला नौवां (३८)

साधो मन का मान त्यागौ ।
काम क्रोध संगति दुरजन की ताते अहिनिस भागौ ।रहाउ
सुख दुख दोनों समकरी जानै, आरं मान अपमाना ।
हरख सोगते रहे अतीता, तिन जग तत्त पछाना ॥१॥
उसतती निंदा दोऊ त्यागै, खोजै पद निरबाना ।
जन नानक इह खेल कठिन है, किनहू गुरुमुख जाना ॥२॥

(३९)

गहो मन सब रस को रस सार ।
लोक बेद कुल करमै तजिये भजिये नित्य बिहार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गृह कामिनि कंचन धन त्यागौ सुमिरो स्याम उदार।
गति "हरिदास" रीति संतन की गादी को अधिकार।

(४१)

सबै दिन गये विषय के हेत।
तीनो पन ऐसे ही बीते केस भये सिर सेत।
आँखिन अन्ध स्रवन नहिं सुनियत थाके चरन समेत।
गंगा जल्ल ताजि पियत कूपजल्ल हरि तज़ि पूज़त प्रेत।
राम नाम बिन क्यों छूटोगे चन्द्र गहे ज्यों केत।
सूरदास कछु खर्च न लागत राम नाम मुख लेत!

(४२)

दो में एको तो न भई।
ना हरि भजे न गृह-सुख पाये बृथा बिहाय गई।
ठानी हुती और कछु मन में औरै आनि भई।
अविगत गति कछु समुझि परत नहिं जो कछु करत दई।
सुत सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निसिदिन होत खई।
पद नख चंद चकोर बिमुख मन खात अँगार भई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय विकार दवानल उपजी मोह बयार बई ।
भ्रमत भ्रमत बहुते दुख पायो अजहुं न टेव गई ।
कहा होत अब के पछताने होनी सिर बितई ।
सूरदास सेये न कृपानिधि जो सुख सकल मई ।

(४३)

बुल्लेह नूं लोक मत्तीं देंदे, "बुल्लेह तूं जा बैह मसीती" ।
विच्च मसीतां की कुझ हुंदा,जे दिलों नमाज न कीती ॥
बाहरों पाक कीते की हुंदा, जे अंदरों गई न पलीती ।
बिन मुर्शद कामल दे बुल्लिहा,तेरी ऐवें गई इबादत कीती ॥१

काफ़ी (४४)

दुनियां तों मर जाणा वत्त ना आवणा ।
जो कुछ कीत्तो बुरा भला वो कीत्ता आपणा पावणा ॥
आदमियों फिर मुर्दा कीत्ता,
मित्र पिआरिआं तेरा चोला सीत्ता,
गोर मंजल पुचावना ॥१॥
चार दिहाड़े गोइल वासा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या जाणा कित ढुलसी वो पासा,
बालक मन परचावना ॥२॥
चहुं जणिआं मिल झोल मझोली,
कंधे उठाइ लिता डंडा डोली,
जंगल जाइ वसावणा ॥३॥
कहै हुसैन फ़कीर रबाणा,
कूड़ कुड़ावा करदा ई माणा,
खाक दे विच्च समावणा ॥४॥

(४५)

ममता तू न गई मेरे मन तें ।
पके केस जन्म के साथी लाज गई लोकन तें ।
तन थाके कर कंपन लागे जोति गई नैनन तें ।
स्रवन बचन न सुनत काहू के बल गये सब इन्द्रिन तें ।
टूटे दसन बचन नहिं आवत सोभा गई मुखन तें ।
कफ पित बात कंठ पर बैठे सुतहिं बुलावत कर तें ।
भाइ बन्धु सब परम पियारे नारि निकारत घर तें ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसे ससि मण्डल विच स्याही छुटे न कोटि जतन तें।
तुलसीदास बलि जाऊं चरन तें लोभ पराये धन तें।

(४६)

न वह रीझै जप तप कीन्हे ना आतम के जारे।
न वह रीझै धोती नेती ना काया के पखारे।
दया करै धरम मन राखै घर में रहै उदासी।
अपना सा दुख सब का जानै ताहि मिलै अविनासी।
सहै कुसबद बादहु त्यागै छांडै गर्व गुमाना।
यही रीझ मेरे निरंकार की कहत मलूक दिवाना।

काफ़ी (४७)

क्यों कर जाईए काबे नूं।
दिल लोचे तख़्त हजारे नूं।

लोक जु सजदा मक्के नूं करदे, मेरा यार पियारे नूं ॥१॥
औगण वेख न भुल मियां रांझा, याद करीं उस कारे नूं ॥२॥
मैं मणतारू तरन न जाणां, शर्म पई तुध तारे नूं ॥३॥
सानी तेरा कोई न मिलिआ, बुल्लाह ढूंड रिहा जग सारे नूं ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी (४८)

बहुरीं वे तबीबा मैंडी जिंद गईआ ।
तेरे इश्क नचाया कर थय्या-थय्या ॥
इश्क डेरा मेरे अंदर कीत्ता, भर के जहिर प्याला मैं पीता ।
झबदे आवीं वे तबीबा, नहीं तां मैं गईआं ।
छप गिआ सूरज बाहर रहीआ लाली,
होवां मैं सदके जे मुड़ देवें विखाली,
मैं भुल्लगईआं तेरे नाल न गईआं ॥
तेरे इश्क नचाया कर थय्या थय्या ॥

(४९)

भुक्खे दे मूंह पावणां एं, धन्न है तेरी खट्टी ।
धीआं पुत्तां ते लावणां एं, भरें संसार दी चट्टी ॥
रज्जे दे मूंह पावणां एं, "जल्हणा" ज्यूं मज्झ मलीदे त्रट्टी ।
हत्थीं दईए हत्थीं लईए, हत्थीं बन्हीए पल्ले ।
ऐसा कोई न "जल्हणा' जो मोयां नूं घल्ले ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी (५०)

जहि वल्ल वंञा मौत तिते वल्ल, जीवन कोई न दस्से ।
दुनियां जीवण चार दिहाड़े, कौण किसे नाल रुस्से ॥१॥
सर पर लद्दना एस जहानों, रहिणा तां नहीं किसे ।
कहे हुसैन फ़क़ीर साईं दा, मौत वटेंदड़ी रस्से ॥२॥
इत्थे रहिणा नाहीं कोई, बात चलण दी कर वो ।
वड्डे उच्चे महिल्ल उसारिओं, गोर निमाणी तेरा घर वो ॥३॥
जिस देही दा तूं मान करेनैं, ज्यूं परछावें ढर वो ।
छोड़ तिखाई पकड़ हलीमी, भै साहिब थीं डर वो ।
कहे हुसैन हयाती लोड़ैं, तूं मरन थीं अग्गे मर वो ॥४॥

(५१)

फ़रीदा चिंत खटोला वाण दुख, बिरह विछावण लेफ ।
एहु हमारा जीवणा, तू साहिब सच्चे वेख ॥१॥
फ़रीदा जंगल जंगल क्या भँवहि, वण कंडा मोड़ेहि ।
वस्सी रब्ब हिआलियै, जंगल क्या ढूंडेहि ॥२॥
फ़रीदा मैं भोलावा पग्ग दा, मत मैली होइ जाइ ।
गहला रूह न जाणई सिर भी मिट्टी खाइ ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़रीदा गल्लीए चिक्कड़ दूर घर नाल पिआरे नेह ।
चलां ते भिज्जै कंबली, रहां त तुट्टै नेह ॥४॥
भिज्जउ सिज्जउ कंबली अल्लाह वरसउ मेह ।
जाइ मिलां तिन्हां सज्जणां तुट्टउ नाहीं नेह ॥५॥
फ़रीदा ख़ाक न निंदियै, ख़ाक जेड न कोइ ।
जीवँदिआं पैरां तले, मोयां, उप्पर होइ ॥६॥
बिरहा बिरहा आखियै बिरहा तू सुलतान ।
फ़रीदा जित तन बिरह न ऊपजै सो तन जाण मसान ॥७॥
बुड्ढा होआ सेख फ़रीद कंबण लग्गी देह ।
जे सउ वरिआं जीवणा भी तन होसी खेह ॥८॥
फ़रीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टुट्टी नागर लज्ज ।
अज़राईल फरेसता कै घर नाठी अज्ज ॥९॥
फ़रीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टुट्टी नागर लज्ज ।
जो सज्जण भुइ भार थे से क्यों आवहिं अज्ज ॥१०॥
फ़रीदा रोटी मेरी काठ की लावण मेरी भुक्ख ।
जिन्हां ने खाद्धी चोपड़ी घणे सहिणगे दुःख ॥११॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़रीदा तन सुक्का पिंजर थीआ तलियां खूंडहि काग ।
अजै सु रब्ब न बहुड़िओ देख बंदे दे भाग ॥१२॥

(५२)

भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पख रहित पंथ गहि पूरा अवरण एक अधारा ।
वाद विवाद काहू सों नाही माहिं जगत थैं न्यारा ।
सम दृष्टि सूं भाई सहज में आपनि आप विचारा ।
मैं तैं मेरी यहु मत नाहीं निरवैरी निरविकारा ।
पूरण सबै देखि आपा पर निरालम्भ निरधारा ।
काहु के संग मोह न ममता संगी सिरजनहारा ।
मन ही मन सूं समझ स्याना आनंद एक अपारा ।
काम कलपना कदे न कीजे पूरण ब्रह्म पियारा ।
इहि पंथ पहुंचि पार गहि दादू सो तत सहज संभारा ।

राग विहाग महल्ला नौवां (५३)

हरि की गति नहिं कोऊ जानै ।
जोगी जती तपी पचिहारे, अरु बहु लोग स्याने ॥१॥रहाउ ।
छिन महँ राउ रंक को करई, राउ रंक करि डारे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रीते भरे भरे सखनावै, यह ताको बिवहारै ॥१॥
अपनी माया आप पसारी, आपहि देखन हारा।
नाना रूप धरे बहु रंगी, सब ते रहै न्यारा ॥२॥
अगनत अपार अलख निरंजन, जिह सब जग भरमायो।
सगल भरम तज नानक प्राणी, चरण ताहि चित लायो॥३॥

राग सोरठ (५४)

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि वैरी सम, यद्यपि परम सनेही।
तज्यौ पिता प्रहलाद, विभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यौ, कंत ब्रज बनितन, भे सब मंगलकारी।
जाते होय सनेह राम तें सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कौन आंखि जो फूटै कहियत बहुत कहाँ लौं॥
तुलसी सो सब भांति मुदित मन पूज्य प्रानते प्यारो।
जाते होय सनेह राम तें, सोई मतो हमारो॥

(५५)

मोरे पिया मिले सत ज्ञानी
ऐसन पिय हम कबहुं न देखा, देखत सुरत लुभानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपन रूप जब चीन्हा बिरहिन, तब पिय के मन मानी ।
कर्म जलाय के काजल कीन्हा, पढ़े प्रेम की बानी ।
जब हंसा चले मान सरोवर, मुक्ति भरे जहां पानी ।
धर्मदास कबीर पिय पाये, मिट गई आवा जानी ।

(५६)

मैंने नाम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा कर अपनायो ।
जनम जनम की पूंजी पाई जग में सभी खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै ।दिन दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरख हरख जस गायो ।

राग प्रभाती (५७)

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे ।
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मंदे ॥१॥
लोगा भरम न भूलहु भाई ॥
ख़ालिक ख़लक २ महँ खालिक,पूर रह्यो सब ठाईं ।रहाउ ।
माटी एक अनेक भांति करि,साजी साजन हारै ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न कछु पोच माटी के भांडे, न कछु पोच कुंभारै ॥२॥
सब महँ सच्चा एको सोई ।
तिसका कीआ सब कछु होई ।
हुकम पछानै सो एको जानै, बंदा कहियै सोई ॥३॥
अल्लाह अलख न जाई लखिआ, गुर गुड़ दीना मीठा ।
कहि कबीर मेरी संका नासी, सर्ब निरंजन डीठा ॥

राग सारंग (५८)

जिहिं तन ना हरि भजन कियो ।
सो तन सूकर स्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ।
जो जगदीस ईस सबहिन को ताहिन चित्त दियो ।
प्रगट जान जदुनारी बिसारयो आसा मद्य पियो ।
चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हे न मिल्यो हियो ।
सूरदास रसना वस अपने टेरन नाम लियो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रार्थना

राग सारंग महल्ला पांचवाँ (५६)

ठाकुर तुम सरणाई आया ।
उतर गयो मेरे मन का संसा, जब ते दरशन पाया ॥रहाउ॥
अन बोलत मेरी बिरथा जानी, अपना नाम जपाया ।
दुख नाठे सुख सहज समाए, अनद अनद गुण गाया॥१॥
बाँह पकरि कढि लीनै अपुने, गृह-अन्धकूप ते माया ।
कह नानक गुर बन्धन काटे, बिछुरत आनि मिलाया ॥२॥

राग सोरठ महल्ला नौवां (६०)

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं ।
अपने सुख सिउ ही जग फांधिओ, को काहू को नाहीं ॥रहाउ
सुख मैं आनि बहुत मिलि बैठत, रहत चहूं दिसि घेरे ।
बिपति परी सबही संग छांडत, कोऊ न आवत नेरे ॥१॥
घर की नारि बहुत हित जासों, सदा रहत संग लागी ।
जब ही हंस तजी इह काया, प्रेत प्रेत कहि भागी ॥२॥
इह बिधि को ब्योहार बन्यो है, जासों नेह लगायो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतबार नानक बिन हरि जी, कोऊ काम न आयो ॥३॥

(६१)

कहा करौं बैकुंठहि जाय।
जहँ नहिं नँद जहांनहीं जसोदा जहँनहिं गोपी ग्वाल न गाय
जहँ नहिं जल जमुना को निरमल और नहीं कदमनकी छाय
परमानंद प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रजरज तजि मेरि जाय बलाय

(६२)

ब्रज के लता पता मोहिं कीजै।
गोपी-पद-पंकज-पावन की रज जामैं सिर दीजै ।
आवत जात कुंज की गलियन रूप-सुधा नित पीजै।
श्री राधे राधे मुख, यह बर मुँह माँग्यो हरि दीजै ।

(६३)

मानुष हौंतो वही रसखानि,बसौं मिलि गोकुलगामके ग्वारन
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो,चरौं नित नंद की धेनु मंझारन
पाहन हौं तो वही गिरि को,जु कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन
जो खग हौं तो बसेरो करौं नित,कालिंदी कूल कदंबके डारन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देश (६४)

अब विलंब जनि करो लाडली, कृपादृष्टि टुक हेरो ।
जमुना पुलिन गलिन गहबर की, बिचरूँ साँझ सवेरो ।
निशिदिन निरखों जुगल माधुरी, रसिकन ते भट भेरो ।
ललित किशोरी तन मन अकुलत श्रीबन चहत बसेरो ।

(६५)

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करै ।
गरीब निवाज गुसईआं मेर, माथे छत्र धरै ॥ रहाउ ॥
जाकी छोत जगत कउ लागै ता पर तुही ढरै ।
नीचह ऊच करै मेरो गोबिंद काहू ते न डरै ॥ १ ॥
नामदेव कबीर तिलोचन सधना सैन तरै ।
कहि रविदास सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥

(६६)

मेरो मन हरि हठ न तजै ।
निस दिन नाथ देउं सिख बहु बिधि करत सुभाव निजै ।
ज्यों जुवती अनु भवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै ।
है अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहि भजै ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोलुप भ्रमत गृह पसु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुं न मूढ़ लजै।
हौं हारयो करि जतन बिबिध विधि अतिसय प्रबल अजै।
तुलसीदास बस होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै।

(६७)

प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।
इक नदिया इक नार कहावत मैले ही नीर भरो।
जब दोनों मिलि एक बरन भये सुरसरि नाम परो।
इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो।
पारस गुन अवगुन नहीं चितवै कंचन करत खरो।
यह माया भ्रम जाल कहावै सूरदास सगरो।
अब की बार मोहिं पार उतारो नहीं प्रन जात टरो।

(६८)

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति सांवरि सूरति नैना बने बिसाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधर सुधारस मुरली राजित उर बैजंती माल ।
छुद्र-घंटिका कटी तट सोभित नूपुर सब्द रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगत वछल गोपाल ।

राग गोंड महल्ला चौथा (६६)

हरि दरसन कउ मेरा मन बहु तपते ज्यू त्रिखावंत बिनु नीर ।
मेरे मन प्रेम लागो हरि तीर ।
हमरी वेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥रहाउ॥
मेरे हरि प्रीतम की बात सुनावै सो भाई सो मेरा वीर ॥२॥
मिल मिल सखी गुण कहु मेरे प्रभु के ले सतगुरुकी मतिधीर
जन नानककी हरि आस पुजावहु हरिदरसन सांतिसरीर॥४॥

राग बिलावल महल्ला पांचवां (७०)

ऊच अपार बेअन्त स्वामी, कउण जाणै गुण तेरे ।
गावत उधरहि सुणते उधरहि, बिनसहि पाप घनेरे ॥
पसू परेत मुगध कउ तारे, पाहन पार उतारै ।
नानक दास सदा सरणाई, सदा सदा बलिहारै ।

(७१)

ऐसो कब करिहो मन मेरौ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर करुवा हरवा गुंजन को, कुंजन माहिं बसेरौ।
ब्रज बासिन के टूक भूठ अरु घर घर छांछ महेरा।
भूँख लगै तब मांगि खाइहौं, गिनौं न सांझ सवेरौ।
इतनी आस "व्यास" की पूजिये, मेरे गाम न खेरौ।

राग झिंझोटी (७२)

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहिं बिसरायो ऐसो निमक हरामी।
भर भर उदर विषयन को धावौं जैसे शूकर गामी।
हरि जन छांड हरि विमुखन की निसिदिन करत गुलामी।
पापी कौन बड़ो है मो ते सब पतितन में नामी।
सूर पतित की ठौर कहां है सुनिये श्रीपति स्वामी।

(७३)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
दूसरो न कोई साधो सकल लोक जोई।
भाई छोड्यो बन्धु छोड्यो छोड्यो सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ।
दधि मथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई ।
राणा विषको प्याला भेज्यो पीय मगन होई ।
अब तौ बात फैल पड़ी जाणे सब कोई ।
मीरा राम लगन लागी होणी होय सो होई ।

(७४)

अब कै राखि लेहु गोपाल ।
दसहु दिसा ते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल ।
पटकत बाँस कास कुस चटकत लटकत ताल तमाल ।
उचटत अति अंगार फुटत झर झपटत लपट कराल ।
धूम धुंध बाढ़ी घर अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल ।
हरिन बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ।
जनि जिय डरहु नैन मूँदहु सब हँसि बोले गोपाल ।
सूर अनल सब बदन समानी अभय करे ब्रजबाल ।

(७५)

कहां हो मेरे कृष्ण कन्हैया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति आरत ह्वै आजु पुकारत पुनि पुनि भारत मैया ॥
देखहु आय रँभाय रही हैं, हाय तुम्हारी गैया।
जानत हू न दया उर आनत, तुम बिन कौन बचैया ॥
आवहु फेरि गुपाल ग्वाल बनि, गौअन के चरवैया।
लाखन लाल मरत हैं निशिदिन दूध बिना घी दैया॥
डोलति है मँझधार भँवर में, जर्जर मेरी नैया।
कोई कर्णधार कहुँ नाहीं, तुम ही एक खिवैया॥
वह ब्रज, वही कूल कालिन्दी, वही समय है भैया।
मुरली लै विचरहु बन बन में, लेउँ तुम्हारी बलैया॥

(७६)

आओ मेरे झूठन के सरताज।
छल के रूप कपट की मूरत, मिथ्यावाद जहाज।
क्यों परतिज्ञा करी रह्यो, जो ऐसो उलटो काज।
पहले तो अपनाइ न आवति तजिबे में अब लाज।

(७७)

अब नए रूप में ऐ, बंसरी वाले आजा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने हाथों में गदा, चक्र संभाले आजा।
छोड़ कर मोर मुकुट, खोद लगा कर सिर पर।
तरकशो तीरो कमाँ, पुश्त पै डाले आजा।
दौर दौरा है तशद्दुद का जहां में हरसू।
खञ्जरो तेगो तबर, तू भी उठाले आजा।
तोड़दे पाप के शिशुपाल की गर्दन आकर।
जुल्म के कंस का फिर, सीस उड़ाले आजा।
कांप उठता था जिसे सुनके जिगर दुश्मन का।
आज फिर हिन्द में वह शंख बजाले आजा।
खुश्क टुकड़ा भी शरीफ़ों को नहीं मिलता है।
भूखे मरते हैं तेरे नाज़ के पाले आजा।
ज़िल्लतो आफ़तो आज़ारे सितम से डर कर।
पी ना लें भगत तेरे ज़हिर प्याले आजा॥
गाएं मक़तल में तुझे तकती हैं गर्दन डाले।
सहमे बैठे हैं तेरे गोप ग्वाले आजा॥
धर्म की डूबती किश्ती को किनारे पै लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी मरती हुई जाति को बचाले आजा ॥
हिम्मतें हार के बैठे हैं मिसाले अर्जुन।
फिर से गीता का हमें गीत सुनाले आजा ॥
धर्म पर जान गंवाने की दिलादे जुर्रत।
राह कुर्बानियों की हम को दिखाले आजा ॥
कृष्ण द्वारों पै तेरे होने लगे हैं हमले।
और खतरे में हैं शिव जी के शिवाले आजा ॥
सख़्त आफ़त में तेरे धर्म्म के अनुयायी हैं।
पड़ गए हैं उन्हें जी जान के लाले आजा ॥
कौम की देवियों की लाज बचाने को "फ़लक"।
हाथ में अपने सुदर्शन को सँभाले आजा ॥

राग विहाग (७८)

कहां करुनानिधि केशव सोए।
जागत नेकु न यदपि बहुत विधि भारतवासी रोए ॥
इक दिन वह हो जब तुम छिन नहिं भारत हित विसराए
इत के पसु गज कौं आरत लखि आतुर प्यादे धाए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक इक दीन हीन नर के हित तुम दुख सुनि अकुलाई ।
अपनी संपत्ति जानि इनहिं तुम रह्यौ तुरंतहिं धाई ।
प्रलय काल सम जौन सुदरसन असुरन प्रान संहारी ।
ताकी धार भई अब कुंठित हमरी बेर मुरारी ।
दुष्ट जवन बर बर तुव संतति घास साग सम काटैं ।
एक एक दिन सहस सहस नर सीस काटि भुव पाटैं ।
ह्वै अनाथ आरत कुल-विधवा विलपहिं दीन दुखारी ।
बल करि दासी तिनहिं बनावहिं तुम नहिं लजत खरारी ।
कहाँ गये सब शास्त्र कही जिन भारी महिमा गाई ।
भक्त वछल करुणानिधि तुम कहँ गायो बहुत बनाई ।
हाय सुनत नहिं निठुर भये क्यों परम दयाल कहाई ।
सब विधि बूड़त लखि निज देसहिं लेहु न अबहुँ बचाई

आसा महल्ला पहिला (७६)

खुरासान खसमाना कीआ, हिन्दुस्तान डराया ।
आपै दोसु न देई करता, जमु करि मुगल चढ़ाया ॥
एती मार पई कुरलाने, तैं की दर्द न आया ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करता तू सभना का सोई। जे सकता सकते कउ मारे।
ता मन रोसु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

(८०)

तुम बिनु एती को करै, कृपा जु मेरे नाथ ।
माहिं अकेलो जानि कै, दुख राख्यो है साथ ॥

राग सोरठ (८१)

ऐसो को उदार जगमाहीं ।
बिन सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।
जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावनु मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध शवरी को प्रभु न बहुत जिय जानी ।
जो संपति दश शीश अरप कर रावण शिव सों लीनी ।
सो संपदा विभीषण को अति सकुच सहित हरि दीनी ।
तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहत मन मेरो ।
तौ भजराम काम सब पूरण करै कृपानिधि तेरो ॥

(८२)

अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल ।
काम क्रोध को पहिरि चोलना कण्ठ विषय की माल ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महा मोह के नूपुर बाजत निंदा सबद रसाल ।
भरम भरयो मन भयो पखावज चलत कुसंगति चाल ।
तृष्णा नाच करत घट भीतर नाना विधि दै ताल ।
माया को कटि फेंटा बान्धे लोभ तिलक दै भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल ।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल ।

राग सोरठ पा० १० (८३)

प्रभु जू तो कहँ लाज हमारी !
नील कण्ठ नर हरि नारायण, नील वसन बनवारी ॥रहाउ॥
परम पुरुष परमेश्वर स्वामी, पावन पउन अहारी ।
माधव महा जोति मध मरदन, मान मुकुन्द मुरारी ॥१॥
निर विकार निरजुर निद्रा बिनु, निरविख नरक निवारी ।
कृपासिन्धु काल त्रै दरसी, कुकृत प्रनासन कारी ॥ २ ॥
धनुरबान धृत मान धराधर, अन विकार असि धारी ।
हौं मति मंद चरन सरनागति, कर गहि लेहु उबारी ॥३॥१५

राग धनाश्री (८४)

लाज मेरी राखो श्याम हरि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीनी कठिन दुशासन मोसे गह केशों पकरी।
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी।
पांचों पांडव सब बल हारे तिनसों कुछ न सरी!
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय तिन सब मौन धरी।
अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी।
सबन प्रवाह किये करुणानिधि सैना हार परी।
सूरस्याम जब सिंह सरनाई स्यालों की काहि डरी।

राग धनाश्री (८५)

मेरी सुध लीजो श्री नंद कुमार!
अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार।
अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार।
शोभन जन की तारन विरियां लाई एती बार।

राग कान्हरा (८६)

बड़ी है राम नाम की ओट।
शरण गए प्रभु काढ़ि देत नहिं करत कृपा के कोट।
बैठत सभा सबै हरि जू की कौन बड़ो को छोट।
सूरदास पारस के परसे मिटत लोह के खोट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८७)

सुनु दिलजानी साडे दिल दी कहानी,
तांड़े दस्तही बिकानी बदनामी हूं सहूंगी मैं ।
देव पूजा ठानी औ निमाज हूं भुलानी,
तजे कलमा कुरान थाड़े गुनन गहूंगी मैं।
स्यामला सिलोना सिरताज सिर कुल्ला दिये,
ताँडे नेह दाग में निदाग हो दहूंगी मैं।
नंद के कुमार कुरबान तांडी सूरत पै,
तांडे नाल प्यारे हिन्दुवानी हो रहूंगी मैं ॥१॥
छैल जो छबीला, सब रँग में रंगीला,
बड़ा चित्त का अड़ीला कहूं देवतों से न्यारा है ।
माल गलै सोहै नाक मोती सेत सोहै, कान–
मोहैं मन कुण्डल, मुकुट सीस धारा है ।
दुष्ट जन मारे संत जन रखवारे 'ताज',
चित्तहितवारे प्रेम प्रीत करवारा है ।
नंद का दुलारा जिस कंस को पछारा,
वह वृन्दावन वारा कृष्ण साहेब हमारा है॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

द्वितीय-भाग

श्री कृष्ण-लीला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जन्म और बाललीला

राग पीलो (८८)

आज श्री गोकुल में बजत बधावरा री ।
जसुमति नंद लाल पायो कंस राज काल पायो,
गोपन ने ग्वाल पायो बन को शृङ्गार री ॥
गौअन गोपाल पायो याचकन भाग पायो,
सखियन सुहाग पायो पियावर सांवरा री ॥
देवन ने प्राण पायो गुणियन ने गान पायो,
भक्तन भगवान् पायो सूर सुखदावरारी ॥

रांग रामकली (८९)

हौं इक नई बात सुन आई ।
महरि जसोदा ढोटा जायो घर घर बजत बधाई ।
द्वारे भीर गोप गोपिन की महिमा वरणि न जाई ।
अति आनंद होत गोकुल में रतन भूमि निधि छाई ।
नाचत तरुन बृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई ।
सूरदास स्वामी सुख सागर सुन्दर स्याम कन्हाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६०)

देखो री यह कैसा बालक रानी जसुमति जाया है ।
सुंदर बदन कमल-दल लोचन देखत चन्द्र लजाया है ।
पूरन ब्रह्म अलख अविनासी प्रगटि नन्द घर आया है ।
परमानन्द कृष्ण मन मोहन चरन कमल चित लाया है ।

राग धनाश्री (६१)

जसोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै ।
मेरे लाल को आउ निदरिया काहे न आनि सुवावै ।
तू काहे न वेगिसी आवै तोको कान्ह बुलावै ।
कबहूं पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहूं अधर फरकावै ।
सोवन जानि मौन ह्वै ह्वै रही कर करि सैन बतावै ।
इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ सो नँद भामिनी पावै ।

राग भैरव (६२)

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ।
उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई।
उठो मेरे आनँद कंद किरण चंद मंद मंद,
प्रगट्यो आकास भानु कमलन सुखदाई।
सिंगी सब पुरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु,
उठो लाल तजो सेज सुन्दर बर राई।
मुख ते पट दूर कियो जसुदा को दर्स दियो,
माखन दधि मांग लियो विविध रस मिठाई।
जेंवत दोऊ राम स्याम सकल मंगल गुण निधान,
थार में कुछ जूठ रही सो मानवदास पाई।

राग देस (६३)

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बानी सिर सुंदर चोटी
देखोरी काग के भाग भले हैं, हाथसों लै गयो माखन रोटी
खात पियत कूदत भये अंगना पाइन पाइन पर्त कछोटी
सूरदास प्रभु या छबि निरखत वार डारोंसिर रविससि कोटि

राग धनाश्री (६४)

चलत देखि जसुमति सुख पावै।
ठुमुक ठुमुक धरनी धर रेंगत जननी देखि दिखावै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देहरी लौं चलि जात बहुरि फिर फिरि इत हीं को आवै ।
गिरि गिरि परत बनत नहिं नांघत सुर मुनि सोच करावै ॥
कोटि ब्रह्माण्ड करत छिन भीतर हरत विलम्ब न लावै ।
ताको लिए नन्द की रानी नाना रूप खिलावै ॥
तब जसुमति कर टेकि स्याम को क्रम क्रम कै उतरावै ।
सूरदास प्रभु देखि २ सुर नर मुनि मन बुद्धि भुलावै ॥

राग धनाश्री (६५)

कजरी को पय पिअहु लाल तेरी चोटी बढ़ै ।
सब लरिकन में सुन सुन्दर सुत तो श्री अधिक चढ़ै ।
जैसे देखि और ब्रज बालक त्यों बल वैस बढ़ै ।
कंस केशि बक वैरिन के उर अनुदिन अनल उठै ।
यह सुनिकै हरि पीवन लागे त्यों त्यों लियो लटै ।
अचवन पै तातो जब लायो रोवत जीभ उठै ।
पुनि पीवत ही कच टक टोवे झूठे जननि रढै ।
सूर निरखि मुख हँसत यशोदा सो सुख उर न कढै ॥

राग रामकली (६६)

जसोदा कबहिं बढ़ैगी चोटी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किति बार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहती बल की बेनी ज्यौं ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हावत ओछत नागिनी सी भ्वै लोटी।
काचो दूध पियावत पचि पचि देत न माखन रोटी।
सूर स्याम चिर जीवो दोऊ हरि हलधर की जोटी।

राग झिंझोटी (६७)

चन्द खिलौना लै हौं मैया मेरी चन्द खिलौना लैहौं।
धौरी को पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुथैहौं।
मोतिन माल न धरि हौं उर पर झंगुली कंठ न लैहौं।
जै हौं लोट अबै धरनीं पै तेरी गोद न ऐहौं।
लाल कहै हौं नंद बाबा को तेरो सुत न कहैहौं।
कान लाय कछु कहत जसोदा दाउहिं नाहिं सुनैहौं।
चन्दाहू ते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहिया ब्यैहौं।
तेरी सौं सुन मैया मेरी अबहीं ब्याहन जैहौं।
सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं।

राग कान्हरा (६८)

बार बार जसुमति सुत बोधति आउ चंद तोहिं लाल बुलावै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खैहै, तोहिं खिलावै ।
हाथहि पर तोहिं लीने खेलै, नहिं धरनी बैठावै ।
जल भाजन कर लै जु उठावति याही में तू तनु धरि आवै ।
जलपुट आनि धरनिपर राख्योगहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै
सूरदास प्रभु हँसि मुसुकाने बार बार दोऊ कर नावै ।

राग सारंग (६६)

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो ।
मो सों कहत मोल को लीनो, तू जसुमति कब जायो !
कहा कहौं यहि रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात !
पुनि पुनि कहत कौन है माता, कौन तिहारो तात ।
गोरे नन्द जसोदा गोरी, तुव कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देत बलवीर ।
तू मोही को मारन सीखी, दाऊहिं कबहुं न खीझै ।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति मन अति रीझै ।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मो गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग रामकली (१००)

खेलन अब मेरी जात बलैया।
जबहिं मोहिं देखत लरिकन संग,तबहिं खिझत बल भैया।
मो सों कहत तात वसुदेव को, देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दै वसुदेव को, करि करि जतन बढ़ैया।
अब बावा कहि कहत नंद सों, जसुमति को कहै मैया।
ऐसी ही कहि सब मोहिं खिझावत,तब उठि चलै खिसैया।
पाछे नंद सुनत हैं ठाढ़े, हँसत हँसत उर लैया।
सूर नंद बलरामहिं धिरयो सुनि मन हरष कन्हैया।

राग सारंग (१०१)

नंद बुलावत हैं गोपाल।
आवो बेगि बलैया लैहौं मोहन स्याम तमाल।
परस्यो थार धरयो मग जोवत क्यों न चलो तत्काल।
हौं वारी इन प्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल।
छांड देहु तुम लाल लटपटी यह गति मंद मराल।
सो राजा जो पहिले पहुँचे सूर सो भवन उताल।
जो जैहै बलराम अगमने तौ हँसि हैं सब ग्वाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग कल्याण (१०२)

अपने लाल को जिमावत मैया ।
कर कर कौर मुखारविंद में मधुमेवा पकवान मिठैया ।
ब्यंजन खाटे मीठे खारी अति ही स्वाद बन्यो अधिकैया ।
चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लाल को ब्यारु करावत लेत बलैया

मोहन जानी तिहारी बात ।
ब्यारू परघर कर आवत तू यहां कछू नहीं खात ।
यही स्वभाव तिहारो जनम को चोरी बिन न अघात ।
नंद दास कहत नंदरानी प्रेम लपेटी बात ।

राग बिलावल (१०३)

मैया मोहिं बड़ो कर लै री ।
दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगौं तब दै री ।
कछू हौंस राखे जिनि मेरी जोई मोहिं रुचै री ।
होउँ सबल सबहिन में जैसे सदा रहौं निरभै री ।
सूर कंस गहि केस पछारौं करि हौं मथुरा जै री ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माखन चोरी लीला

राग गौरी (१०४)

मैया री मोहि माखन भावै।
जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहिं रुचि आवै।
ब्रज जुवती इक पाछे ठाढी सुनत स्याम की बात।
मन में कहत कबहूं अपने घर देखों माखन खात।
बैठें जाय मथनिया के ढिग तब मैं रहौं छिपानी।
सूरदास प्रभु अंतर्जामी ग्वालिन-मन की जानी।

राग गौरी (१०५)

गये स्याम तिहिं ग्वालिन के घर।
देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर।
हरि आवत गोपी जब जान्यो आपन रही छिपाई।
सूने सदन मथनियां के ढिग बैठ गये अर्गाई।
माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान।
चितहि रहे मणि खंभ छाँहि तन तासों करैं स्यान।
प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग।
आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो चाहो सब दे हौं कमोरी अति मीठो कत डारत ।
तुम्हैं देख मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ।
सुन सुन बात स्याम के मुख की उमँग हँसी सुकुमारी ।
सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भाजि चले मुरारी ।

(१०६)

खेलन के मिस पै हरि जी, घर भीतर पैठि कै माखन खावैं ।
नैनन सैन तबै करिकै, सब गोपन को तब ही सु खिलावैं ।
बाकी बच्यो अपने कर लैकर, बानर के मुख भीतर पावैं ।
स्याम कहै तिह की उपमा इह कै बिध गोपिन कान्ह खिझावैं

राग रामकली (१०७)

माखन चोर री हौं पायो ।
जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिनन ही खायो ।
श्री मुख ते उघरी द्वै दतियाँ तब हँसि कंठ लगायो ।
परमानंद प्रभु प्रान जीवन धन वेद विमल जस गायो ।

(१०८)

कोउ कहै मेरे आगे नेक तू नाच लाला,
लोन मिली छाछ दूंगी आछी सी धुंगार कै ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भोर भयो वाके गयो वांसों मेरे वैर भयो,
धींगीसी गुजरिया ने आन लियो धाय कै।
खिरका सब तोर डारे बासन सब फोर डारे,
दूध ढरकाय दियो बन्दरा बुलाय कै।
नन्दरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी,
सूरस्याम उलँभा लियो सीसपै चढाय कै।

(१०९)

खाइ गयो हरि जी जब माखन, तो गुपिया सबजाइ पुकारी।
बात सुनो पत की पतनी तुम, डार दई दधि की सब खारी॥
कान्ह ही के डर ते हम चोर कै, राखत हैं चढ़ ऊँच अटारी।
ऊखल को धरि कै मनहा पर, खात है लंगर दै करि गारी॥

राग देवगंधार (११०)

जो तुम सुनो जसोदा गोरी।
नंद नँदन मेरे मंदिर में आज करत हैं चोरी।
हौं भई आन अचानक ठाढी कह्यो भवन में को री।
रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनोभई मति भोरी।
मोहिं भयो माखन पछितावो रीती देख कमोरी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब गहि बाहिं कुलाहल कीनो तब गह चरण निहोरी ।
लागे लेन नयन जल भर भर मैं हरि कान न तोरी ।
सूरदास प्रभु देत निसा दिन ऐसे अलप सलोरी ।

(१११)

जसोदा कहा कहौं हौं बात ।
तुम्हरे सुत के करतब मोपै कहत कहे नहिं जात ।
भाजन फोरि ढोरि सब गोरस लै माखन दधि खात ।
जो बरजौं तौ आँखि दिखावै रंचहु नाहिं सकात ।
और अटपटी कहँ लौं बरनौं छुवत पानि सों गात ।
दास चतुर भुज गिरिधर गुन हौं कहति कहति सकुचात ।

(११२)

बात सुनी जब गोपिन की, जसुदा तबही मनमाहि खिझी है
आइ गयो हरि जी तब ही, पिख पुत्रहिकौ मनमाहि रिझी है
बोल उठे नँदलाल तबै, इह ग्वारि खिझावन मोहि गिझी है
मात कहा दधि दोसु लगावत, मार बिना इहनाहि सिझी है

राग रामकली (११३)

माखन खात पराये घर को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित प्रति सहस मथानी मथिये,
मेघ शब्द दधि माठ घमर को।
कितने अहीर जीयत हैं मेरे गृह,
दधि लै मथ बेंचत मही महर को।
नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति,
बड़ो भाग्य है नंद महर को।
ताके पूत कहावत हौ जी,
चोरी करत उघारत फर को।
सूरस्याम कितनो तुम खैहौ,
दधि माखन मेरे जहाँ तहाँ ढरको।

(११४)

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे मधुबन मोहिं पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो सांझ परी घर आयो।
मैं बालक बहियन को छोटो छींको किस विध पायो।
ग्वाल बाल सब वैर पड़े हैं बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी इनके कहे पतियायो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिय तेरे कछु भेद उपज है जान परायो जायो ।
यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि जसोदा ले सुत कंठ लगायो ।

(११५)

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अछेद अभेद सुबेद बतावैं
जाहि हिये लखि आनँद ह्वै जड़ मूढ़ हिये रसखानि कहावैं
ताही अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं

राग सारंग (११६)

ब्रज बासिन पटतर कोउ नाहीं ।
ब्रह्मा सनक सिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लै लै खाहीं
धन्य नंद धन जननी जसोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई
धन्य धन्य वृन्दावन के तरु जहँ बिहरत प्रभु त्रिभुवन राई
हलधर कहत छाक जेंवत संग मीठो लगत सराहत जाई
सूरदास प्रभु विश्वंभर होय ग्वालन कौर अघाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रथम सनेह-लीला

(अर्थात् राधा कृष्ण की प्रथम भेंट)

राग गौरी (११७)

बूझत स्याम कौन तू गोरी !
कहां रहत काकी है बेटी देखी नहीं कभूं ब्रज खोरी ।
काहे को हम ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी ।
सुनत रहत स्रवनन नंद ढोटा करत रहत माखन की चोरी ।
तुमरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिल जोरी ।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमणि बातन भुरी राधिका भोरी ।

राग धनाश्री (११८)

प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो ।
सैन सैन कीनी सब बातैं गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ।
खेलन कबहुँ हमारे आवहु नंदसदन ब्रज गाँउ ।
द्वारे आइ टेरि मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाँउ ।
जो कहिये घरि दूर तुम्हारो बोलत सुनिए टेर ।
तुमहि सौंह वृषभानु बबा की प्रात सांझ एक फेर ।
सूधी निपट देखियत तुम कौं ताते करियत गाथ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर स्याम नागर उत नागरि राधा दोउ मिलि गाथ।

राग आसावरी (११६)

खेलन के मिस कुंवरि राधिका नंद महर घर आई हो।
सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुंवर कन्हाई हो।
सुनत स्याम कोकिला धुनि बाणी निकसे अति अतुराई हो।
माता सों कछु कलहिं करत हरि डारयो रिस बिसराई हो।
मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो।
जमुना तीर काल्ह मैं भूल्यो बांह पकर मेरी लाई हो।
अब तो यहां तोहिं सकुचित हैं मैं दे सौंह बुलाई हो।
सूरस्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो।

राग गौरी (१२०)

कहत कान्ह जननी समुझाई।
जहँ तहँ डारे रहत खिलौना राधा जनि लैजाइ चुराई।
साँझ सवारे आवन लागी चितै रहाति मुरली तन आई।
इनही में मेरो प्राण बसतु हैं तेरे भाए नेकु न माई।
राखि छपाइ कहयो करि मेरो बलदाऊ को जनि पतिआई।
सूरदास यह कहति जसोदा को लैहै मोहि लगै बलाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग काफी (१२१)

मैया मोहिं ऐसी दुलहन भावै ।

जैसी वह काहू की ढटोनियां रुनक झुनक चालि आवै ।
कर कर पाक रसाल अपने कर मोहिं परोस जिमावै ।
कर अंचर पट ओट बबाते ठाढी ब्यार ढुरावै ।
मोहिं उठाय गोद बैठारै कर मनुहार मनावै ।
अहो मेरे लाल कहो बाबाते तेरो ब्याह करावै ।
नन्दराय नन्दरानी दोउ मिल मोद समुद्र बढ़ावै ।
परमानन्ददास को ठाकुर बेद बिमल जस गावै ।

राग धनाश्री (१२२)

नन्द गये खरिकै हरि लीन्हे ।

देखि तहाँ राधिका ठाढ़ी स्याम बुलाइ लई तहं चीन्हे ।
महर कह्यो खेलो तुम दोऊ दूरि कहूं जानि जैहो ।
गनती करत ग्वाल गैयन की मुहिं नियरे तुम रहियो ।
सुनु बेटी बृषभानु महर की कान्हहि लिये खिलाई ।
सूरस्याम को देखै रहिहौ मारै जानि कोउ गाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१२३)

राधिका माधवै एक ही सेज पै धाय लै सोई सुभाय सलोने
पारै महा कवि कान्ह के मध्य में राधे कह्यो यह बात न होने
सांवरी होउंगी सांवरे रंग में बावरी तोहि सिखाई है कोने
सोने को रंग कसौटी लगै पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोने

राग धनाश्री (१२४)

बातन में लइ राधा लाइ।
चलहु जैये विपिन वृन्दा कहत स्याम बुझाइ।
जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ।
नेकहू नहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ।
तुव पराशि तन ताप मेटौं काम द्वंद्व बहाइ।
चतुर नागरि हँसि रही सुनि चन्द्र वदन नवाइ।
मदन मोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ।
स्याम स्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहै गाइ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गाय चरावन-लीला

राग रामकली(१२५)

मैया मैं गाय चरावन जैहौं ।
तू कह नंद महर बाबा सों बड़ो भयो न डरैहौं ।
श्रीदामा आदि सखा सब अपने और दाऊ संग लैहौं ।
बंसीबट की सीतल छैयां खेलत अति सुख पैहौं ।
देहु भात कामर भर लै हौं भूख लगे तब खैहौं ।
परमानन्द प्रभु तृषा लगे जब जमुना जलहिं अचैहौं ।

राग भैरव (१२६)

विलम्भ तज माखन देरी माई ।
बछेर हमरे दूर निकस गए दधि मथती देर लाई ।
जो न देय तोरे बछरे न चारूं हौं नहिं विपिन को जाई ।
यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ।
इतनी कह हरि अति ही रिसाने लोटत भूमि कन्हाई ।
धूर सहित सब अंग लपटाने मैया लेत उठाई ।
गोदी बीच बिठाय जसोदा मुख चूम दूध पिलाई ।
धन धन भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरकाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग हमीर कल्याण (१२७)

ठुमक गति चलत अनोखी चाल ।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर मेहँदी भाल ।
आगे गैयां पाछे गैयां संग सोहैं ब्रज बाल ।
विष्णुदास मुरलीधर की छवि देखत भई निहाल ।

राग जंगला सिंध (१२८)

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां ।
नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दश गैयांअधिकैयां
ना हम चाकर नंद बाबाके न तुम हमरे नाथ गुसैयां ।
आपन तो नींद को सातो हम चारत तेरी बन बन गैयां ।
कबहूं जाय कदम चढ़ बैठे हम गैयन सँग लगत पैठयां ।
मानी हार सूर के प्रभु ने अब जाऊं मोहिं नंद की दुहैयां ।

राग गौरी (१२९)

लटकत चलत जुवती सुखदानी ।
संध्या समय सखा मंडल में सोभित तनु गोरज लपटानी
मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुवानी
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आए बनते ले आरती करत नंदरानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग गौरी (१३०)

मैया मेरी कमरी चोर लई ।
मैं बन जात चरावन गैयां, सूनी देख गही ।
एक कहे कान्हा तेरी कामर, जमुना में जात बही ।
एक कहे स्यामा तेरी कामर सुरभी खाय गई ।
एक कहत नाचो मेरे आगे लै दैहौं और नई ।
सूरदास जसुमति के आगे अँसुवन डार दई ।

(१३१)

तुम नीके दुहि जानत गैया ।
चलिए कुँवर रसिक-मन-मोहन लगों तिहारे पैया ।
तुमहि जानि करि कनक दोहिनी घर ते पठई मैया ।
निकटहि है यह खरिक हमारो नागर लेहुँ बलैया ।
देखियत परम सुदेस लरिकई चित चुँहट्यो सुँदरैया ।
कुँभनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोबरधन रैया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कालीय दमन-लीला

राग गौरी (१३२)

ब्रजबासी यह सुनि सब आए ।
कहां परयो गिरि कुँवर कन्हाई, बालक लै सो ठौर दिखाए
सूनो गोकुल कियो स्याम तुम, यह कहि लोग उठे सब रोइ
नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत बदन नीर लै धोइ
ब्रजबासी तब कहत नंद सों, मरन भयो सब ही को आइ
सूरस्याम बिनु को बसि है ब्रज धृग जीवन तिहुं भुवन कहाइ

राग गौरी (१३३)

महरि पुकारति कुँवर कन्हाई ।
माखन धरयो तिहारेहि कारण आजु कहाँ अवसेर लगाइ
अति कोमल तुम्हरे मुख लायक तुम जेंवहु मेरे नैन जुडाइ
धौरी दूध औटि है राख्यो अपने कर दुहि गए बनाइ
बरजति ग्वारि जसोदा को सब यह कहि कहि नीके जदुराइ
सूरस्याम सुत बिरह मात के यह वियोग बरन्यो नहिं जाइ

राग कान्हरा (१३४)

जबहिं स्याम तन अति विस्तारयो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण २ अहिराज पुकारयो ।
यह बाणी सुनतहिं करुणामय तबहिं गए सकुचाए ।
यही वचन सुन द्रुपद सुता के दीनों वसन बढाए ।
यही वचन गजराज सुनायो गरुड़ छाँड तहँ धाए ।
यही वचन सुन लाक्षागृह में पाण्डव जरत बचाए ।
यह वाणी सहि जात न प्रभु पै ऐसे परम कृपाल ।
सूरदास प्रभु अँग सकोच्यो व्याकुल देख्यो व्याल ।

रूप वर्णन

(१३५)

तैसिय जगाति जोति सीस सीस-फूलन की,
चिलकत तिलक तरुनि तेरे भाल को ।
तैसिय दसन-दुति दमकत केसोराय,
तैसोई लसत लाल कण्ठ कण्ठमाल को ।
तैसिय चमक चारु चिबुक कपोलन की,
झलकत तैसो नाक मोती चलचाल को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हेरे हेरे हँसि नैकु चतुर चपल नैन,
चित चक चौंधे मेरे मदन गोपाल को ।

राग दादरा (१३६)

प्यारी को श्रृंगार करत नंद लाला ।
बार बार में मोती पोए कन बिच्च झलके वाला ।
कलीदार जरी को लहिंगा ऊपर सुर्ख दुसाला ।
पुरुषोत्तम प्रभु रसिक सिरोमणि छबि निरखत ब्रज बाला ।

राग दादरा (१३७)

प्यारी जी तोरे अंग में फूलन की बहार ।
फूलन के बाजूबंद फूलन के गजरे फूलन के सोहैं गलहार
चंपा मरुवा राय चंबेली सब फूलन में गुलाब
चंद्रसखी भज बाल कृष्ण छबि सब गोपियन में गोपाल

राग खेमटा (१३८)

तेरो मुख चन्द्र चकोरी मेरे नयना ।
पल हू न लागे पलक देखे बिन,
भूल गए गत पलहूं लगे ना ।
हरबरात मिलबे को निसि दिन,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

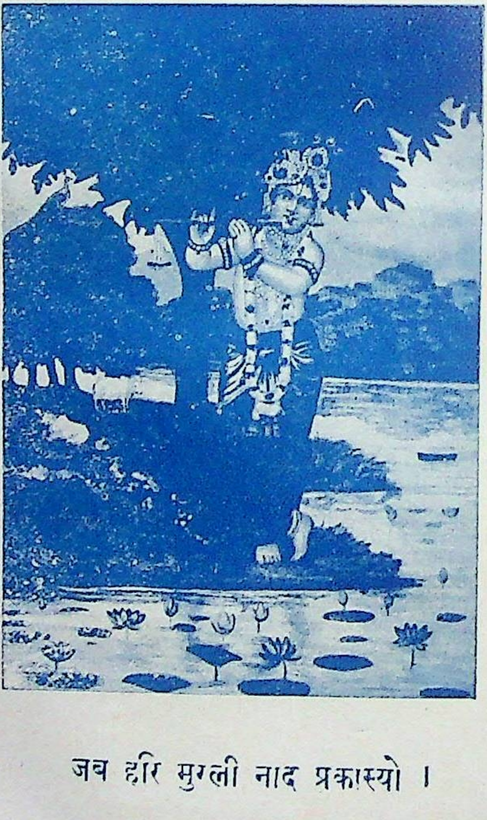

जब हरि मुरली नाद प्रकास्यो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे मिलें मानों कबहूं मिले ना ।
भगवत रसिक रस की यह बातें,
रसिक बिना कोई समझ सके ना ।

राग भैरव (१३९)

छबि अच्छी बनी बनवारी की ।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलकां घूँघर वारी की ।
मृदु मुसुकान आन नयनन की को बरणे गिरिधारी की ।
कृष्णदास जुगुल जोड़ी पर तन मन धन सब वारीकी ।

मुरली लीला

राग सारंग (१४०)

जब हरि मुरली अधर धरत ।
खग मोहे मृग यूथ भुलाने निरखि मदन छबि छरत ।
पशु मोहे सुरभीहु थकीं, तृन दंतहि टेक रहत ।
सुक सनकादि सकल मन मोहे ध्यानिउ ध्यान बहत ।
सूरदास भाग्य हैं तिन के जो या सुखहि लहत ।

राग कल्याण (१४१)

जब हरि मुरली नाद प्रकास्यो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जंगम जड़ स्थावर चर कीने पाहन जलज विकास्यो।
स्वर्ग पताल दसो दिसि पूरन धुन आच्छादित कीनो।
निसि हरि कल्प समान बढ़ाई गोपिन को सुख दीनो।
भरमत भए जीव जल थल के तनु की सुध न सम्हार।
सूरस्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार।

(१४२)

कौन ठगोरी भरी हरि आज बजाई है बांसुरिया रस भीनी
तान सुनी जिनही जितही तिनही तिन लाज बिदा करदीनी
घूमे खरी खरी नन्द के बार नवीनी कहा अरु बालप्रवीनी
या ब्रज मण्डल में रसखान सु कौन भटु जु लटू नहीं कीनी

राग देस (१४३)

स्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो।
यह सब जीव जंतु जल थल के नाद स्वाद सुर पोह्यो।
धरती ते गोवर्धन धारयो कोमल प्रान अधार।
अब हरि लटक रहत हैं टेढे तनक मुरलिया भार।
हमें छुडाय अधर रस पीवे करे न रंचक काम।
सूरदास प्रभु निकस कुंज ते चेरी सौत भई आन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग पीलू (१४४)

बंसी वारे तू मेरी गली आजारे।

तेरे बिन देखे कल न परत है टुक मुखड़ा दिखला जा रे।

रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो बंसी की टेर सुना जा रे।

चरणदास कहे सुखदेव पियारे मेरो ही माखन खाजा रे।

राग देस (१४५)

सखी याकी बंसी लीजे चोर।

जिन गोपाल किये अपने बस प्रीति सभन सों तोर।

अधरन को रस लेत मुरलिया हम तरसत निसि भोर।

छिन इक घर भीतर निसि बासर धरत न कबहूं छोर।

कबहूंक कर कबहूँ अधरन पर कबहूँ कटि उर मोर।

ना जानूं कछु मेल मोहनी राखी सब अंग कोर।

सूरदास प्रभु को मन सजनी बंध्यो है नाद की डोर।

राग भूपाली कल्याण (१४६)

री बंसी कौन तप तैं कियो।

रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरन को रस पियो।

स्याम सुंदर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर श्री गोपाल वस भये जगत में जस लियो ।

राग खमाच (१४७)

किन लई देहु बताय मुरलिया राधा ।
प्रान प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुन गाय ।
सप्त सुरन सुर नर मुनि मोहे बंसुरी नेक बजाय ।
यह विनती बलिहार सुनो क्यों ना प्यारीजी होत सहाय

पनघट रोकन लीला

राग पूरवी (१४८)

पनघट रोके रहत कन्हाई ।
जमुना जल कोउ भरन न पावत देखत ही फिरि जाई ।
तबहिं स्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छिपाइ ।
तब ठाढे जे सखा संग के तिन को लियो बुलाई ।
बैठारे ग्वालन को द्रुमतर आपुन फिरि फिरि देखत ।
बडी बार भई कोउ न आई सूरस्याम मन लेखत ।

राग देव गंधार (१४९)

जुवति एक आवति देखी स्याम ।
द्रुम की ओट रहे हरि आपुन जमुना तट गई बाम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल हिलोरि गागरि भरि नागरि जबहीं सीस उठायो ।
घर को चली जाइ ता पाछे सिर ते घट ढरकायो ।
चतुर ग्वालि कर गह्यो स्याम को कनक लकुटिआ पाई ।
औरनि सों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ।
गागरि लै हँसि देत ग्वालि कर रीतो घट नाहिं लैहौं ।
सूरस्याम ह्यां आनि देहु भरि तबहिं लकुट कर दैहौं ।

राग हमीर (१५०)

घट भर दियो स्याम उठाइ ।
नेक तनु की सुधि न ताको चली ब्रज समुहाइ ।
स्याम सुन्दर नयन भीतर रहे आनि समाइ ।
जहाँ जहाँ भरि दृष्टि देखौं तहाँ तहाँ कन्हाइ ।
उतहि ते एक सखि आई कहति कहा भुलाइ ।
सूर अबहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ ।

राग पीलू (१५१)

आली री तू क्यों रही मुरझाय ?
पनिघट गई जमुन जल भरने आई है रोग लगाय ।
केसोकारो चंद्र-उजारो टोना डार गयो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करो उपाय सखी झट मेरो ब्रज-निधि वैद मँगाय ।

(१५२)

छूटी लोक लाज गृह काज मन मोहनी को,
मोहन को भूलि गयो मुरली बजायबो ।
अब रसखानि दिन द्वै मैं बात फैलि जैहै,
सजनी कहाँ लौं चंद हाथन दुरायबो ।
कालिह ही कालिन्दी तीर चितये अचानक ही,
दुहुन की ओर दोऊ मुरि मुसकायबो !
दोऊ परैं पैयां दोऊ लेत हैं बलैयाँ,
उन्हें भूलि गई गैयां इन्हें गागरि उठायबो ।

राग सोरठ (१५३)

छांडो लंगर मोरी बहियां गहो न ।

मैं तो नारि पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ।
जो तुम मेरी बहियां गहतहौ नयन मिलाय मेरेप्राण हरोना
बृन्दाबन की कुंज गली में रीत छोड़ अनरीत करो ना ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित्त टरयो टरोना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग आडा (१५४)

छाँडो मोरी गैल नातो गारी में सुनाऊंगी।
औरों के भूले कहूं मोते जिन अटको, अभी
जसुमति पै पकर लै जाऊंगी।
पहले ही सों अपनी बड़ाई कहा करूं मैं,
देखियो तो कैसे तुम्हें नाच नचाऊंगी।
जो मैं तुम्हें सूधो न बनाउं नारायण तो,
मैं निज बाप की न आज से कहाऊंगी।

राग टोडी (१५५)

गागर न भरन देत तेरो कान्ह माई।
हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई।
घूंघट पट खोल खोल सांवरो कन्हाई।
जसुमती तैं भली बात लाल को सिखाई।
अगर बगर झगरो करत रार तो मचाई।
हौं तो बीर जमुना तीर नीर भरन धाई।
गिरिधर के चरण ऊपर मीरा बलि जाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देस (१५६)

गारी मत दीजो मो गरीबनी को जायो है ।
तेरो जो बिगारयो सो तो मोसों आन कहौ बीर,
मैं तो काहू बात को नहीं तरसायो है ।
दधि की मथनियां भरी अंगना में आन धरी,
तोल तोल लीजो बीर जेतो जाको खायो है ।
सूरदास प्रभु प्यारे नेकहु न हूजे न्यारे ।
कान्हरासा पूत मैंने बडे पुण्य पायो है ।

राग सारंग (१५७)

मैं जानाति हौं ढीठ कन्हैया ।
आवन तौ घर देहु स्याम को जैसी करौं सजैया ।
मो सों करत ढिठाई मोहन मैं वाकी हौं मैया ।
और न काहू को वह मानै कछु सकुचत बल भैया ।
अब जो जाऊँ कहाँ तोहि पावों कासों देइ धरैया ।
सूरस्याम दिन दिन लंगर भयो दूरि करौं लंगरैया ।

राग सारंग (१५८)

तू मोहिं को मारन जानाति ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनके चरित कहा कोउ जानै उनहि कही तू मानति।
कदम तीर ते मोहिं बुलायो गढ़ि गढ़ि बातैं बानति।
मटकत गिरि गागरी सिरते अब ऐसी बुधि ठानति।
फिर चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहिं ताको जानति।
सूर सुतहि देखत ही रिस गई मुख चूमति उर आनति।

गोवर्धन लीला

राग सोरठ (१५६)

प्रथमहि देउ गिरिहि बहाइ।
बज्र घातनि करौं चूरन देउ धरणि मिलाइ।
मेरी इन महिमा न जानी प्रगट देउँ दिखाइ।
जल बरखि ब्रज धोइ डारौं लोग देउं बहाइ।
खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाइ।
बरस दिवस मोंहिं देत पूजा दइ सोउ मिटाइ।
रिस सहित सुरराज लीन्हें प्रबल मेघ बुलाइ।
सूर सुरपति कहत पुनि पुनि परौ ब्रज पर धाइ।

राग मल्हार (१६०)

देखो माई बादर की बरि आई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मदन गोपाल धरयो गिरिवर इन्द्र-ढीठ झर लाई।
जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन बड़ाई।
सेवक कर स्वामी सों सर्वर इन बातन पति जाई।
इन्द-ढीठ बलि खत हमारी देखो अखिल गवाई।
सूरदास तिनको काको डर जिहिं वन सिंह कन्हाई।

राग मल्हार (१६१)

बाम कर टेक्यो ब्रजराज।
गोपी गाइ ग्वाल गो सुत सब,
दुख बिसारयो सुख करत समाज।
आनँद करत सकल गिरिवर तर,
दुख डारयो सब ही विसराइ।
चकृत भए देखत यह लीला,
सबै परत हरि चरणन धाइ।
गिरिवर टेकि रहे बायें कर,
दच्छिण कर लियो सखनि उठाइ।
कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन,
देख्यो कैसो कियो सहाइ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोप बाल नंदादिक जहँ लौं,
नंद सुअन लिए निकट बुलाइ।
सूरदास प्रभु कहत सबनिसों,
तुमहूँ मिलि टेकौ गिरि आइ।

राग मल्हार (१६२)

गिरि जनि गिरे स्याम के करते।
करत बिचार सबै ब्रजवासी भय उपजत अति डर ते।
लै लै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठे हैं तुरते।
यह अति प्रबल स्याम अति कोमल रवकिरवाकि उर परते।
सप्त दिवस कर पर गिरि धारयो बर्षा बरसि हारयो अंबरते।
गोपी ग्वाल नंद सुत राख्यो बरषत मेघ धार जलधर ते।
जमलार्जुन दोउ सुत कुवेर के तेउ उखारे जर ते।
सूरदास प्रभु इन्द्र गवन कियो ब्रज राख्यो है कर ते।

राग सोरठ (१६३)

गिरिवर कैसे लियो उठाई।
कोमल कर चाँपति जसुदा यह कहि लेत बलाई।
महा प्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नेक नहीं हाल्यो नख पर ते मेरो सुत अहँकारी ।
कंचन थार दूध दधि रोचन सजि तोमर लै आई ।
हरषित तिलक करति मुख निरखति भुज भरि कंठ लगाई
रिस करि कै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि बहाई ।
सूरस्याम सों कहति जसोदा गिरिधर बडो कन्हाई ।

दान लीला

राग रामकली (१६४)

नंद नंदन इक बुद्धि उपाई ।
जै जै सखा प्रकृति के जाने ते सब लये बोलाई ।
सुबल सुदाम श्रीदामा मिलि और महर सुतआए ।
जो कछु मंत्र हृदय हरि कीन्हौं ग्वालन प्रगट सुनाए ।
व्रज जुवति नित प्राति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति ।
राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुनी यक भांन्ति ।
कालिंदी तट कालि प्रातही द्रुम चढि रह्यो लुकाइ ।
गोरस लै जबही सब आवैं मारग रोकहु जाइ ।
भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाइ ।
सूरदास प्रभु प्रीति हृदय की सब मन गए जनाइ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग नट नारायणी (१६५)

दधि बेचन चली ब्रजनारि।
सीस धरि धरि माट मटुकी बड़ी सोभा भारि।
निकसि ब्रज के गईं गोंडे हरष भई सुकुमारि।
चलीं गावति कृष्ण के गुण हृदय ध्यान बिचारि।
सबन के मन जो मिलै हरि कोउ न कहति उघारि।
सूर प्रभु घट घट के व्यापी जानि लई बनवारि।

राग दादरा (१६६)

हमारो दान देहु ब्रजनारी।
मदमाती गज गाभिन डोलै तू दधि बेचन हारी।
रूप तोहिं विधना ने दीनो ज्यों चंदा उज्यारी।
मटुकी सीस कटीले नयना मोतिन मांग संवारी।
हाल हमेल गले में राजे अलकें घूंघर वारी।
या ब्रज में जेती सुंदर हैं हम सब देखी भारी।
नारायण तेरी या छबि पै नँद नन्दन बलिहारी।

राग कान्हरा (१६७)

दान दिये बिन जान न पैहो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुम दैहौ ।
तुम सों बहुत लेन है मोको यह लै ताहि सुनावहु ।
चोरी आवति बेंचि जाति सब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु
मांगत छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमको जानत ।
सूरस्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत ।

(१६८)

दानी भये नये मांगत दान हो, जानि है कंस तौ बंधन जैहौ
टूटे छरा बछरादिक गोधन जोधन है सो सबै धन दैहौ
रोकत हो बन में "रसखानि" चलावत हाथ घनो दुख पैहौ
जैहैजो भूषन काहू तियाके तो मोल छलाके लला न बिकै हौ

राग गुर्जरी (१६६)

गिरिवर धरयो आपने घर को ।
ताही के बल दान लेत हो रोक रहत हो हमको ।
अपने ही मुख बड़े कहावत हमहूं जानत तुमको ।
यह जानत पुनि गाय चरावत नित प्रति जात हो बनको ।
मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषनको ।
सूर कांध कमरी हूं जानत हाथ लकुटिया करको ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग बिलावल (१७०)

यह कमरी कमरी कर जानत।
जांके जितनी बुद्धि हृदय में तो तितनी अनुमानत।
या कमरी के एक रोम पर वारों कोटिन अम्बर।
सो कमरी तुम निंदित गोपी तीन लोक आडंबर।
कमरी के बल असुर सँहारे कमरी ते सब भोग।
जात पात कमरी है मेरी सूर सब ही यह जोग।

राग सोरठ (१७१)

ग्वालन सैन दियो तब स्याम।
कूदि कूदि सब परहु द्रुमन ते जात चली घर बाम।
सैन जानि तब ग्वाल जहाँ तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए।
बेनु विषान शंख मुरली ध्वनि सब एक शब्द बजाए।
चकृत भईं तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल।
कूदि कूदि सब परे धरणि पै घेरि लईं ब्रज बाल।
नित प्रति जात दूध दधि बेचन आजु पकरि हम पाई।
सूरस्याम को दान देहु तब जैहौं नंद दुहाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देव गंधारी (१७२)

कापर दान पहरि तुम आए ।
चलहु जुमिलि उन ही में जैए जिन तुम रोकन पंथ पठाए
सखा संग लीन्हे जु सेंतिके फिरत रैनि दिनि बन में धाए
नाहिं न राज कंस को जान्यो बाट रोकते फिरत पराए
लीने छीन बसन सब ही के सब ही लै कुंजानि अरुझाए
सूरदास प्रभु के गुण ऐसे दधि के माट भूमि ढरकाए

राग नट (१७३)

हम पर रिस करति ब्रज नारी ।
बात सूधे हम बतावत आपु उठत पुकारि ।
कबहुँ मर्यादा घटावति कबहुँ दै है गारि ।
प्रात ते झगरो पसारो दान देहु निवारि ।
बड़े घर की बहू बेटी करति बृथा झवारि ।
सूर अपनो अंस पावै जाहिं घर झखमारि ।

राग सूही (१७४)

को जानै हरि चरित तुम्हारो ।
जबहूं दान नहीं तुम पायो मन हरि लियो हमारो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेखो करि लीजै मन मोहन दूध दह्यो कछु खाहु ।
सद माखन तुम्हरेहि मुख लायक लीजै दान उगाहु ।
तुम खैहौ माखन दधि मोहन हम सब देखि २ सुख पावैं।
सूरस्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रगट सुनावै ।

राग देव गन्धार (१७५)

गोपिका अति आनंद भरी ।
माखन दधि हरि खात प्रेम सों निरखति नारि खरी ।
कर लै लै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ ।
मानहु कंज मिलतहुँ ससि को लिये सुधा करौ कर आइ ।
जा कारण सिव ध्यान लगावत सेस सहस मुख गावत ।
सोई सूर प्रगट ब्रज भीतर राधा मनहिं चुरावत ।

राग रामकली (१७६)

राधा सों माखन हरि मांगत ।
औरन की मटुकिन को चाख्यो तुमरो कैसो लागत।
लै आई बृषभानु नंदिनी सदलौनी है मेरो ।
लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अल्प हँस हेरो ।
सबहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देव गंधारी (१७२)

कापर दान पहरि तुम आए ।
चलहु जुमिलि उन ही में जैए जिन तुम रोकन पंथ पठाए
सखा संग लीन्हे जु सेंतिके फिरत रैनि दिनि बन में धाए
नाहिं न राज कंस को जान्यो बाट रोकते फिरत पराए
लीने छीन बसन सब ही के सब ही लै कुंजनि अरुझाए
सूरदास प्रभु के गुण ऐसे दधि के माट भूमि ढरकाए

राग नट (१७३)

हम पर रिस करति ब्रज नारी ।
बात सूधे हम बतावत आपु उठत पुकारि ।
कबहुँ मर्यादा घटावति कबहुँ दै है गारि ।
प्रात ते झगरो पसारो दान देहु निवारि ।
बड़े घर की बहू बेटी करति वृथा झवारि ।
सूर अपनो अंस पावै जाहिं घर झखमारि ।

राग सूही (१७४)

को जानै हरि चरित तुम्हारो ।
जबहूं दान नहीं तुम पायो मन हरि लियो हमारो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेखो करि लीजै मन मोहन दूध दह्यो कछु खाहु।
सद माखन तुम्हरेहि मुख लायक लीजै दान उगाहु।
तुम खैहौ माखन दधि मोहन हम सब देखि २ सुख पावैं।
सूरस्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रगट सुनावै।

राग देव गन्धार (१७५)

गोपिका अति आनंद भरी।
माखन दधि हरि खात प्रेम सों निरखति नारि खरी।
कर लै लै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ।
मानहु कंज मिलतहुँ ससि को लिये सुधा करौ कर आइ।
जा कारण सिव ध्यान लगावत सेस सहस मुख गावत।
सोई सूर प्रगट ब्रज भीतर राधा मनहिं चुरावत।

राग रामकली (१७६)

राधा सों माखन हरि मांगत।
औरन की मटुकिन को चाख्यो तुमरो कैसो लागत।
लै आई बृषभानु नंदिनी सदलौनी है मेरो।
लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अल्प हँस हेरो।
सबहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रज ललना मन भाई ।

राग धनाश्री (१७७)

स्यामै सुनहु इक बात हमारी ।
ढीठो बहुत कियो हम तुम सों सो बकसो हरि चूक हमारी ।
मुख जो कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहीं ।
हँसि २ कहति खिझावति तुमको अति आनँद मनमाहीं ।
दधि माखन को दान और जो जानौ सबै तुम्हारो ।
सूरस्याम तुमको सब दीनो जीवण प्राण हमारो ।

राग धनाश्री (१७८)

नंद कुमार कहा यह कीन्हौं ।
बूझति तुमहिं कहौं धौं हमसों प्रान लियो कि मन हरि लीनो
कबू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारे आई ।
एते पर तुम ही अब जानौं करनी भली बुराई ।
जो जासों अंतर नहिं राखै सो क्यों अंतर राखै ।
सूरस्याम तुम अंतरयामी वेद उपनिषद भाषै ।

राग टोडी (१७९)

सुनहु बात जुवती इक मोरी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम ते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी ।
तुम कारन बैकुंठ तजत हौं जनम लेत ब्रज आई ।
वृन्दावन राधा संग गोपी यह नाहिं बिसरयो जाई ।
तुम अन्तर अन्तर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह ।
क्यों राधा ब्रज बसे बिसारयो सुमिरि पुरातन नेह ।
अब घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाइ ।
सूरस्याम हँसि हँसि जुवतिन सों ऐसी कहत बनाइ ।

राग बिलावल (१८०)

चली प्रातही गोपिका मटुकिन लै गोरस ।
नयन स्रवण मन चित बुद्धि ये नहिं काहू के बस ।
तनु लीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो जस ।
गोरस नाम न आवई कोऊ लै है हरिरस ।
जीव परयो या ख्याल में अरु गये दसादस ।
बझै जाइ खग बृंद ज्यों प्रिय छबि लटकनि लस ।
छाँडि देहु डरात नहिं कीन्हों पावै तस ।
सूरस्याम प्रभु भौंह की मारनि फाँसी गस ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग कन्हरा (१८१)

गोरस को निज नाम भुलायो ।
लेहु लेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यह शोर लगायो
कोऊ कहै स्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरस नहीं हम पायो
जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दहीकहि तिनहि सुनायो
एक कहि उठत दान माँगत हरि कहू भई की तुमहिं चलायो
सुनहु सूर तरुनी जोबन मद तापर स्याम महारस पायो

राग कान्हरा (१८२)

दधि बेचत ब्रज गलिन फिरैं ।
गोरस लेन बुलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं ।
उनकी बात सुनत नहिं स्रवननि कहति कहा ये घर न जरैं ।
दूध दह्यो ह्यां लेत न कोऊ प्रातहि ते लिये ररैं ।
बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोक लाज निदरैं
सूरस्याम को रूप महारस जाके बल काहू न डरैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुराग-लीला

राग धनाश्री (१८३)

सब से ऊंची प्रेम सगाई।
दुरजोधन को मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई।
झूठे फल शबरी के खाए बहु विधि प्रेम लगाई।
प्रेम के वश नृप सेवा कीनी आप बने हर नाई।
राजसू यज्ञ जुधिष्ठिर कीनो तामे जूठ उठाई।
प्रेम के वश अर्जुन-रथ हांक्यो भूल गए ठकुराई।
ऐसी प्रीति बढ़ी बृन्दावन गोपिन नाच नचाई।
सूर क्रूर इस लायक नाहीं कहां लग करें बड़ाई।

राग झंझोटी तिताला (१८४)

सब मिलि गाओ प्रेम बधाई।
यह संसार रतन इक प्रेमहि और बादि चतुराई।
प्रेम बिना फीकी सब बातैं कहहु न लाख बनाई।
जोग ध्यान जप तप ब्रत पूजा प्रेम बिना बिनसाई।
हाव भाव रस रंग रीति बहु काव्य केलि कुसलाई।
बिना लोन बिंजन सो सब ही प्रेम-रहित दरसाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेमहि सों हरि हू प्रगटत है जदपि ब्रह्म जगराई ।
तासों यह जग प्रेम सार है और न आन उपाई ।

राग नट (१८५)

जमुना जल बिहरत ब्रजनारी ।
तट ठाढे देखत नँद नंदन मधुर मुरली कर धारी ।
मोर मुकुट स्रवनन मणि कुंडल जलजमाल उर भ्राजत ।
सुंदर सुभग स्याम तनु नव घन बिच बग पाँति बिराजत ।
उर बनमाल सुभग बहु भाँतिनु श्वेत लाल सित पीत ।
मनो सुरसरि तटि बैठे सुक बरन बरन ताजि भीत ।
पीतांबर कटि में छुद्रावलि बाजत परम रसाल ।
सूरदास मनो कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ।

राग नट नारायणी (१८६)

राधे निरखि भूली अंग ।
नँद नंदन रूप पर गति मति भई तनु पंग ।
इत सकुचि अति सखिन को उत होत अपनी हानि ।
ज्ञान करि अनुमान कीन्हों अबहिं लै है जानि ।
चतुर सखियन परखि लीन्ही समुझि भई गँवारि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबै मिलि इत न्हान लागीं ताहि दियो बिसारि।
नागरी मुख स्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि।
सूर राधा लखति नाहीं इन देई अब टेरि।

(१८७)

छिपाये छिपत न नैन लगे।
उघरि परत सब जानि जात हैं, घूंघट में न खगे।
कितनो करो दुराव दुरत नहीं, जब ये प्रेम पगे।
निडर भये उघरे से डोलत, मोहन रंग रंगे।

राग देव गंधार (१८८)

कमलसी अँखियां लाल तिहारी।
तिनसों तक तक तीर चलावत बेधत छतियाँ हमारी।
इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत यह अजहूँ न सम्हारी।
श्री विट्ठल गिरिधन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी।

राग रेखता (१८९)

दिलदार यार प्यारे, गलियों में मेरे आजा।
आंखें तरस रही हैं, सूरत हमें दिखाजा
चेरी हूं तेरी प्यारे, इतना तू मत सता रे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाखों ही दुख सहारे, टुक अब तो रहम खा जा ॥
तेरे ही हेत मोहन, छानी है खाक बन बन।
दुख झेले सिर पै अन गिन, अब तो गले लगा जा ॥
मन को रहूं मैं मारे, कब तक बतादे प्यारे।
सूखे विरह में तारे, पानी इन्हें पिलाजा ॥
सब लोक लाज खोई, दिन रैन बैठ रोई।
जिस का कहीं न कोई, तिस का तू जी बचा जा ॥
मुझ को न यूं भुलाओ, कुछ शर्म जी में खाओ।
अपनों को मत सताओ, ऐ प्राण प्यारे राजा ॥
'हरिचंद' नाम प्यारी, दासी है जो तुम्हारी।
मरती है वह बिचारी, आकर उसे जिला जा ॥

(१६०)

नखरा राह राह को नीको।
इत तो प्राण जात हैं तुम बिनु, तुम न लखत दुख जीको
आवहु बेगि नाथ करुणा करि, मति जु करौ मन फीको
"हरी चंद्र" अठिलान पनेको, बिधि ने दियो तुव टीको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१६१)

सखी ये नैना बहुत बुरे।
तब सों भए पराए, हरि सों जब सो जाइ जुरे।
मोहन के रस बस ह्वै डोलत तलफत तनिक दुरे।
मेरी सीख प्रीति सब छाड़ी ऐसे ये निगुरे।
जग खीझ्यौ बरज्यौ पै ये नहिं हठ सों तनिक मुरे।
अमृत-भरे देखत कमलन से विष के बुते छुरे।

(१६२)

यह नयना रिझवार नये री।
एक बेर लखि रूप लाल को, तजि घर बार फकीर भये री।
अब देखे बिन डारत आंसू, जुग समान पल बीत गये री।
'नारायण' ये हू अति चंचल, फल पाए जो बीज बये री।

राग सोरठ (१६३)

सखी हम कहा करैं कित जाँय ?
बिनु देखे वह मोहिनि मूरति नैना नाहिं अघायँ।
कछु न सुहात धाम धन गृह-सुख मात पिता परिवार।
बसति एक हिय मैं उन की छबि नैनन वही निहार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैठत उठत सयन सोवत निसि चलत फिरत सब ठौर ।
नैनन तें वह रूप रसीलो टरत न इक पल और ।
हमरे तो तन मन धन प्यारे मन बच क्रम चित माहिं ।
पै उन के मन की गति सजनी, जानि परत कछु नाहिं ।
सुमिरन वही ध्यान उनको ही, मुख में उनको नाम ।
दूजी और नाहिं गति मेरी, बिनु पिय और न काम ।
नैना दरसन बिनु नित तलफैं, स्रवन सुनन कों कान ।
बात करन कों मुख तलफै गर मिलिवे को ये प्रान ।

(१६४)

सजनी नवल कुंज बन फूले ।
अलि-कुल संकुल करत कुलाहल सौरभ मनमथ मूले ।
हरषि हिंडोरे रसिक रासबर जुगुल परस्पर झूले ।
विट्ठल विपुल बिनोद देखि नभ देव बिमानन भूले ।

(१६५)

सखी मेरे मन की को जाने ।
कासों कहूं सुने जो चित दै हित की बात बखाने ।
ऐसो को है अन्तर्यामी तुरत पीर पहिचाने ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'नारायण' जो बीत रही है कब कोई सच माने ।

(१९६)

धिक है वह देह औ गेह सखी,
जेहि के बस नेह को टूटनो है ।
उन प्रान पियारे बिना यहि जीवहि,
राखि कहा सुख लूटनो है ।
'हरिचन्द' जू बात ठनी सो ठनी,
नित की कुलकानि सों छूटनो है ।
तजि आन उपाय अनेक भटू,
अब तो हमको बिख घूटनो है ।

(१९७)

हमहूँ सब जानतीं लोक की चालन,
क्यों इतनो इतरावती हौ ।
हित जामैं हमारो बनै सो करौ,
सखियाँ तुम मेरी कहावती हौ ।
'हरिचन्द' जू या में न लाभ कछू,
हमैं बातन क्यों बहरावती हौ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सजनी मन हाथ हमारे नहीं,
तुम कौन को का समुझावती हौ ।

(१६८)

सांवरे क्यों मोसों रिस मानी ।
तेरे काज घर बार त्यागि कै, गलियन फिरत दिवानी
लोक लाज कुल-रीति प्रीति जग, इनहू को दियो पानी
'नारायण' अब तो हँसि चितवौ, ऐ रे रूप गुमानी

(१६६)

श्री रघुनाथ की प्रान प्रिया,
मिथिलेश-लली दस-सीस चही है ।
वेद चुराय कै दानव के गन,
भागे पताल न जाय कही है ।
वाम मदालसा जो सुर लोक की,
सो छल के खल दैत लही है ।
जो बिधि बाम भयो सजनी,
तब जो जो करै सो अचर्ज नही है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देसी (२००)

जहँ पिय तहीं सबै सुख साज ।

बिनु पिय जीवन व्यर्थ सखी री यद्यपि सबै समाज ।

जो अपुनो पीतम सँग नाहीं, सुर पुर कौने काज ।

निरजन बनहू मैं पीतम के सँग सुरपुर को राज ।

(२०१)

मनमोहन तें बिछुरी जबसों तन आँसुन सों सदा धोवती हैं

हरिचंद जू प्रेम के फंद परी कुल की कुल लाजहि खोवती हैं

दुख के दिन कों कोऊ भाँति बितै बिरहागम रैन सँजोवती हैं

हमहीं अपुनी दशा जानैं सखी, निसि सोवतीहै किधौं रोवतीहैं

(२०२)

कितकों ढरिगो वह पार सबै, क्यों रुखाई नई यह साजत हौ

हरिचंद भए हौ कहा के कहा, अन बोलिबे में नहिं लाजत हौ

नितको मिलनो तो किनारे रह्यो, मुख देखतही दुरि भाजतहौ

पहिले अपनाइ बढाइ कै नेह, नारूसिबे में अब लाजत हौ

राग गौरी (२०३)

पवन लगि डोलत बन की पतियाँ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानहु पथिकन निकट बुलावहिं काहन प्रेम की बतियाँ।
अलक हिलत फहरत तन सारी होत हैं सीतल छतियां।
यह छबि लखि ऐसी जिय आवत इतहि बितैये रतियां।

राग बिहाग (२०४)

चढ़ावत मो पै काम कमान।
बेधत है जिय मारि गारि कै तानि श्रवन लागि बान।
पिया बिना निसि दिन डर पावत मोहि अकेली जान।
तुमरे बिनु को धीर धरावै पीतम चतुर सुजान।

राग बिहाग (२०५)

कहै को चंद बदन की सोभा ?
जाको देखत नगर नारि को सहजहि ते मन लोभा।
मनु चंदा आकास छोड़ि कै भूमि लखन को आयो।
कै धौं काम बाम के कारन अपुनो रूप छिपायो॥
भौंह कमान कटाक्ष बान से अलक भ्रमर घुंघरारे।
देखत ही बेधत हैं मन मृग नहिं बचि सकत बिचारे॥

राग भैरव (२०६)

जालम नयन मेरे नहीं रहिंदे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लालच लगे रूप माधव के कर आराम नहिं बहिंदे ।
वर्ज वर्ज रही अर्ज न मन्नदे हर्ज मर्ज सब सहिंदे ।
कर कर जतन 'रतन हरि' हारे जाय जोरावरी खहिंदे ।

राग भैरवी (२०७)

लाग गई तब लाज कहां री ।
जे दृग लगे नंद नंदन सों औरन सों फिर काज कहां री
भर २ पिये प्रेमरस प्याले होछे अमल को स्वाद कहां री
ब्रजनिधि ब्रजरस चाख्यो चाहे या सुख आगे राज कहां री

राग कालिंगड़ा (२०८)

अहो तुम सोच करो मति प्यारी ।
तुम्हरो प्रीतम तुमहिं मिलै हैं करि अनेक उपचारी
अति कुम्हलाने कमल बदन को प्रफुल्लित करिहौं वारी
चन्दहिं जौ चाहै तौ लाऊं यह तो बात कहांरी

राग बिलावल (२०९)

इतते राधा जात जमुना तट उतते हरि आवत घर को ।
काछे काछिनी भेष नटवरको बीच मिली मुरलीधर को ॥
चितै रही मुख इन्दु मनोहर वा छबि पर वारति तनको ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानहु पथिकन निकट बुलावहिं काहन प्रेम की बतियाँ।
अलक हिलत फहरत तन सारी होत हैं सीतल छतियां।
यह छबि लखि ऐसी जिय आवत इतहि बितैये रतियां।

राग बिहाग (२०४)

चढ़ावत मो पै काम कमान।
बेधत है जिय मारि गारि कै तानि श्रवन लागि बान।
पिया बिना निसि दिन डर पावत मोहि अकेली जान।
तुमरे बिनु को धीर धरावै पीतम चतुर सुजान।

राग बिहाग (२०५)

कहै को चंद बदन की सोभा ?
जाको देखत नगर नारि को सहजहि ते मन लोभा।
मनु चंदा आकास छोड़ि कै भूमि लखन को आयो।
कै धौं काम बाम के कारन अपुनो रूप छिपायो॥
भौंह कमान कटाक्ष बान से अलक भ्रमर घुंघरारे।
देखत ही बेधत हैं मन मृग नहिं बचि सकत बिचारे॥

राग भैरव (२०६)

जालम नयन मेरे नहीं रहिंदे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लालच लगे रूप माधव के कर आराम नहिं बहिंदे ।
वर्ज वर्ज रही अर्ज न मन्नदे हर्ज मर्ज सब सहिंदे ।
कर कर जतन 'रतन हरि' हारे जाय जोरावरी खहिंदे ।

राग भैरवी (२०७)

लाग गई तब लाज कहां री ।
जे दृग लगे नंद नंदन सों औरन सों फिर काज कहां री
भर २ पिये प्रेमरस प्याले होछे अमल को स्वाद कहां री
ब्रजनिधि ब्रजरस चाख्यो चाहे या सुख आगे राज कहां री

राग कालिंगड़ा (२०८)

अहो तुम सोच करो मति प्यारी ।
तुम्हरो प्रीतम तुमहिं मिलै हैं करि अनेक उपचारी
अति कुम्हलाने कमल बदन को प्रफुल्लित करिहौं वारी
चन्दहिं जौ चाहै तौ लाऊं यह तो बात कहांरी

राग बिलावल (२०९)

इतते राधा जात जमुना तट उतते हरि आवत घर को ।
काछे काछिनी भेष नटवरको बीच मिली मुरलीधर को ॥
चितै रही मुख इन्दु मनोहर वा छबि पर वारति तनको ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूरहि ते देखत ही जाने प्राणनाथ सुन्दर घनको ॥
रोम पुलकि गदगद बाणी कहि कहा जात चोरै मनको ।
सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखन ते चितवत धनको ॥

राग देव गंधार (२१०)

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे ।
ब्रज बनितन कानन में लग लग छिन में मानहिं छोरे ॥
सुनत बनत हैं कहत बनत नहीं प्रेम प्रीति के डोरे ।
श्री रघुराज सुनावो निशिदिन मांगों यह कर जोरे ॥

(२११)

पहिले तो अदा दिखा कत्लकिया, फिर देतेहो पीछे पुचाराहमैं
कत्लशबको गलेसेलगा जोलिया, तबचल २ कहाहटदुबाराहमैं
मतलबका यहांहै जमानासभी, बसकरनाहै तुमसे किनाराहमैं
हटौ प्रीतकी रीत न जानौकछू, दिल फेरदो श्याम हमारा हमैं

राग आसावरी (२१२)

स्याम भए वृषभानुसुता वस और नहीं कछु भावै हो ।
जो प्रभु तिहूं भुवन को नायक सुर नर मुनि अंत न पावै हो
जाको सिव ध्यावत निसिबासर सहसानन जेहि गावै हो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सो हरि राधा वदन चंद को नैन चकोर त्रसावै हो ।
जाको देखि अनंग अनागत नागरि छबि भरमावै हो।
सूरस्याम स्यामावस ऐसे ज्यों संग छाँह डुलावै हो ।

राग जैतश्री (२१३)

कबहूँ स्याम जमुना तट जात ।
कबहूं कदम चढ़त मग देखत मन राधा बिन अति अकुलात
कबहूं जात बन कुंज धामको देखि रहत कछु नहीं सुहात।
तब आवत बृषभानु पुरा को अति अनुराग भरे नंदलाल।
प्यारी हृदय प्रगट ही जानति तन मन मांझ सिहात ।
सूरदास प्रभु नागरिके उरनागर स्यामल गात ।

राग सोरठ तिताला (२१४)

कहो वह कैसे बरनैं रूप ।
नख सिख सों सबही विधि सुन्दर सोभा अतिही अनूप ॥
नैन धरे को कौन सुफल जो नैन न देख्यो वाहि ।
कोटि चंद हू लाज करत हैं तनिक बिलोकत जाहि ॥
घुंघुरारे सटकारे कारे निथुरे सुथरे केस ।
एडी लौं लांबे अति सोभित नव जलधर के भेस ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लचकीली कटि अतिहि पातरि चालत झोंका खाय।
अति सुकुमार सकल अंग वाको कवि सों नहिं कहि जाय॥
दिन २ जोबन बढ़त उमँग अति, पूरि रहें सब गात।
लाज भरी चितवत चित चोरति जब मुसकाइ जँभात॥
तरुनाई अँगराई अँग अँग नैन रहत ललचाय।
मनु जग जुवजन जीतन एकहि बिधिना सी बनाय॥

(२१५)

एरी हुस्नवारी प्यारी नरगिस चश्मवारी,
अबरूकमान वारी बाला क्यों बताती है।
जुल्फ़ कत्लकारी रुख़्सार महिताब वारी,
"रसिक बिहारी" हाय दिल क्यों सताती है।
बांह गल डारी जिय जलत भिटारी,
आय दर्स दिखारी सुकुमारी क्यों लुभाती है।
नज़र मिलारी करी क्यारी बेकरारी,
अब तेरी इन्तज़ारी में हमारी जान जाती है।

(२१६)

मानो भुजंगिनि कंज चढ़ी मुख ऊपर आय रहीं पलकैं त्यों।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारीमहा सटकारीहैं सुन्दर भीजिरहीं मिलि सौंधनि ही सौं ।
लटकी तट वालटकीलीते औरगईं बढ़िकै छबिआननकीत्यौं
आंकु बढ़ै दिये दूजी बिकारी के होत रुपैयन ते मुहरैं ज्यौं ।

(२१७)

कहूं बनमाल कहूं गुंझानि की माल कहूं,
संग सखा ग्वाल ऐसे हाल भूलि गये हैं ।
कहूं मोर चन्द्रिका लकुट कहूं पीत पट,
मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारि दये हैं ।
कुण्डल अडोल कहूं सुन्दर न बोलें बोल,
लोचन अलोल मानों कहूं हर लये हैं ।
घूंघट की ओट ह्वैके चितयो कि चोट करी,
लालन तो लोट पोट तब ही ते भये हैं ।

राग देस (२१८)

बाधा दे राधा कित गई ।
बृन्दा बिपिन अछत प्यारी बिन सब विपरीत भई ।
मेरे मंद भाग्य सों काहू सोच प्रकृति सिखई ।
व्यास स्वामिनी बेगि मिलो तो बाढ़ै प्रीति नई ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग गूजरी (२१९)

राधा स्याम, स्याम राधा संग।

पिय प्यारी को हृदये राखत प्यारी रहित सदा हरि के संग

नागरिनैन चकोर बदन शशि पिय मधुकर अंबुज सुंदरि मुख

चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागर नागरि नागर सुख

सुखदुख सोचि रहत मनही मन तबजानत तनको यह कारन

सुनहु सूर कुलकानि जीय दुख दोऊ फल्ल दोउकरत विचारन

गोरे ग्वाल लीला

राग काफी (२२०)

कर विचार बृषभानु दुलारी।

ग्वाल रूपधर छलन कृष्ण को नन्दगाम की ओर सिधारी

जहँ हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चल आई।

देख रूप मोहे मुरलीधर भूल गए चतुराई।

अरे मित्र क्या नाम तिहारो बास कहां है तेरो।

मैं तो तोहिं कभू नाहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो।

गोरे ग्वाल भानुपुर के हम गोधन बृन्द चरावें।

रसिक बिहारी गाय हमारी आई भज कहां पावें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग देस (२२१)

जुगुल छबि आज अनूप बनी ।
गोरे स्याम सांवरी राधा नख सिख द्युति कमनी ।
खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख अनी ।
ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसकान घनी ।

मान-लीला

ताल दादरा (२२२)

सखी नन्दलाल आवन नाहिं पावें ।
भीतर चरन धरन जिन दीजो, चाहे जिते ललचावें ।
ऐसेन को विस्वास कहाँ री, कपट की बात बनावें ।
नारायण इक मेरे भवन बिन, अंत चाहे जहाँ जावें ।

राग भैरवी (२२३)

भोर भए उठ आए मोहन, कहा बनावत बात ।
बिन गुण माल बिराजत उर पर सब अंग चिह्न लखात ।
बंदन रंग कपोलन दीये सोहत चंद्र दुरात ।
धौंदी के प्रभु वाहीं जाओ तुम जहाँ जगे हो सारी रात ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग पूर्वी (२२४)

हम से रूठ रहत क्यों प्यारी ।
कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक बृषभानु दुलारी
गयो सखन सँग मैं जमुना तट जहँ जल भरत रहीं ब्रजनारी
मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी
मैं न सुनी जब कही सबन मिल लेंगी समझ तुम्हें बनवारी
देहैं मान कराय राधिका सों सब दई आय दरशारी
जो वे कहत करत हो सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी
एक की सातलगाय सुनावत झूठी ग्वालिन रसिक बिहारी

राग पीलू (२२५)

तू तो मोहिं प्राणन हूं ते प्यारी ।
भूले मान न कीजिये सुंदरि हौं तो शरण तिहारी ।
नेक चितै हँस बोलिये सुंदरि खोलिये घूंघट सारी ।
कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भर लिये अंकन वारी ।

राग बिहाग (२२६)

तनक हँस हेरो मेरी ओर ।
हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भई हो कठोर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निसि दिन तुमरोई नाम रटत हों चातक ज्यों घनघोर।
कृष्ण प्रिया दर्शन के लोभी जैसे चन्द्र चकोर।

राग पीलू (२२७)

राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी।
मैं आयो चाहत हों तुम पै बीच लियो उन घेरी।
अनेक जतन बिनती कर हारयौं कैसे जात न फेरी।
परवश परयो दास परमानन्द काहि सुनावों टेरी।

राग श्याम कल्याण (२२८)

राधा प्यारी रूप उजारी मो तन को हेरो मेरी प्यारी।
तन मन धन छबि ऊपर वारों नाम उचारूं मैं तेरो।
हँस मुसकाय बदन तन हेरो मोहिं करो चरनन को चेरो।
अली किशोरी एक बार कहो लाल बिहारी मेरो।

(२२९)

चलहि किन मनिनि कुंज-कुटीर।
तो बिन कुँवर कोटि बनिता जुत मथत मदनकी पीर।
गद गद सुर विरहाकुल पुलकित स्रवत बिलोचन नीर।
कासि कासि वृषभानुनंदिनी बिलपत बिपिन अधीर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बंसी बिसिख ब्याल मालावलि पंचानन पिक कीर।
मलयज गरल हुतासन मारुत साखा मृग रिपुचीर।
हित हरिबंस परम कोमल चित चपल चली पिय तीर।

(२३०)

आओ मेरे मोहन प्यारे झूठे!
अपनी टारि प्रतिज्ञा कपटी उलटे हम सों रूठे।
मति परसौ तन रँगे और के रंग अधर तुव जूठे।
ताहू पै तनिकौ नहिं लाजत निरलज अहो अनूठे।

राग जंगला (२३१)

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो।
जब तें तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो।
भीतर बाहर द्वार पौर लौं राधा नाम न पायो।
किशोरी गोपाल की यह इक बिनती हा हा करत हरायो।

राग कवित्त जंगला(२३२)

चैन नहीं दिन रैन परै जब ते तुम नयनन नेक निहारे
काज बिसार दियो घर के ब्रजराज मैं लाज समाज बिसारे
मो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोहिंसदा चितसों अति चाहियो नीकेकै नेह निबाहियो प्यारे

राग देस (२३३)

कुंज पधारो जी रंग भरी रैन।

रंग भरी दुलहिन रंग भरे पिया स्याम सुंदर सुख दैन
रंग भरी सैनी बिछी सेज पर रंग भरचो उलहत मैन
रसिक बिहारी पिया पियारीजी दोऊ मिल करो सेजसुख सैन

राग कान्हरा (२३४)

नवल किशोर नवल नागरिया।

अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर,
स्याम भुजा अपने उर धरिया।
क्रीडा करत तमाल तरुन तर,
स्यामा स्याम उमँगि रस भरिया।
यों लपटाइ रहे उर उर ज्यों
मरकत मणि कंचन में जरिया।
उपमा काहि देउँ को लायक,
मन्मथ कोटि वारने करिया।
सूरदास बलि बलि जोरी पर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नँद कुँवर वृषभानु कुँवरिया ।

(२३५)

बन में बृषभानु कुमारि मुरारि रमे रुचि सों रस रूप पिये
कल कूजत पूजत काम कला विपरीत रची रति केलि हिये
मणि सोहत स्याम जराई जरी अति चौकी चलैचल चारहिये
मख़तूल के झूलझुलावत केशव भानु मनो शनि अंक लिये

हिंडोरा -झूलन--लीला

रागखेमटा (२३६)

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नन्दनी ।
सावन की तीज आई नभ घोर घटा छाई,
मेघन झरी लगाई परै बूंद मंदनी ।
सुन्दर कदम की डारी झूला परयो प्यारी,
देखो कुमर हाहारी सब सुख निकंदनी ।
पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी,
मुख चंद्र की उजारी मृदु हास फंदनी ।
मम मान सीख लीजे सुन्दरी न देर कीजे,
हम तो विलोक जीजे तू है गति गयंदिनी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोभा लखो विपिन की फूली लता द्रुमन की,

सुन अर्ज रसिक जन की करों चरण बंदनी।

राग पीलू (२३७)

चलो पिया वाही कदम तरे झूलें ।

झुकी हैं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिंदी के कूलें।

बोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण गुंजत भूलें।

ललित किशोरी मग बतरावें कह कह बलियां फूलें ।

राग खेमटा (२३८)

जुगल बर झूलत दे गर बाहीं ।

बादर बरसें चपला चमके सघन कदम की छाहीं ।

इत उत पेग बढ़ावत सुन्दर मदन उमंगन माहीं ।

ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ़ जमुना लौं जाहीं ।

राग मल्हार (२३९)

एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे ।

काहे को इतनी रमक बढ़ावत द्रुम उरझत चीरे चीरे ।

जो तुम झुक झुक झूटन के मिस आवत हो नीरे नीरे ।

नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग मल्हार (२४०)

कैसे झूलों हिंडोरे बतिया माने नाहिं हरी ।
वरजो न मानत यह काहू को लोक की लाज टरी ।
हाहा खात यह तो पैयां परत हौं प्रेम के फंद परी ।
रसिक गोविंद अभिराम स्याम ने भुज भर अंक भरी ।

राग दादरा (२४१)

सुन सखी आज झूलन नहिं जैहौं ।
स्याम सुंदर पिया रस लंपट है अति ही ढीठ्यो देत ।
झूठा तरल करे पाछे ते धाय भुजन भर लेत ।
चितवन चपल चुरावन अनतै हमें जनावत नेह ।
रसिक गोविंद अभिराम स्याम संग क्यों न जाय रस लेत ।

राग मल्हार (२४२)

या रितु रूस रहन की नाहीं ।
बरसत मेघ मेदनी के हित प्रीतम हरष बढ़ाहीं ।
जे बेली ग्रींषम रितु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं ।
उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलन को जाहीं ।
यह संपदा दिवस चार की सोच समुझ मन माहीं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर सुनत उठ चली राधिका दे दूती गर बाँहीं ।

राग मल्हार (२४३)

भीगत कुंजन में दोऊ आवत ।
ज्यों ज्यों बूंद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ।
अधिक झकोर होत मेघन की द्रुमतर छिन बिलमावत ।
वे हँस ओट करत पीताम्बर वे चुनरी ओढावत ।
तैसे ही मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन छावत ।
भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत ।
सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ।

रास-लीला

(२४४)

जब आईहै कातककी रुत सीतल, कान्ह तबै अतिही रसिया
संग गोपिन खेल बिचार कर्यो, जु हुतो भगवान महाजसिया।
अपवित्रन लोगनके जिहके पग, लागत पाप सबै नसिया
तिहको सुनि त्रीयन के संग खेल निवारहु काम इहै बसिया

(२४५)

मुख जाहि निसापति की सम है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग मल्हार (२४०)

कैसे झूलों हिंडोरे बतिया माने नाहिं हरी ।
वरजो न मानत यह काहू को लोक की लाज टरी ।
हाहा खात यह तो पैयां परत हौं प्रेम के फंद परी ।
रसिक गोविंद अभिराम स्याम ने भुज भर अंक भरी ।

राग दादरा (२४१)

सुन सखी आज झूलन नहिं जैहौं ।
स्याम सुंदर पिया रस लंपट है अति ही ढीठ्यो देत ।
झूठा तरल करे पाछे ते धाय भुजन भर लेत ।
चितवन चपल चुरावन अनतै हमें जनावत नेह ।
रसिक गोविंद अभिराम स्याम संग क्यों न जाय रस लेत ।

राग मल्हार (२४२)

या रितु रूस रहन की नाहीं ।
बरसत मेघ मेदनी के हित प्रीतम हरष बढ़ाहीं ।
जे बेली ग्रीषम रितु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं ।
उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलन को जाहीं ।
यह संपदा दिवस चार की सोच समुझ मन माहीं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर सुनत उठ चली राधिका दे दूती गर बांहीं ।

राग मल्हार (२४३)

भीगत कुंजन में दोऊ आवत ।
ज्यों ज्यों बूंद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ।
अधिक झकोर होत मेघन की द्रुमतर छिन बिलमावत ।
वे हँस ओट करत पीताम्बर वे चुनरी ओढावत ।
तैसे ही मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन छावत ।
भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत ।
सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ।

रास-लीला

(२४४)

जब आईहै कातककी रुत सीतल, कान्ह तबै अतिही रसिया
संग गोपिन खेल बिचार करयो, जु हुतो भगवान महाजसिया
अपवित्रन लोगनके जिहके पग, लागत पाप सबै नसिया
तिहको सुनि त्रीयन के संग खेल निवारहु काम इहै बसिया

(२४५)

मुख जाहि निसापति की सम है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनमैं तिन गीत रिझ्यो अरु गायो ।
ता सुर को धुन स्रउनन मैं,
ब्रजहू की त्रिया सबही सुन पायो ।
धाइ चलीं हरिके मिलिबे कहु,
तउ सबके मन मैं जब भायो ।
कान्ह मनों मृगनी जुवती,
छलिबे कहु घंटक हेर बनायो ।

(२४६)

गई आइ दसो दिसि ते गुपिया सबही रस कान्हके साथ पगी।
पिख कै मुख कान्हको चंदकला सु चकोरन सी मनमैं उमगी।
हरिको पुनिसुद्ध सुआनन पेखि किधौं तिनकी ठग डीठ लगी
भगवान प्रसन्न भयो पिखकै कवि स्याम मनो मृग देख मृगी

राग भैरव व ठुमरी (२४७)

सबको सुख दाई अति मन भाई शरद सुहाई आई ।
कूजत हंस कोकिला, फूले कमल, सरानि सुखदाई ।
सूखे पंक हरे भए तरुवर, दुरे मेघ, मग भूले ।
अमल इंदु तारे भए, सरिता-कूल कास-तरु फूले ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर्मल जल भयो, दिसा स्वच्छ भई, सो लखि अति अनुरागे
जानि परत हरि शरद विलोकत रतिश्रम आलस जागे

राग विहागरो (२४८)

निसि बनको काहे उठि धाई।
हँसि हँसि स्याम कहतहैं सुंदरि की तुम ब्रजमार्गहि भुलाई
गई रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु अवसेर लगाई
अतिश्रम भयो विपिन क्योंआई मारग वह कहि सबनिबताई
जाहु जाहु घर तुरत युवतिजन खीझत गुरुजन कहि डरदाई
की गोकुल ते गमन कियो तुम इन बातन है नहीं भलाई
यह सुनकै ब्रजवाम कहत भई कहा करत गिरिधर चतुराई
सूर नाम लै लै जन जनके मुरली बारम्बार लगाई

राग रामकली (२४६)

अब तुम कही हमारी मानो।
बन में आइ रैन सुख देख्यो इहै लह्यो सुख जानो।
अब ऐसी कीजो जिनि कबहूं जानति हौं मन तुमहूँ।
यह ध्वनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमहिं लाज अरु हमहूँ।
हम तो आजु बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसो कियो लह्यो फल तैसो हम ही तोष न आयो ।
अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वर की नाईं ।
सूरस्याम युवतिन सों कहि कहि सब अपराध छमाहीं ।

राग सूही बिलावल (२५०)

यह युवतिन को धर्म न होई ।
धृग सो नारि पुरुष जो त्यागै,
धृग सो पति जो त्यागै जेई ।
पति को धर्म रहै प्रतिपालै,
युवती सेवा ही को धर्म ।
युवती सेवा तऊ न त्यागै,
जो पति कोटि करै अपकर्म ।
बन में रैनि बास नहिं कीजै,
देख्यो बन वृन्दाबन आई ।
विविध सुमन शीतल जमुना जल,
त्रिविध समीर परसि सुखदाई ।
घर ही में तुम धर्म सदा ही,
सुत पति दुखित होत तुम जाहु ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरस्याम यह कहि परबोधत,
सेवा करहु जाइ घर नाहु।

राग पीलू (२५१)

जग में पतिब्रत सम नहिं आन।
नारि हेतु कोउ धर्म न दूजो जग में यासु समान।
अनसूया सीता सावित्री, इनके चरित प्रमान।
पति-देवता तीय जग धन धन गावत वेद पुरान।
धन्य देस कुल जहँ निवसत हैं नारी सती सुजान।
धन्य समय जब जन्म लेत ये धन्य ब्याह अस्थान।
सब समर्थ पतिबरता नारी इन सम और न आन।
याही ते स्वर्गहु में इनको करत सबै गुन गान।

राग जैतश्री (२५२)

निठुर बचन जिनि बोलहु स्याम।
आस निरास करौ जिनि हमरी व्याकुल वचन कहती है वाम
अंतर कपट दूरि करि डारौ हम तनु कृपा निहारो
कृपा सिन्धु तुम को सब गावत अपनो नाम सँभारो
हम को शरण और नहिं सूझै कापै हम अब जाहिं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरदास प्रभु निज दासिन की चूक कहा पछिताहिं

(२५३)

आजु बन नीको रास बनायो।
पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट मोहन बेनु बजायो।
कल कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि खग मृग सुख पायो।
जुवतिनु मंडल मध्य स्याम घन सारँग राग जमायो।
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस-सिंधु बढ़ायो।
बिबिध बिसद बृषभानु नंदिनी अंग सुगंध दिखायो।
अभिनयनिपुन लटकि लटलोचन भृकुटि अनंग नचायो।
तातायेई तायेई धरि नवगति पति ब्रजराज रिझायो।
सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुख बारिद बरखायो।
परिरंभन चुंबन आलिंगन उचित जुवति जन पायो।
बरखत कुसुम मुदित नभ नायक इन्द्र निसान बजायो।
"हित हरिबंस" रसिक राधापति जस बितान जग छायो।

(२५४)

रास रस गोबिन्द करत बिहार।
सूरसुता के पुलिन रम्य महँ फूले कुंद मँदार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्‌भुत सतदल विकसित कोमल मुकुलित कुमुद कल्हार।
मलय पवन वह सारद पूरन चन्द मधुप झंकार।
सुघर राय संगीत कलानिधि मोहन नंद कुमार।
ब्रज भामिनि संग प्रमुदित नाचत तन चरचित घनसार।
उभय स्वरूप सुभगता सींवां कोककला सुख सार।
कृष्णदास स्वामी गिरिधर पिय पहिरे रस मैं हार।

राग कवित (२५५)

मंडल रास विलास महारस मंडल श्रीवृषभानु दुलारी।
पंडित कोक संगीत भरी गुन कोटिक राजत गोप कुमारी।
प्रीतम के भुज दंड में सोभित संगमें अंग अनंगन वारी।
तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधव की बलिहारी।

राग देश गंधार (२५६)

दोउ राजत स्यामा स्याम।
ब्रज जुवती मंडली बिराजत देखति सुरगन बाम।
धन्य धन्य बृंदाबन को सुख सुरपुर कौने काम।
धनि बृषभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम।
इनको दासी सरिहै है धन्य शरद की याम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैसेहु सूर जनम ब्रज पावै यह सुख नाहिं लिहुं धाम।

राग देस (२५८)

लाल को नचन सिखावत प्यारी।
वृन्दाबन में रास रच्यो है सरद रैनि उजियारी।
मान गुमान लकुट लिये ठाढी डरपत कुंज बिहारी।
थेई थेई करत लाल मन मोहन उरप तुरप गति न्यारी।
कोऊ मृदंग झांझ कोऊ बीना बजावत बिहँसत ग्वारी।
छबि सों गावत एडी नचावत रोम रोम बलिहारी।
देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज सोच बिचारी।
व्यास स्वामिनी सों छबि निरखत रीझ देत करतारी।

राग विहागरो (२५८)

तब हरि भए अंतर्धान।
जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन।
अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाइ।
कंठ भुज गहि रही यह कहि लेहु जबहि चढाइ।
गए संग बिसारि रिस में बिरस कीन्हों बाल।
सूर प्रभु दूरि चारित देखत तुरत भई बेहाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग बिहागरो (२५९)

ब्याकुल भईं घोष कुमारी।
स्याम तजि सँग ते कहाँ गये यह कहति ब्रजनारि।
दशौ दिशि नभ द्रुम न देखति चकित भईं बेहाल।
राधिका नहिं तहाँ देखी कह्यो वाके ख्याल।
कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज ले गई स्याम।
सूर प्रभु सँग मही देखो करे ऐसे काम।

राग बिलावल (२६०)

जो देखे द्रुम के तरे मुरछी सुकुमारी।
चकित भईं सब सुन्दरी यह तौ राधा प्यारी।
याहीं को खोजति सबै यह रही कहाँ री।
धाइ परी सब सुन्दरी जो जहाँ तहाँ री।
तनकी तनिकहु सुधि नहीं ब्याकुल भईं बाला।
यह तौ अति बेहाल है कहाँ गये गोपाला।
बार बार बूझति सबै नाहिं बोलति बानी।
सूरस्याम काहे तजि कहि सब पछितानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग विहागरो (२६१)

मैं अपने मन गर्व बढ़ायो ।
इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो ।
यह बाणी सुनि हँसे कंठ भरि भुजानि उछंगि लई ।
तब मैं कह्यो कौन है मोसी अन्तर जानि लई ।
कहाँ गए गिरिधर मोको तजि ह्यां कैसे मैं आई ।
सूरस्याम अन्तर भये मोते अपनी चूक सुनाई ।

(२६२)

अहो अहो बनके रूख कहुं देख्यौ पिय प्यारो ।
मेरो हाथ छुड़ाइ कहौ वह कितै सिधारो ।
अहो कदम्ब अहो अंब-निंब अहो वकुल तमाला ।
तुम देख्यौ कहुं मन मोहन सुन्दर नन्दलाला ।
अहो कुंज बनलता विरुध तृन पूछत तोसों ।
तुम देखे कहुं स्याम मनोहर कहहु न मोसों ।
अहो जमुना अहो खग मृग अहो गोवरधन गिरि ।
तुम देखे कहुं प्राण पियारे मन मोहन हरि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग शूही (२६३)

अन्तर ते हरि प्रगट भए ।
रहत प्रेम के वश्य कन्हाई जुवतिनको मिलि हर्ष दए।
वैसेहि सुख सबको फिरि दीन्हो उहै भाव सब मान लियो।
वह जानति हरिसंग तबहि ते उहै बुद्धि सब उहै हियो।
उहै रास मंडल सब जानति विच गोपीविच स्याम धनी।
सूरस्याम स्यामा माधि नायक उहै परस्पर प्रीति बनी।

राग गुंड मलार (२६४)

रैनि रस रास सुख करत बीती ।
भोर भए गए पावन जमुना के सलिल,
न्हात सुख करत अति बढ़ी प्रीति ।
एक इक मिलति हँसि एक हरि संग रसि,
एक जल मध्य इक तीर ठाढ़ी ।
एक इक डरति एक इक भरिकै चलति,
एक सुख लरति अति नेह बाढ़ी।
काहु नहीं डरति जल थलहु क्रीड़ा करति,
हरति मन निडरि ज्यों कंत नारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरप्रभु स्याम स्यामा संग गोपिका,
मिटी तनुसाध भई मगन भारी।

होरी-खेलन-लीला

(२६५)

माघ बितीत भए रुत फागुन, आइ गई सब खेलत होरी
गावत गीत बजावत ताल, कहै मुख ते भरूआ मिल जोरी
डारत हैं अलता बनिता, छटका संग मारत बैस न थोरी
खेलत स्याम धमार अनूप, महा मिलि सुंदर सांवल गोरी

राग जंगला (२६६)

पिया प्यारी दोउ खेलत होरी।
नँदनँदन ब्रज राज सांवरो श्री बृषभानु किशोरी।
परमानंद प्रेम रस भीने अँबीर लिये भर झोरी।
करत मन में चित चोरी।
भुजभर अंक सकुच तज गुरु जन विचरत हैं मिल जोरी
छुटी अलकां उरझीं कुंडल सों बेसर पीत फस्योरी।
चलो सुझावो गोरी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर कंकण कंचन पिचकारी केसर पर लै दौरी।
छिरकत फिरत हुलस हिय हर्षित निरखत हंस मुख मोरी।
चलो क्यों होइयो बौरी।
धनि गोकुल धनि धनि श्रीबृन्दावन जहं यह फाग रच्योरी।
श्री रस रंग रीझ रहे ब्रज पर वारों वैकुंठ करोरी।
मुक्ति काशी जहँ थोरी।

राग जंगला (२६७)

या ब्रज में कैसी धूम मचाई।
इतते आई कुंवरि राधिका उतते कुंवर कन्हाई।
खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छबि बरनि न जाई।
घर घर बजत बधाई।
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई।
उडत गुलाल लाल भए बादर केसर कीच मचाई।
मनो मघवा झर लाई।
राधे सैन दई सब सखियन यूथ यूथ मिल धाई।
पकरो री पकरो स्याम सुंदर को अब यह जान न पाई।
करो अपने मन भाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छीन लियो मुख मुरली पीतांबर शिर पर चुनरी उढ़ाई ।
बेंदी भाल नयन में काजर नक बेसर पहराई ।
मनो नई नारि बनाई ।
कहां गए तेरे पिता नन्द जी कहां जसोमति माई ।
कहां गए तेरे सखा संग के कहां गए बल भाई ।
तुम्हे अब लेत छुडाई ।
धनि गोकुल धनि धनि श्रीबृन्दावन धनि जमुना जदुराई ।
राधा कृष्ण जुगल जोरी पर नंददास बलि जाई ।
प्रीति उर रही न समाई ।

मथुरा गमन-लीला

राग रामकली (२६८)

नंद सुत सहज बुलाइ पठाऊँ ।
स्याम राम अति सुंदर कहियत देखन काज मंगाऊ ।
जैहै कौन प्रेम करि लावै भेद न जानै कोइ ।
महर महरि सों हित करि ल्यावै महा चतुर जो होइ ।
इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज ।
सूर चलो मन सोच बढायो कौन है ऐसो काज ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग धनाश्री (२६९)

हरि की प्रीति उर माहिं करकै ।
आय अक्रूर लै चले स्याम को हित नाहीं कोउ हरिकै ।
कंचन को रथ आगे कीनो हरिहि चढाए वरकै ।
सूरदास प्रभु सुख के दाता गोकुल चले उजरकै ।

राग सारंग (२७०)

मेरे कमल नयन प्रान ते प्यारे ।
इन को कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण कोऊ जन वारे ।
जसुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करि पारे ।
ए कहा जानहिं सभाराजकी ए गुरुजन विप्रौ न जुहारे ।
मथुरा असुर समूह बसत हैं कर कृपाण यधा हथियारे ।
सूरदास स्वामी ए लरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ।

राग सोरठ (२७१)

जसुमति बार बार यह भाखै ।
है कोऊ ब्रज में हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै ।
कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलाए ।
सुफलक सुत मेरे प्राण हरन को काल रूप हो आए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरु यह गोधन कंस लेइ सब मोहिं बंदी लै मेलै।
इतनो मांगत कमल नयन मेरी आंखिन आगे खेलै।
को करकमल मथानी गहि हैं को माखन दधि खैहै।
बहुरो इन्द्र बरस है ब्रजपर को गिरि नख पर लैहै।
बासर रैनि विलोकों जीयों संग लाग हुलराऊं।
हरि बिछुरत जो रहौं कर्म वश तो किहि कंठ लगाऊं।
टेर टेर धर परत जसोदा अधर बदन बिलखानी।
सूर सो दशा कहां लग बरनों दुखित नंद की रानी।

राग सोरठा (२७२)

मोहन इतनो मोहि चित धरिए।
जननी दुखित जानकै कबहूं मथुरा गमन न करिए।
यह अक्रूर क्रूर कृत रचिकै तुमहिं लेन है आयो।
तिरछे भए कर्म कृत पहिले बिधि यह ठाट बनायो।
बार बार जननी कहि मोसों माखन मांगत जौन।
सूर तिनहिं लेबे को आए करिहौ सूनो भौन।

राग सोरठ (२७३)

कन्हैया मेरी छोह बिसारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्यों बलराम कहत तू नाहीं मै तुम्हरी महतारी।
तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी।
ज्यों सावन की बेलि प्रफुल्लित फूलति हैं दिन चारी।
हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहूं तुमहिते जात।
सूर हृदय धीरज अब धारो काहे को बिलखात।

राग रामकली (२७४)

अनलते विरह अग्नि अति ताती।
माधो चलन कहत मधुवन को सुनै तपै अति छाती।
न्याइहि नागरि नारि विरहवस जरत दिया ज्यों बाती।
जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती।
ढारति नीर नयन भरि-भरि सब व्याकुलता मदमाती।
सूर व्यथा सोई पै जानै स्याम सुभग रंग राती।

राग विहागरो (२७५)

चलन चलन स्याम कहत कोउ लेन आयो।
नंदभवन भनक सुनी कंस कहि पठायो।
ब्रज की नारि गृह बिसारि व्याकुल उठि धाईं।
समाचार बूझन को आतुर ह्वै आईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रीति जानि हेतु मानि बिलखि बदन ठाढी।
मानहु वै अति विचित्र चित्र लिखित काढी।
ऐसी गति ठौर ठौर कहत न बनि आवै।
सूरस्याम बिछुरे दुख विरह कहि भावै।

राग सारंग (२७६)

चलतहु फेरि न चितए लाल।
रथ बैठे दूर ते देखे अंबुज नैन विशाल।
मीड़त हाथ सकल गोकुल जन बिरहबिकल बेहाल।
लोचन पूरि रहीं जल महियां दृष्टि परी जो काल।
सूरदास प्रभु फिरिकै चितयो अंबुज नैन रसाल।

राग सोरठ (२७७)

उलट पग कैसे दीने नंद।
छांडे कहां उभय सुत मोहन धिग जीवन मतिमंद।
के तुम धन जोबन मद माते कै तुम छूटे बंद।
सुफलक सुत बैरी भयो मोको लै गयो आनंद कंद।
राम कृष्ण बिन कैसे जीवों कठिन प्रीति के फंद।
सूरदास अब भई अभागिन तुम बिन गोकुल चंद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२७८)

अरि मोहिं भवन भयानक लागै माई स्याम बिना।
देखहिं जाहि काहि लोचन भरि नंद महिर के अङ्गना।
ले जु गये अक्रूर ताहि को ब्रज के प्राण धना।
कौन सहाय करे घर अपने मेटे विघन घना।
काहि उठाइ गोद करि लीजै करि करि मन मगना।
सूरदास मोहन दरसन बिन सुख संपति सपना।

गोपी विरह-लीला

(२७६)

नैन सिलोने स्याम, हरि कब आवहिंगे।
वे जो देखत राते राते फूलन फूले डार।
हरि बिन फूल झरीसी लागत झरि झरि परत अँगार।
फूल बिनन न जाऊं सखीरी हरि बिन कैसे फूल।
सुनरी सखी मोहि राम दोहाई लागत फूल त्रिसूल।
जबते पनिघट जाऊं सखीरी वा जमुना के तीर।
भरि भरि जमुना उमडि चलत है इन नैनन के नीर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन नैनन के नीर सखीरी सेज भई घर नाव ।
चाहत हौं ताही पै चढ़िकै हरि जी के ढिग जाव ।
लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधर पर आय ।
सूरदास प्रभु कुंज बिहारी मिलत नहीं क्यों आय ।

(२८०)

वृषभानु सुता अतिप्रेम छकी मनमैं जदुबीरको ध्यानलगैकै
रोवत भी अतिही दुख सों संग काजर नीर गिरयो ढर कै कै
ता छबिको जस उच्च महाकवि, स्याम कह्यो मुखते उमगैकै
चंदही को जु कलंक हुतो मनो नैनानि पैड चलयो निचुरैकै

(२८१)

प्यारे क्यों सुधि हाय बिसारी ।
दीन भई बिडरी हम डोलत हा हा हाय तुमारी ।
कबहुं कियो आदर जा तनको तुम निज हाथ पियारे ।
ताही की अब दीन दसा यह कैसे लखत दुलारे ।
आदरके धन सम जातन कहं निज अकंम तुम धारयौ ।
ताही कहँ अब परयौ धूर में कैसे नाथ निहारयौ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२८२)

आई ऋतु पावस न आये प्रान प्यारे यातें ।
मेघन बरज आली गरजन लावैं ना ।
दादुर हटकि बाकि बकि के न फोरैं कान,
पिकन पटाकि मोहिं सबद सुनावैं ना ।
बिरह ब्यथा तें हौं तो ब्याकुल भई हौं देव,
चपला चमाकि चित चिनगी जगावैं ना ।
चातक न गावैं मोर सोर न मचावैं घन,
घुमड़ि न छावैं जौलौं लाल घर आवैं ना ।

राग मलार (२८३)

अब वर्षा को आगम आयो ।
ऐसे निठुर भयो नंदनंदन संदेसो न पठायो ।
बादर घोर उठे चहुं दिसिते जलधर गरजि सुनायो ।
एकै शूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं ब्रज छायो ।
दादुर मोर पपीहा बोलत कोकिल शब्द सुनायो ।
सूरदास के प्रभु सों कहियो नैनन है झर लायो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२८४)

व्याकुल काम सतावत मोहिं, पिया बिन नीक न लागत कोई
प्रीतम सों सपने भई भेंट, भली बिधि सों लपटाय के सोई
नैन उघारि पसारि के देखौं, चौंकि परी कितहूं नहीं कोई
ऐरी सखी दुख कासों कहूं, मुसकाय हँसी,हँस के फिर रोई

राग केदारा (२८५)

यह ससि सीतल काहेते कहियत ।
मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत ।
बिरहिन अरु कमलनि त्रासत कहुँ अपकारी रथ नहिंयत !
सूरदास प्रभु मधुबन गौने तो इतनो दुख सहियत ।

(२८६)

ऐरे मतिमंद चंद धिग है आनंद तेरो,
जो पै बिरहिनी जरि जात तेरे ताप ते ।
तू तो दोषाकर दूजे धरे है कलंक उर,
तीसरे कपाली संग देखौ सिर छाप ते ।
कहै मतिराम हाल जाहिर जहान तेरो,
वारुनी के बासी भासी रवि के प्रताप ते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बांध्यो गयो मथ्यो गयो पियो गयो खारो भयो,
बापुरो समुद्र तो कपूत ही के पाप ते।

राग सारंग (२८७)

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।
प्रीति पतंग करी दीपक सों आपै प्राण दह्यो।
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों संपति हाथ गह्यो।
सारँग प्रीति करी जो नाद सों सन्मुख बान सह्यो।
हम जो प्रीति करी माधो सों चलत न कछू कह्यो।
सूरदास प्रभु बिन दुख दूनो नैनन नीर बह्यो।

राग जिल्हा (२८८)

चले गये दिलके दामनगीर।
जब सुधि आवे प्यारे दरस की उठत कलेजे पीर।
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर स्याम शरीर।
आपन जाय द्वारका छाए खारी नद के तीर।
ब्रज गोपिन को प्रेम बिसारयो ऐसे भए बेपीर।
बृंदाबन बंसीबट त्याग्यो निरमल जमुना नीर।
सूरस्याम ललिता उठ बोली आख़िर जाति अहीर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग इमन (२८९)

नाथ अनाथन की सुधि लीजै।
गोपी गाइ ग्वाल गो सुत सब,
दीन मलीन दिनहि दिन छीजै।
नैन सजल धारा बाढ़ी अति,
बूड़त ब्रज किन कर गहि लीजै।
इतनी बिनती सुनहु हमारी,
वारकहू पतियाँ लिखि दीजै।
चरण कमल दरसन नव नौका,
करुना सिंधु जगत जश लीजै।
सूरदास प्रभु आस मिलन की,
एक बार आवन ब्रज कीजै।

राग सोरठ (२९०)

मनौं हौं ऐसे ही मरि जैहौं।
इहि आंगन गोपाल लाल को कबहुँक कनिया लैहौं।
कब वह मुख बहुरो देखौंगी कब वैसो सचु पैहौं।
कब मोपै माखन मांगैगो कब रोटी धरि दैहौं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलन आस तनु प्राण रहत हैं दिन दस मारग चैहौं ।
जो न सूर कान्ह आइ हैं तौ जाइ जमुन धँसि लैहौं ।

राग रामकली (२६१)

संदेसो देवकी सों कहियो ।
हौं तौ धाइ तुम्हारे सुत की मया करत नित रहियो ।
जदपि टेव तुम जानत उन की तऊ मोहिं कहि आवै ।
प्रातहिं उठत तुम्हारे कान्ह को माखन रोटी भावै ।
तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भगि जावै ।
जोइ २ मांगत सोइ २ देती क्रम २ करि २ न्हावै ।
सूर पथिक सुनि मोहि रैनिदिन बढ़्यो रहत उर सोच ।
मेरो अलक लडैतो मोहन ह्वै है करत सकोच ।

उद्धव-लीला

राग धनाश्री (२६२)

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ।
हंससुता की सुन्दर कलरव अरु तरुवन की छाहीं ।
वे सुरभी वे वच्छ दोहनी खिरक दुहावन जाहीं ।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल नाचत गह २ बाहीं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह मथुरा कंचन की नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं ।
जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिया उमगत सुध नाहीं ।
अनगिन भांति करी बहु लीला जसुदानंद निबाहीं ।
सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ।

राग बिहाग (२६३)

ऊधो ब्रज को गमन करो ।
मेरे बिना बिरहनी गोपिका तिनके दुःख हरो ।
जोगज्ञान परबोधि सबन को ज्यों सुख पावें नार ।
पूर्णब्रह्म अलख परचो करि मोहि बिसारें डार ।
सखा प्रवीण हमारे हो तुम याते थापि महंत ।
सूरस्याम कारण यह पठवत है आवोगे संत ।

राग धनाश्री (२६४)

स्याम कर पत्री लिखी बनाइ ।
नंद बाबा सों बिनती करि कर जोरि यशोदा माइ ।
गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ ।
और ब्रजनर-नारि जे हैं तिनहि प्रीति जनाइ ।
गोपिकनि लिखि जोग पठयो भाउ जान न जाइ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरदास मन और यह कहि प्रेम लेत दृड़ाइ।

राग बिलावल (२९५)

ऊधो इतनो कहियो जाई।
हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जनि अकुलाई।
याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाई।
वह गुण हमको कहा बिसरि हैं बड़े किये पय प्याई।
और जु मिल्यो नंद बाबा सों तौ कहियो समुझाई।
तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरी गाई।
यद्यपि यहां अनेक भांति सुख तदपि रह्यो न जाई।
सूरदास देखौं ब्रज बासिन तबहिं हियो हरखाई।

(२९६)

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे ऊधो,
अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिये।
ब्रज की वह बाला जपैं मेरी जप माला बड़ी,
बिरह की ज्वाला तामें तन मन छीजिये।
मेरो विस्वास मेरी आस रस रास मेरे,
मिलवे की प्यास जान सावधास कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों,
सो पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये।

(२६७)

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं,
तैसोइ समाधि साध ध्यान धरवावोगी।
अलख अनाथ घट घट को निवास मोहिं,
जान अविनासी जोग जुगत जगावोगी।
प्राणाजाम आसन ध्यान धारना ते ब्रह्म,
को प्रकास रस रास दरसावोगी।
ऐसे चित लावोगी तो सुख में समावोगी,
मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी।

(२६८)

हे वृषभानु सुते ललिते,
मैंने कौन कियो अपराध तिहारो।
काढ़ दियो ब्रज मंडल ते,
अब औरहु दंड रह्यो कछु भारो।
अपुनो कर लेहु मोहिं यहि देहु,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुंज कुटी जमुना तट वारो ।
अपुनो कर जान दयाकी निधान,
भई सु भई अब बेगि संभारो ।

(२९९)

कौन विधि पावें यह कर्म्म बलवान उदय,
छाछ छछिया की ब्रज भामिनि को भात हैं।
मुक्तिहू पदार्थ सो दे चुके बकी को अब,
देहौं जननी को कहा याते पछितात हैं।
बिधि जो बनाई आहि कौन बिधि मेटें ताहिं,
ऐसो कर शोचत रहत दिन रात हैं ।
ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहियो समुझाय मैया,
जापै ऋण बाढै सो विदेश उठि जात है ।

(३००)

कहा कहौं कछु दिवस ते, जननी बिसरयों तोहिं ।
ता दिन ते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं ।

(३०१)

कह्यो कान्ह सुन जसुमति मैया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवहिंगे दिन चार पांच में हम हलधर दोउ भैया ।
मुरली वेत विषाण देखिये श्रृंगी वेर सबेरो ।
लै जनि जाइ चुराइ राधिका कछुक खिलौना मेरो ।
जा दिन ते तुमसे बिछुरे हम कोऊ न कहत कन्हैया ।
भोरहिं नाहिं कलेऊ कीनो साँझ न पय पीयो न धैया ।
कहत न बन्यो संदेसो मोपै जननि जितो दुख पायो ।
अब हमसों वसुदेव देवकी कहत आपुनो जायो ।
कहिये कहा नंद बाबा सों बहुत निठुर मन कीनो ।
सूर हमहिं पहुंचाइ मधुपुरी बहुरो सोध न लीनो ।

(३०२)

ऊधो को उपदेस सुनो ब्रज नागरी ।
रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी ।
प्रेमधुजा रस रूपिनी उपजावनी सुख पुंज़ ।
सुन्दर स्याम बिलासिनी नव बृन्दावनकुंज ।
सुनो ब्रज नागरी ॥१॥

(३०३)

कहन स्याम संदेस एक मैं तुम पै लायो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहन समय संकेत कहूँ अवसर नाहिं पायो।
सोचत ही मन में रह्यो, कब पाऊँ वह ठाउं।
कहि संदेस नंदलाल को, बहुरि मधुपुरी जाउँ॥
सुनो ब्रज नागरी ॥ २ ॥

(३०४)

सुनत स्याम को नाम ग्राम गृह की सुधि भूलीं।
भरिं अनंद रस हृदय प्रेम वल्ली द्रुम फूलीं॥
पुलकि रोम सब अंग भये, भरि आये जल नैन।
कंठ रुके गद गद गिरा, बोले जात न बैन॥
अवस्था प्रेम की ॥ ३ ॥

(३०५)

सिंहासन बैठाय और परिकरमा दीन्हीं।
स्याम सखा तेहिं जानि और सेवा बहु कीन्हीं॥
बूझत सुधि नँदलाल की बिहँसत मुख ब्रजबाल।
नीके हैं बलिबीर जू बोलत बचन रसाल॥
सखा सुन स्याम के ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३०६)

कुसल स्याम अरु राम कुसल संगी सब उन के ।
जदुकुल सिगरे कुसल परम आनंद है उन के ।
बूझन ब्रज कुसलात को आयों तुम्हरे तीर ।
मिलि हैं थोड़े दिवस में जनि जिय होऊ अधीर ।
सुनो ब्रज नागरी ॥५॥

(३०७)

वै तुमतें नहिं दूरि ज्ञान की आँखिन देखौ ।
अखिल विस्व भरि पूरि ब्रह्म सब रूप बिसेखौ ।
लोह दारु पाषाण में जल थल माहिं आकास ।
सचर अचर बरतत सबै ज्योतिहि रूप प्रकास ।
सुनो ब्रज नागरी ॥६॥

कौन ब्रह्म की ज़ोति ज्ञान कासों कहो ऊधो ।
हमरे सुन्दर स्याम प्रेम को मारग सूधो ।
नैन बैन स्रुति नासिका मोहन रूप लखाय ।
सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम ठगोरी लाय ।
सखा सुन स्याम के ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३०९)

यह सब सगुण उपाधि रूप निर्गुण है उनको।
निरबिकार निरलेप लगत नहिं तीनों गुण को ॥
हाथ न पाय न नासिका, नैन बैन नहिं कान।
अच्युत ज्योति प्रकास ही सकल विस्व को प्रान॥
सुनो ब्रज नागरी ॥ ८ ॥

(३१०)

जो मुख नाहिंन हतो कहो किन माखन खायो।
पायन बिन गोसङ्ग, कहो बन बन को धायो ॥
आंखिन में अञ्जन दियो गोवर्द्धन लियो हाथ।
नंद-जसोदा पूत हैं कुँवर कान्ह ब्रज नाथ ॥
सखा सुन स्याम के ॥ ९ ॥

(३११)

जाहि कहत तुम कान्ह ताहि कोउ पिता न माता।
अखिल अण्ड ब्रह्मण्ड विस्व उनही में जाता ॥
लीला गुण अवतार है, धरि आए तन स्याम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोग जुगत ही पाइए पारब्रह्म पुरधाम ॥
सुनो ब्रज नागरी ॥१०॥

(३१२)

ताहि बतावो जोग जोग ऊधो तहँ जावौ।
प्रेम सहित हम पास स्याम सुंदर-गुण गावौ॥
नैन बैन मन प्रान में मोहन-गुण भरपूर।
प्रेम-पियूषै छोड़िकै कौन समेटै धूर॥
सखा सुन स्याम के ॥११॥

राग धनाश्री (३१३)

सुनहु गोपी हरि को संदेस।
करि समाधि अंतर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेस।
वह अविगति अबिनासी पूरण सब घट रह्यो समाइ।
निर्गुण ज्ञान बिनु मुक्ति नहीं है बेद पुराणन गाइ।
सगुणरूप तजि निर्गुण ध्यावो इक चित इक मन लाइ।
यह उपाव करि विरह तरी तुम मिलै ब्रह्म तब आइ।
दुसह संदेस सुनत माधो को गोपीजन बिलखानी।
सूर बिरह की कौन चलावै बूड़त मन बिन पानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग सारंग (३१४)

पाती मधुवन ते आई।
ऊधो हरि के परम सनेही ताके हाथ पठाई।
कोउ पूछत फिरि ऊधो को आपुन लिखी कन्हाई।
बहुरो दई फेरि ऊधो को तब उन बांचि सुनाई।
मन में ध्यान हमारो राखो सूरदास सुखदाई।

राग आसावरी (३१५)

ऊधो जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं।
ये तो मूंदन नैन कहत हैं हरि मूरति जा माहीं।
ऐसी कथा कपट की मधुकर हम तें सुनी न जाहीं।
स्रवन चीर अरु जटा बँधावहु ए दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अंगभस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं।
जोगी भ्रमत जेहि लगि भूले सो तो है अपुमाहीं।
सूरदास ते न्यारे न पल छिन ज्यों घट ते परछाहीं।

राग सारंग (३१६)

ऊधो मन न भये दस बीस।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक हुतो सो गयो स्याम संग को अवराधै इस ।
इन्द्री सिथिल भई केशो बिन ज्यों देही बिन सास ।
आसा लगी रहत तनु स्वासा जीजो कोटि बरीस ।
तुम तो सखा स्याम सुन्दर के सकल योग के ईस ।
सूरदास वा रस की महिमा जो पूंछै जगदीस ।

(३१७)

आतुर ह्वै बृषभानु सुता संग ऊधव के सुकह्यो इमि बैना ।
भूखन भोजन धाम जितो हम को जदुबीर बिना सु रुचै ना ।
यों कहि स्याम बियोग बिखै बसि गे कबिने जस यों उचरैना ।
रोवत भी अति ही दुख सों जुहुते मनो बालके कंजन नैना ।

(३१८)

ऊधो कान्ह दी गल्ल सुणा सानूं,
कान्हूं चिणग चुआतीआं लाईआं नी ।
मसां मसां सन आठरन घा लग्गे,
नवीआं नशतरां आण चलाईआं नी ।
असीं कालजा घुट्ट के बहि गईआं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुड़ के सुत्तीआं कलां जगाईआं नी ।
तेरे ज्ञान दी पुड़ी नहीं काट करदी,
एन्हां पीड़ां दीआं होर दवाईआं नी ।

आप आउरा दी नहीं जे नीत उसदी,
कान्हूं गोंगलू तों मिट्टी झाड़दा है ।
जेकर अग्ग नूं नहीं बुझाउरा जोग्गा,
पा पा तेल किउं सड़िआं नूं साड़दा है ।

उस नूं आख, अक्खीं भर के देख जाए,
सानूं कूंज दे वांग कुरलांदीआं नूं ।
वाट्टां वेंहिदीआं औसीआं पांदीआं नूं,
तारे गिरा गिरा के रात्तां लंघांदीआं नूं ।
सांगां सहिंदीआं जिंद लुड़छांदीआं नूं,
घुल २ हिजर विच मुक्कदीआं जांदीआं नूं ।
फुट्टगिआं नसीबां ते भूरदीआं नूं,
घरों कड्ढ बरकत पछोतांदीआं नूं ।

तूं तां मथरा दीआं कुंजीआं सांभ बैठों,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐद्धर गोकल नूं लग्ग गए जंदरे वे।
जाके घरां नूं मुड़न दी जाच भुल्ल गई,
निकल गिश्रों केहड़े वार चंदरे वे।

गल्लां नाल की पिश्रा परचाउंदा हैं,
उस दे प्रेम नूं असां परता लिश्रा है।
मारे कुब्जां दी हिक्के ज्ञान-गोली,
बूहे वड़दिश्रां जिन्हें भरमालिश्रा है।
ऊधो कोरड़ू मोठ विच मोह पाके,
असां आपणा आप गुआ लिआ है।
दुखां पी लिआ गमां ने खा लिआ है,
चंनण देही नूं रोग जिहा ला लिआ है।

साडी झोली विच खैर इह नहीं पैणा,
एन्हां तिलां दा तेल मैं टोह लिआ है।
हच्छा सुक्ख, जित्थे जाए सुखी वस्से,
साडे दिलों वी किसे ने खोह लिआ है।

आखीं, काच्चिआ सच्च नूं लाज लाईओ,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुखन पालनो वी बस्स रहिगिश्रों वे।
काले भौर दी बाण ना गई तेरी,
जित्थे फुल्ल डिट्ठा उत्थे बहि गिश्रों वे।
सानूं ज्ञान दे खूहां विच दएँ धक्के,
श्राप मालण दे रोहड़ विच वहि गिश्रों वे।
डंगर चारदा वड़ गिश्रों शीश महिलीं,
घोट घोट गल्लां करन डहि गिश्रों वे।

इच्छा, कंस दीश्रां गदीश्रां सांभीश्रां नी,
साडे नाल वी श्रंग कुझ पाल छडदों।
कोई महिलां दीश्रां लूहलां नहीं लाह खड़दा,
दो दिन सानूं वी धौलर विखाल छडदों।

श्राख प्रेम इह पिछांह नहीं मुड़न जोग्गा,
बेड़े सिदक दे ठिल्हदे रहिणगे वे।
एन्हां नहवां तों मास नहीं वक्ख होणा,
जद तक चंद सूरज चढ़दा लहिणगे वे।
एस इश्क दी छिड़ेगी वार माहीश्रा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जित्थे चार बन्दे रल के बहिणगे वे ।
कड़ीआं कुब्जां दी किसे नहीं वात लैणी,
राधा आख पिच्छों कृष्ण कहिणगे वे ।
त्रै सौ सठ्ठ जुड़ पएगी नार तैनूं,
जम जम होणा पए दूणे इकबाल तेरे ।
परलो तीक पर मंदरां विच्च "चात्रिक" ।
एसे बन्दी ने वस्सना नाल तेरे ॥

(३१६)

जो मथुरा हरि जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनी रह सोऊ
ऊधो बड़ो सुख यहहू हमैं और नीक रहैं वह मूरत दोऊ
हमरे ही तो नामकी छाप पड़ी और अंतर बीच कहैं नहीं कोऊ
राधा कृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरी कृष्ण कहै नहिं कोऊ

(३२०)

भेज्यो तुम जोग हम लियो धर सीस पर,
बड़ो ही परेखो चेरी कौन की कहावैंगी ।
आंसुवन माला लेके जपैं नित राम नाम,
लोचन के खप्पर लेके भिच्छया हू को धावैंगी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहरेंगी कंथा गल डारेंगी सेली माल,
मरघट पै बैठ के मसानहू जगावेंगी।
ऊधोजी एती बात हरिजीसों कहियो जाय,
एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी।

(३२१)

योगी तजे जगत हम जगत योग दोऊ तजे।
योगी लावें छार हम छारहूके मट हैं।
योगी बेधें कान हम हीये अरु प्रान बेधें,
योगी कहें नाथ हम नाथ नाथ रट हैं।
योगी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे,
म्हारे शिर केश बहु योगी शिर जट हैं।
जान के अजान कहा भयो अरे ऊधो,
योग की युगत सों वियोगी कहा घट हैं।

(३२२)

स्याम तन स्याम मन स्याम है हमारो धन,
आठो याम ऊधो हमें स्याम ही सों काम है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्याम हीये स्याम जीये स्याम बिन नाहिं तीये,
आंधे की सी लाकरी, अधार स्याम नाम है।
स्याम गति स्याम मति स्याम ही है प्राण पाति,
स्याम सुख दाई सों भलाई सोभा धाम है।
ऊधो तुम भये बौरे पाती लै के आए दौरे,
योग कहां राखें यहां रोम रोम स्याम है।

राग नट (३२३)

ऊधो धन तुम्हरे बिवहार।
धन वह ठाकुर धन तुम सेवक धन धन परसन हार।
आम को काट बबूर लगावत चंदन झोंकत भार।
शाह को पकर चोर को छोड़त चुगलन को अधिकार।
हम को योग भोग कुब्जा को ऐसी समझ तिहार।
हंस मयूर शुका पिक त्यागत कागन को इतबार।
तुम हरि पढ़े चातुरी विद्या निपट कपट चट सार।
सूरस्याम कैसे निबहेगी अंध धुंध सरकार।

(३२४)

एक कहै हँसि ऊधवजू,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रज की बनिता तजि चन्द्रप्रभासी ।
जाय कियो कह "तोष" प्रभू,
एक प्रान लियो लहि कंस की दासी ।
जो हुते कान्ह प्रबीन महा,
सो इहा मथुरा में कहा मति नासी ।
जीव नहिं उबियात जबै,
ढिग पैठति है कुब्जा कछु आसी ।

राग बिहाग (३२५)

मधुकर स्याम हमारे चोर ।
मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर ।
पकरे हुते आन डर अंतर प्रेम प्रीति के जोर ।
गये छुडाय तोर सब बन्धन दै गये हँसन अकोर ।
उचक परों जागत निसि बीते तारे गिनत भइ भोर ।
सूरदास प्रभु हत मन मेरो सरबस लै गयो नंद किशोर ।

राग देस (३२६)

उर में माखन चोर गडे ।
अब कैसे निकसत हैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जदपि अहीर जसोदा नंदन तदपि न जात छडे ।
वहां कहत जदुवंश महाकुल हमहिं न लगत बडे ।
को वसुदेव देवकी है को जो माने सो बुझे ।
सूरस्याम सुंदर बिन देखे और न कोऊ सुझे ।

(३२७)

ऊधो अखियाँ अति अनुरागी।
इक टक मग जोवति अरु रोवति भूलेहु पलक न लागी ।
बिनु पावस पावस रितु आई देखत है विदमान ।
अब धौं कहा कियो चाहत है छाँडहु निरगुन ज्ञान ।
सुनु प्रिय सखा स्याम सुन्दर के जानत सकल सुभाइ ।
जैसे मिलैं सूर के स्वामी तैसी करहु उपाइ ।

राग भैरव (३२८)

अखियाँ हरि दरसन की प्यासी ।
देख्यो चहति कमल नयननिकों निसिदिन रहति उदासी।
काहू के मन की को जानत, लोगन के मन हांसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन लैहौं करवट कासी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३२९)

खंजन नैन रूप रस माते।
अति से चारू चपल अनियारे पलपिंजड़ा न समाते।
चल २ जात निकट स्रवनन के उल्ट पल्ट ताटंक फंदाते।
सूरदास अंजन गुन अटके नातर अब उड़ि जाते।

राग मल्हार (३३०)

निसिदिन बरसत नयन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हम पर जब ते स्याम सिधारे।
अंजन थिर न रहत अँखियन में कर कपोल भये कारे।
कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे।
आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे।
सूरदास अब बूढ़त है ब्रज काहे न लेत उबारे।

राग मल्हार (३३१)

प्रीति तौ मरनऊ न विचारै।
प्रीति पतंग जोति पावक ज्यों जरत न आपु संभारै।
प्रीति कुरंग नाद स्वर मोहित बधिक निकट ह्वै मारै।
प्रीति परेवा उड़त गगन ते उड़त न आपु संभारै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सावन मास पपीहा बोलत पिउ पिउ करि जु पुकारै ।
सूरदास प्रभु दरसन कारन ऐसी भांति बिचारै ।

(३३२)

ऊधो कारे सबै बुरे ।
कारों की परतीति न करिये, विष के बुरे छुरे ।
कारो अंजन देत द्रगन में, तीखी सान धरे ।
नाग नाथ हरि बाहिर आये, फन २ निरत करे ।
कोयल के सुत कागा पाले, अपनोहि ज्ञान धरे ।
पंख लगे जब गये सु उडिवै, अपने काज सरे ।
सूरस्याम कारे मतवारे, कारे ते काग डरे ।

(३३३)

कोऊ कहै री विस्व माँझ जेते हैं कारे ।
कपट कुटिल की कोटि परम मानुष मसिहारे ।
एक स्याम तन परसिके जरत आज लौं अंग ।
ता पाछे यह मधुप हू लायो जोग भुजंग ।
कहाँ इन को दया ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३३४)

कोऊ कहै री मधुप भेस उन ही को धारचौ ।
स्याम पीत गुंजार बैन किंकिणि झनकारचौ ।
बापुर गोरस चोरिकै फिर आयो यहि देस ।
इन को जनि मानहु कोऊ कपटी इनको भेस ।
चोरि जनि जाय कछु ॥१३॥

(३३५)

कोऊ कहै रे मधुप कहैं अनुरागी तुमको ।
कौने गुण धौं जानि एहु अचरज है हमको ।
कारो तन अति पातकी मुख पियरौ जगनिन्द ।
गुन अवगुन सब आपनो आपुहि जानि अलिन्द ।
देखि लै आरसी ॥ १४ ॥

(३३६)

कोऊ कहै रे मधुप कहा तू रस को जानै ।
बहुत कुसुम पै बैठि सबै आपन सम मानै ।
आपन सम हमको कियो चाहत है मतिमन्द ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुबिधा ज्ञान उपजाय कै दुखित प्रेम आनंद ।
कपट के छन्द सों ॥ १५ ॥

(३३७)

कोऊ कहै रे मधुप कहा मोहन-गुन गावै ।
हृदय कपट सों परम प्रेम नाहिन छबि पावै ।
जानति हौ सब भाँति कै सरबस लयो चुराय।
यह बौरी ब्रजबासिनी को जो तुम्हैं पतियाय।
लहै हम जानिकै ॥ १६ ॥

(३३८)

कोऊ कहै रे मधुप कौन कहै तुम्हैं मधुकारी ।
लिये फिरत मुख जोग गाँठ काटत बेकारी ॥
रुधिर-पान कियो बहुत कै अरुन अधर रँगरात ।
अब ब्रज में आए कहा करन कौन को घात ।
जात कि न पातकी ॥ १७ ॥

(३३९)

कोऊ कहै रे मधुप प्रेम षट पद पसु देख्यो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब लौं यहि ब्रजदेस माहिं कोउ नाहिं बिसेख्यो।
द्वै सिंह आनन उपर रे कारो पीरो गात।
खल अमृत सम मानहीं अमृत देखि डरात।
बादि यह रसिकता ॥ १८ ॥

(३४०)

कोऊ कहै रे मधुप ज्ञान उलटो लै आयो।
मुक्ति परे जे फेरि तिन्हें पुनि कर्म बतायो॥
वेद उपनिषद सार जे मोहन गुन गहि लेत।
तिनके आतम सुद्ध करि फिरि फिरि सन्था देत॥
जोग चटसार में॥ १९ ॥

(३४१)

कोऊ कहै रे मधुप निगुन इन बहु करि जान्यो।
तर्क वितर्क नियुक्ति बहुत उनही यह आन्यो॥
पै इतनो नाहिं जानहीं, वस्तु बिना गुन नाहिं।
निर्गुन होहि अतीत के सगुन सकल जग माहिं॥
सखा सुन स्याम के ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३४२)

कोऊ कहै रे मधुप तुम्हैं लज्जा नहिं आवै ।
सखा तुम्हारो स्याम कूबरी नाथ कहावै ।
यह नीची पदवी हुती गोपीनाथ कहाय ।
अब यदुकुल पावन भयो दासी जूठन खाय ।
मरत कह बोल को ॥२१॥

(३४३)

कोऊ कहै अहो मधुप स्याम योगी तुम चेला ।
कुबजा तीरथ जाय कियो इन्द्रिन को मेला ।
मधुबन सुधि बिसराय कै आए गोकुल माहिं ।
इहाँ सबै प्रेमी बसैं तुमरो गाहक नाहिं ।
पधारो रावते ॥ २२ ॥

(३४४)

कोऊ कहै रे मधुप साधु मधुबन के ऐसे ।
और तहां के सिद्ध लोग है हैं धौं कैसे ।
औगुन गुन गहि लेत हैं गुन को डारत मेटि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोहन निर्गुन को गहै तुम साधन को भेंटि ॥
गाँठि को खोय कै ॥ २३ ॥

(३४५)

कोऊ कहै रे मधुप होहिं तुमसे जो संगी ।
क्यों न होय तन स्याम सकल बातन चौरंगी ।
गोकुल के जोरी कोउ पाई नाहिं तुमारि ।
मदन त्रिभङ्गी आपु ही करी त्रिभङ्गी नारि ।
रूप गुन सील की ॥ २४ ॥

राग मल्हार (३४६)

मधुकर इतनी कहियहु जाई ।
अति कृशगात भई ए तुम बिनु परम दुखारी गाई ।
जल समूह बरखति दोउ आँखें हूंकति लीने नाऊं ।
जहां जहां गो दोहन कीनो सूंघति सोइ ठाऊं ।

राग सारंग (३४७)

बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे ।
यह मथुरा काजर की कोठी जे आवें ते कारे ।
कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे तूर पँवारे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहां ज्ञान की कौन चलावे सूरस्याम गुण न्यारे।

राग रामकली (३४८)

ऊधो करमन की गति न्यारी।

सब नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी

उज्ज्वल पंख दिये बकुला को कोयल कित गुणकारी

सुंदर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी

मूर्ख मूर्ख राजे कीने पण्डित फिरत भिखारी

सूरस्याम मिलबे की आशा छिन छिन बीतत भारी

राग धनाश्री (३४९)

ऊधो हम आजु भई बड़ भागी।

जिन अँखियन तुम स्याम बिलोके ते अँखियाँ हम लागीं।

जैसे सुमन बास लै आवत पवन मधुप अनुरागी।

अति आनन्द होत है तैसे अंग अंग सुख रागी।

ज्यों दर्पण में दरसन देखत दृष्टि परम रुचि लागी।

तैसे सूर मिले हरि हम को विरह व्यथा तनु त्यागी।

राग देस (३५०)

नाथ अनाथन की सुधि लीजै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी बेगिहि दर्शन दीजै
नयनन जल भर आए हरि बिन ऊधोको पतियां लिख दीजै
सूरदास प्रभु आस मिलनकी अब की बेर हरि आवन कीजै

ठुमरी (३५१)

छतियां लेहु लगाय सजन अब मत तरसाओ रे।
तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयननसों बहे जलकी धारें।
बाढी है तन बिरह पीर सूरत दिखलाओ रे।
हरीचंद पिया गिरिवरधारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी।
अब जीया नहीं धरत धीर जल्दी उठ धाओ रे।

राग नट (३५२)

अब अति चकितवंत मन मेरो।
आयो हों निर्गुण उपदेसन भयो सगुण को चेरो।
मैं कछु ज्ञान कह्यो गीता को तुमहिन परहो नेरो।
अति अज्ञान जानिकै अपनो दूत भयो उन केरो।
निज जन जनि हरि इहाँ पठायो दीनो बोझ घनेरो।
सूर मधुप उठि चले मधुपुरी बोरि योग को बेरो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग सारंग (३५३)

ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाइ ।
तब की कथा कृपा करि कहिए हम सुनि हैं मन लाइ ।
बाबा नंद यशोदा मइया मिले सबन हित आइ ।
कबहूँ सुरति करत माइन की किधौं रहे बिसराइ ।
गोप सखा दधि खात भात बन अरु चाखते चखाइ ।
गऊ बच्छ मुरली सुनि उमड़त अब रहत केहि भाइ ।
गोपिन गृह व्योहार बिसारे मुख सन्मुख सुख पाइ ।
पलक वोट निमि पर अनखाती यह दुख कहा समाइ ।
एक सखी उन में जो राधा जब हो इहाँ ते गयो ।
तब ब्रज राज सहित सब गोपिन आगे ह्वै जु लयो ।
उतरे जाइ नंद बाबा के सब ही शोध लयो ।
मेरी सौं साँची कहु ऊधो मैया कछू कह्यो ।
बार बार कुसल पूँछी माहिं लै लै तुम्हरो नाम ।
ज्यों जल तृषा बढी चातक चित कृष्ण कृष्ण बलराम ।
सुंदर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली ।
लेइ उठाइ उर लाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उर शाली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग गौरी (३५४)

कहा लौं कहिए ब्रज की बात।
सुनहु स्याम तुम बिनु उन लोगइ जैसे दिवस बितात।
गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वह मलिन बदन कृश गात।
परम दीन जनु शिशिर-हिमी हित अंबुजगन बिन पात।
जा कहुँ आवत देखि दूर ते सब पूँछति कुशलात।
चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात।
पिक चातक बन बसन न पावहि वायस बलिहि न खात।
सूरस्याम संदेसन के डर, पथिक न उहि मग जात।

(३५५)

करुनामयी रसिकता है तुम्हारी सब झूठी।
जबही लौं नहिं लखो तबहि लौं बांधी मूँठी।
मैं जान्यो ब्रज जाय कै तुम्हरो निर्दय रूप।
जौ तुमको अवलम्ब ही वाकों मेलो कूप।
कौन यह धर्म है ॥ २५ ॥

(३५६)

पुनि पुनि कहैं अहो चलौ जाय बृन्दावन रहिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम पुञ्ज को प्रेम जाय गोपन सँग लहिए ॥
और काम सब छाँड़िकै उन लोगन सुख देहु ।
नातरु टूट्यो जात है अबही नेह सनेहु ॥
करौगे तो कहा ॥२६॥

(३५७)

सुनत सखा के बैन नैन भरि आए दोऊ ।
बिबस प्रेम आवेस रही नाहीं सुधि कोऊ ॥
रोम रोम प्रति गोपिका ह्वै रहि सांवरे गात ।
कल्प तरोरुह सांवरो ब्रज बनिता भईं पात ॥
उलहि अङ्ग अङ्ग ते ॥ २७ ॥

(३५८)

हो सचेत कहि भलो सखा पठ्यो सुधि ल्यावन ।
अवगुन हमरे आनि तहां ते लगे बतावन ।
मोमें उनमें अन्तरो एकौ छिन भरि नाहिं ।
ज्यों देखो मो माहिं वे तौ मैं उनही माहिं ।
तरङ्गनि बारि ज्यों ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३५६)

गोपी रूप दिखाय तबै मोहन बनवारी ।
ऊधो भ्रमहि निवारि डारि मुख मोह की जारी ॥
अपनो रूप दिखाय कै लीन्हों बहुरि दुराय ।
नन्ददास पावन भयो जो यह लीला गाय ॥

प्रेम रस पुञ्जनी ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

तृतीय-भाग

श्री राम-लीला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जन्म

राग कान्हरा (३६०)

आजु दशरथ के आँगन भीर।
आए भुव भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर।
फूले फिरत अयोध्या वासी गनत न त्यागत चीर।
परिरंभण हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर।
त्रिदश नृपति ऋषि ब्योम बिमाननि देखत रहे न धीर।
त्रिभुवन नाथ दयालु दरश दै हरी सबन की पीर।
देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़े नग हीर।
भये निहाल सूर सब याचक जे याचे रघुबीर।

बाल-लीला

(३६१)

कबहूं ससि मांगत रारि करैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूं करताल बजाय कै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं।
कबहूं रिसयाय कहैं हठकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चार सदा तुलसी मन मंदिर में बिहरैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धनुष-भंग

(३६२)

आयो चाप भंग समय सबही जनायो रंग,
मानी नृप हिये तबै धरकि धरकि उठे ।
रसिक बिहारी नेहबारी पुरनारिन के,
कंचुकी सुबंद आप तरकि तरकि उठे ।
उमँगे हैं भूप और कौसिक लषण आदि,
राम-भुज-दण्ड दोउ थरकि थरकि उठे ।
जनक किशोरी जू के सखिन समेत दोऊ,
लोचन सफल चारू फरकि फरकि उठे ।

(३६३)

शोर उठत महि खूब लटपटत सब,
सिंधु संघटत जल बेल थल छूटिगो ।
शेष फण फटत तलवा सहारटत,
बाराह बल घटत युग गाढ सो टूटिगो ।
दंत चट चटत महि शैलयुत छुटत,
दिगदिगंत गण हटत मत्त कुम्भ थल कूटिगो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दैत लुटि लुटत अभिमान ते छुटत,
कोदंड के टुटत ब्राह्मण्ड सो फूटिगो ।

जय-माल

(३६४)

अति ही उताल है निहाल रघुलाल कंठ,
मेली जयमाल भयो आनँद अपारो है ।
रसिक बिहारी स्याम गोरी नव जोरी हेरि,
सब नरनारी निज प्राणधन बारो है ।
माला पहराई दुहुं छाई सो अपार सोभा,
ता छिन अनूप रूप रुचिर निहारो है ।
धरि तिय बेष मंजु मुदित बसन्त मानो,
आज रितुराज पै प्रसून जाल डारो है ।

विवाह-प्रसंग

(३६५)

बोली एक नारी सुनो अवध बिहारी यह,
संभु धनु है न, जाहि बेग गहि तोरोगे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रसिक बिहारी हौं तिहारी चतराई तब,
जानौंगी सुकंकण की गांठ जब छोरोगे ।
ता छिन छबीली एक दूजी हँस बोली स्याम,
आज धीरताई बीरताई सब भोरोगे।
तुम पै न तौलौं कबौं छूटि है छबीले लाल,
जौ लौं नाहिं जनक लली के कर जोरोगे ।

बन गमन

राग बिलावल (३६६)

रहहु भवन हमरे कहे भामिनि ।
सादर सासु चरण सेवहु निज,
जो तुम्हरे अतिहित गृह स्वामिनी ।
राज कुमारि कठिन कंटक मग,
क्यों चलिहो मृदुपद गज गामिनि ।
दुसह वात वर्षा हिम आतप,
किमि सहिहो अगणित दिन जामिनि ।
हौं पितु आज्ञा प्रमाण करि,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐहौं बेग सुनहु द्युति दामिनि ।
तुलसीदास प्रभु बिरह बचन सुनि,
सह न सकी मुर्च्छित भइ भामिनी ।

राग केदारा (३६७)

ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई ।
तुम सों तजि प्रभु मो सी दासी अनत न कहूं समाई ।
तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखौं ।
ताछिन हृदय कमल परिफुल्लित जन्म सफल करि लेखौं ।
तुमरे चरन कमल सुख सागर यह ब्रत हौं प्रतिपालिहौं ।
सूर सकल सुख छांड़ि आपुनो बन बिपदा संग चलिहौं ।

(३६८)

कृपानिधान सुजान प्राणपति संग बिपिन हो आऊंगी ।
गृह ते कोटि भांति सुख मारग चलत साथ सुख पाऊंगी ।
थाके चरण कमल चापूंगी श्रम भये पवन डुलाऊंगी ।
नयन चकोरनि मुख मयंक छबि सादर पान कराऊंगी ।
जौ हठि नाथ साथ नहिं लैहौ तौ संग प्राण पठाऊंगी ।
तुलसीदास प्रभु बिन जीवन रहै क्यों फिर बदन दिखाऊंगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३६९)

मैं तुम सों सतिभाव कही है ।

बूझति और भाँति भामिनि कत,

कानन कठिन कलेश सही है ।

जो चलिहौ तौ चलो बेगि बन,

सुनि सिय मन अवलम्भ लही है ।

बूढत बिरह वारिनिधि मानहु,

नाह बचन मिस बांह गही है ।

प्राणनाथ के साथ चली उठि,

अवध शोक सागर उमडी है ।

तुलसी सुनि न कबहुँ काहू कहूँ,

तनु परिहरि परछांह रही है ।

राग कान्हरा (३७०)

नवका नहीं हौं लै आऊँ ।

प्रगट प्रताप चरण को देखौं ताहि कहां लौ गाऊँ ।

कृपासिंधु पै केवट आयो कंपत करत जु बात ।

चरण परसि पाषान उडत है मति मेरी उडि जात ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो यह बधू होय काहू की दार स्वरूप धरे ।
छूटे देह जाइ सरिता तजि पग सों परस करे ।
मेरी सकल जीविका या में रघुपति मुक्ति न कीजै ।
सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजै ।

राग भैरव (३७१)

पथिक महोनियां डारे जात ।
बिहँसत मंद बिलोकत जेहि तनु, प्राणन सहित बिकात
तजत निमेष विशेष नयन जुग, दरसत स्यामल गात
अधरन स्रवत मधुर बचनामृत, क्यों यह श्रवण अघात
धरणी रहत सकुच उर पग पग, परसि चरण जल जात
इन्हीं रह्यो बनबास जोग सखि, बिधि ते कहा बसात
मनसहुँ अगम कि मलहिं बहुरि यह, निमष भेंट के नात
ऐ जड़ प्राण अपान बिगत संग, अजहुँ न लागे जात
करतल खोइ सहज चिन्तामणि, अन्त रहहिं पछतात
बहुरि कहा करनी फल भोगत, सूरज निज जल जात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चित्रकूट पर भरत-मिलाप

राग केदारा (२७२)

भरत मुख निरखि राम बिलखाने ।
मुंडित केश शीश बिहबल दोउ उमँगि कंठ लपटाने ।
तात मरन सुनि स्रवण कृपानिधि धरनि परे मुरझाई ।
मोह मगन लोचन जलधारा बिपति हृदय न समाई ।
लोटति धरनि परी सुनि सीता समुझति नहिं समुझाई ।
दारुन दुःख दावा ज्यों तृनबन नाहीं बुझति बुझाई ।
दुरलभ भयो दरस दसरथ को भयो अपराध हमारे ।
सूरदास स्वामी करुनामय नैन न जात उघारे ।

पक्षीराज जटायु

(३७३)

दीन मलीन अधीन है अंग बिहंग परयो क्षिति खिन्न दुखारी
राघव दीन दयालु कृपालु को देख दुखी करुना भई भारी
गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैन सरोजन में भरि वारी
बारहिबार सुधारत पंख जटायु की धूरि जटान सों झारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अशोक बाटिका में सीता-हनुमान-संवाद

राग कान्हरा (३७४)

सुनु कपि वे रघुनाथ नहीं।
जिन रघुनाथ पिनाकहिं तान्यो तोरचो निमिष महीं।
जिन रघुनाथ फेरि भृगुपति गति डारी काटि तहीं।
जिहिं रघुनाथ हाथ खरदूषण हरे प्राण शरहीं।
कै रघुनाथ तज्यो प्रण अपुनो योगिन दशा गहीं।
कै रघुनाथ दुखित कानन कै नृप भये रघुकुल हीं।
कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं।
छाँड़ी नारि बिचारि पवनसुत लंकबाग बसहीं।
किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौ कंतहि न चहीं।
सूरदास स्वामी सों कहियो अब बिरमियों नहीं।

सीता-संदेश

(३७५)

स्वामी! सञ्ज जुदाई दे बुरी कीत्ती,
लुड़ळ-लुड़छ के घेरणी खाईदीए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर कर कीरने सन्धिश्रा पाईदीए,
लिल्लां लैंदिश्रां टिक्की चढ़ाईदीए ।
तेल उमर दे दीविश्रों मुक्क चुक्का,
चर्बी ढाल के जोत टिकाईदीए ।
तार दमां दी पतलीश्रों होई पतली,
रोज बारिश्रों कढ-कढ वधाईदीए ।
"जद तक सास तद तक आस" कहिण लोकीं,
एसे लटक विच जान लटकाईदीए ।
साईश्रां सच्च आखां मरनां गल्ल कुझ्झ नहीं,
ऐपर डाढी मुसीबत जुदाईदीए ।
भुलदी भटकदी जे कदी ऊँघ आवे,
पंचवटी विच बैठिश्रां होईदाए ।
कलीश्रां गुंद के सिहरा परोईदाए,
गल विच पाउण नूं वी उठ खलोईदाए ।
एसे पलक विच पलकां नखेड़ सुट्टे,
नामुराद सुपना डाढा कोईदाए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओड़क उहो विछोड़ा ते उहो भोरे,
बहि-बहि चंदरे लेखां नूं रोईदाए ।
एसे वहिण विच रुड़्ड़दिआं वैण पा-पा,
रात अक्खां दे विचदी लंघाईदीए ।
मौत चीज़ की होई इस सहिम अग्गे,
साईआं डाढी मुसीबत जुदाईदीए ।
लूंबे अग्गदे अंदरों जदों उठ्ठण,
सोमे अक्खीआं दे चढ़ के चो पैंदे ।
सड़दे हञ्भूआँ दी जित्थे धार पैंदी,
छाले ज़िमीं दी हिक्क ते हो पैंदे ।
मेरे कीरने रुक्ख खलिहार देंदे,
फुल्लां नाल लूंकडे खलो पैंदे ।
रात सुन्न होवे परबत चो पैंदे,
नदियां वैण पाउण तारे रो पैंदे !
रुड़्ड़दे जाण पत्तर गोते खाण पत्थर,
उठदी चीक जद मेरी दुहाई दीए !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बे-जबान पंछी वी कुरलाट पा-पा,
आखण डाढी मुसीबत जुदाई दी ए!
उहो चंद है रात नूं चढ़ण वाला,
जिस दी लो विच काढ़िआं बहीदा सी।
उस्से तरहँ दी बाग़ बहार वी है,
जिसदी महिक विच खिड़दिआं रहीदा सी।
लगरां उहो शगूफिआं नाल भरीआं,
भज-भज आप जिन्हां नाल खहीदा सी।
उहो वाउ ठंडी उहो तेल तुपके,
मोती खिल्लरे जिन्हां नूं कहीदा सी।
तेरे बाझ हुण खाण नूं पवे सब कुझ,
पा-पा वास्ते कन्नी खिसकाईदीए।
भखदे कोलिआं वांग गुलज़ार लूहे,
ऐसी पुठी तासीर जुदाई दीए।
राहों घुस्स के जे एधर आ जांदों,
जिंद सहिकदी ते झाती पा जांदों।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाले भुजदीआं आंदरां ठार जांदों,
नाले आपणा फ़र्ज भुगता जांदों ।
मेरी जुग्गां दी तांघ मुका जांदों,
लग्गी प्रीत नूं तोड़ निभा जांदों ।
जिन्हां हत्थां ने धनुष मरुंडिआ सी,
रावण जिन्न नूं वी उह विखा जांदों ।
एह वी "चात्रिक" कीत्तीआं पा लैंदा,
कीकर सती दी जिंदड़ी सताईदीए ।
सारी दुनियां दे वक़्तां नूं पाओ इक धिर,
फिर वी भारी मुसीबत जुदाई दीए ।

बिभीषण का शरण में आना

(३७६)

एकहिं बेर कहौं सुकहौं कहि कै पुनि और को और न भाखौं
कीन्ह कृपा जिहि पै तिहि पै अपराध निहार न रंचहु राखौं
जाहि लियो गहि कै अपनाय तिन्हैं रसिकेश न भूलिहू नाखौं
लावो कपीश बिभीषण को करि देउं अभै शरणागत राखौं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लक्ष्मण-शक्ति प्रसंग

राग मारू (३७७)

अबहीं कौन को मुख हेरों।
रिपुसेना-समूह जल उमड़े काहि संग लै फेरों।
दुख-समुद्र जिहि वार पार नहिं तामें नाव चलाई।
केवट थक्यो रह्यो अधबीचक कौन आपदा आई।
नाहिंन भरत शत्रुघन सुंदर जासों चित्त लगायो।
बीचहि भई और की औरै भयो शत्रु को भायो।
मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि ताजि हैं जानकी सुनि कै।
ह्वै है कहा बिभीषण की गति यहै सोच जिय गुनि कै।
बार बार शिर लै लक्ष्मण को निरखि गोद पर राखैं।
सूरदास प्रभु दीन बचन यों हनुमान सों भाखैं।

भगवान की बनबास से वापसी

राग सोरठ (३७८)

बैठी शकुन मनावत माता।
कब ऐहैं मेरे बाल कुशल घर कहहु काग फुरि बाता।
दूध भात की दोनी दैहौं सोने की चोच मढैहौं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि राम लषण उर लैहैं।
अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी।
गणक बुलाय पाँय परि पूछत प्रेम मगन मृदुबानी।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते समाचार ले आए।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी जनु मीन मरत जल पाए।

(३७६)

शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अति प्यारी।
एक समय में एक पुरुष ने व्याही ज्यादा नारी।
बृद्धावस्था में दशरथ की नारी ने बात बिगारी।
राज छोड़ बन गये राम ने पितु आज्ञा शिर धारी।
अब तो पिता के लिये पुत्र जन चाहते हैं गिरफ्तारी।
राज महल के सब सुक्खों पर इक दम ठोकर मारी।
बन में गई थी संग पती के सीता पतिव्रता नारी।
विपत समय में संग राम के की लक्ष्मण तैयारी।
अब तो पीवें खून भ्रात का करें मुकद्दमे जारी।
राज तिलक की गेंद बना कर खेलन लगे खिलारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लछमण-शक्ति प्रसंग

राग मारू (३७७)

अबहीं कौन को मुख हेरों।
रिपुसेना-समूह जल उमड़े काहि संग लै फेरों।
दुख-समुद्र जिहि वार पार नहिं तामें नाव चलाई।
केवट थक्यो रह्यो अधबीचक कौन आपदा आई।
नाहिंन भरत शत्रुघन सुंदर जासों चित्त लगायो।
बीचहि भई और की औरै भयो शत्रु को भायो।
मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि ताजि हैं जानकी सुनि कै।
ह्वै है कहा बिभीषण की गति यहै सोच जिय गुनि कै।
बार बार शिर लै लछमण को निरखि गोद पर राखैं।
सूरदास प्रभु दीन बचन यों हनुमान सों भाखैं।

भगवान की बनबास से वापसी

राग सोरठ (३७८)

बैठी शकुन मनावत माता।
कब ऐहैं मेरे बाल कुशल घर कहहु काग फुरि बाता।
दूध भात की दोनी दैहौं सोने की चोच मढैहौं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि राम लषण उर लैहैं।
अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी।
गणक बुलाय पाँय परि पूछत प्रेम मगन मृदुबानी।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते समाचार ले आए।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी जनु मीन मरत जल पाए।

(३७९)

शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अति प्यारी।
एक समय में एक पुरुष ने व्याही ज्यादा नारी।
बृद्धावस्था में दशरथ की नारी ने बात बिगारी।
राज छोड़ बन गये राम ने पितु आज्ञा शिर धारी।
अब तो पिता के लिये पुत्र जन चाहते हैं गिरफ्तारी।
राज महल के सब सुक्खों पर इक दम ठोकर मारी।
बन में गई थी संग पती के सीता पतिव्रता नारी।
विपत समय में संग राम के की लक्षमण तैयारी।
अब तो पीवें खून भ्रात का करें मुकद्दमे जारी।
राज तिलक की गेंद बना कर खेलन लगे खिलारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर राम उस तरफ भरत दोनों ने ठोकर मारी।
चरणपादुका धरी शीश पर यह ही बात बिचारी।
साधु बन कर रहा भरत नहीं बना राज अधिकारी।
राम लखन ने सूर्पनखां को क्या कह कर ललकारी।
अब जहां चिकनी मिट्टी देखें फिसल जांय व्यभिचारी।
लक्ष्मण शीश झुकाता था कह सीता को महतारी।
हाय आजकल तो भाबी को कहते आधी नारी।
था पंडित विद्वान् वह रावण जाने दुनिया सारी।
मद्य मांस परस्त्रिया हरण से राक्षस हुआ था भारी।
तन मन से रहा सेवा करता हनुमान बलधारी।
अब तो मुंह पर करें खुशामद पीछे देते गारी।
लालच और तलवार से डरकर सिया न हिम्मत हारी।
थोड़े भय से धर्म गवावें हाय आज कल नारी।
भक्त विभीषण ने भाई की संगत बुरी बिसारी।
अच्छी संगत में तुम जाओ कहैं ये "चन्द्र" पुकारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

चतुर्थ भाग

शृङ्गार रस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिहारी रत्नावली

अनरस हूं रस पाइये रसिक रसीली पास।
जैसे सांठे की कठिन, गांठौ भरी मिठास ॥३८०॥
अनियारे दीरघ दृगानि, किर्तीं न तरुनि समान।
वह चितवनी औरै कछू जिहिं बस होत सुजान।३८१
अरी परे न करै हियो, खरे जरे पर जार।
लावति घोरि गुलाब सों, मिलै मिलै घनसार ॥३८२
आड़े दै आले बसन, जाड़े हू की राति।
साहस कै कै नेह बस, सखी सबै ढिग जाति ॥३८३
इन दुखिया अँखियान को, सुख सिरोजई नाहिं।
देखत बनै न देखते, बिन देखे अकुलाहिं ॥३८४
इत आवति चलि जाति उत, चली छसातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे सी रहै लगी उसासन साथ ॥३८५॥
उर उरभयो चित चोर सों, गुरु गुरुजन की लाज।
चढ़े हिंडोरे से हिये किये बने गृह काज ॥३८६॥
औंधाई सीसी सुलखि, बिरह बरति बिललात।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीचहिं सूखि गुलाब गो, छींटौ छुयौ न गात ॥३८७
अंग अंग नग जगमगै, दीप सिखा सी देह ।
दिया बढाये हू रहै, बड़ो उजेरो गेह ॥३८८॥
अंग अंग प्रतिबिंब परि, दरपन से सब गात ।
दुहरे तिहरे चौहरे, भूषन जाने जात ॥३८९॥
कच समेटि कर भुज उलटि, खये सीस पट डारि ।
काको मन बाँधै न यह, जूरो बांधनि हारि ॥३९०॥
करके मीड़े कुसुम लौं, गई बिरह कुम्हिलाय ।
सदा समीपिनि सखिन हू, नीठि पिछानी जाय ॥३९१
करी बिरह ऐसी तऊ, गैल न छाड़त नीचु ।
दीनेहू चसमा चखनि, चाहे लहैं न मीचु ॥३९२॥
कहत सबै बेंदी दिये, आंक दस गुनो होत ।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत ॥३९३॥
कहत सबै कबि कमल से मो मति नैन पषानु ।
नतरकु इन बिय लगत कत, उपजत बिरह कृशानु ।३९४
कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरे भौन में करत हैं, नैनन हीं सों बात ॥३९५॥
कहि लहि कौन सकै दुरी, सोन जाय में जाय।
तनकी सहज सुवासना देती जो न बताय ॥३९६॥
कहेजु बचन बियोगिनी, बिरह बिकल बिललाय।
किये न केहि अँसुवा सहित, सुवा सुबोल सुनाय ॥३९७॥
कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेस लजात।
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात ॥३९८॥
किय हायल चित चाय लगि, बजि पायल तुव पाय।
पुनि सुनि २ मुख मधुरधुनि, क्यों न लाल ललचाय।३९९
कीजै चित सोई तरौं, जिहि पति तन के साथ।
मेरे गुन औगुन-गनन, गनौ न गोपीनाथ ॥४००॥
कीनेहू कोटिक जतन, अब कहि काढै कौन।
मो मन मोहन रूप मिलि, पानी में ज्यों लोन ॥४०१॥
कुच गिरि चढ़ि अति थकित है, चली डीठि मुख चाड़।
फिरि न टरी परियै रही, परी चिबुक की गाड़ ॥४०२॥
कुंज भवन तजि भवन को, चलिये नंद किशोर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर ॥४०३॥
कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार।
मो संपति जदुपति सदा, बिपति बिदारन हार ॥४०४॥
कोटि जतन कोऊ करै परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल-बल जल ऊँचे चढ़ै, तऊ नीच को नीच ॥४०५॥
कौन सुनै कासों कहौं, सुरति बिसारी नाह।
बदाबदी जिय लेत हैं, ये बदरा बदराह ॥४०६॥
खरी लसति गोरी गरे, धँसति पान की पीक।
मनो गुलूबँद लाल की, लाल लाल दुति लीक ॥४०७॥
खेलन सिखये अलि भले, चतुर अहेरी मार।
कानन चारी नैन मृग, नागर नरनि सिकार ॥४०८॥
गहिली गरब न कीजिये, समय सुहागहिं पाय।
जिय की जीवन जेठ जो, माँह न छाँह सोहाय ॥४०९॥
गोपिन के अँसुवन भरी, सदा असोस अपार।
डगर डगर नै ह्वै रही, बगर बगर के बार ॥४१०॥
गोरी छिगुनी अरुन नख, छला स्याम छबि देय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लहत मुकुति रति छिनक ये. नैन त्रिबेनी सेय ॥४११॥
चटक न छांडत घटत हू, सज्जन नेह गँभीर ।
फीको परै न बरु फटै, रंग्यो चोल रंगचीर ॥४१२॥
चम चमात चंचल नयन बिच घूंघट पट झीन ।
मानहु सुर सरिता बिमल, जल उछरत जुग मीन ॥४१३॥
चमक तमक हांसी सिसक, मसक झपट लपटानि ।
ये जिहि रति सो रति मुकुति और मुकुति अति हानि॥४१४॥
चलन न पावत निगम मग, जग उपजी अति त्रास।
कुच उतंग गिरिवर गह्यौ, मीना मैन मवास ॥४१५॥
चितवनि भोरे भाय की, गोरे मुख मुसकानि ।
लगनि लटकि आली गरे, चित खटकति नित आनि ॥४१६
चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि की अनुहारि ।
नेह दबावत नींद लौं, निरखि निसा सी नारि ॥४१७॥
छतौ नेह कागद हिये, भई लखाइ न टांक ।
बिरह तचे उघरयो सु अब, सेंहुड़ को सों आंक ॥४१८
छाले परिबेके डरनि, सकै न हाथ छुवाय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झिझकति हिये गुलाब के, झँवा झँवावत पाय ॥४१९
छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यो जोबन अंग ।
दीपति देह दुहुन मिलि, दीपत ताफता रंग ॥४२०॥
छुटे छुटावैं जगत तें, सटकारे सुकुमार ।
मन बांधत बेनी बंधे, नील छबीले बार ॥४२१।
छुटै न लाज न लालचौ, प्यौ लखि नैहर गेह ।
सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह ॥४२२॥
जटित नीलमणी जगमगति, सींक सुहाई नांक ।
मनो अली चंपक कली, बसि रस लेत निसांक ॥४२३॥
जरी कोर गोरे बदन, बरी खरी छबि देख ।
लसति मनो बिजुरी किये, सारद ससि परिवेष ॥४२४॥
जिन दिन देखे वह कुसुम, गई सु बीति बहार ।
अब अलि रही गुलाब की, अपत कंटीली डार ॥४२५॥
जिहिं निदाघ दुपहर रहै, भई माह की राति ।
तिहिं उसीर की रावटी, खरी आवटी जाति ॥४२६॥
जो चाहौ चटक न घटै, मैलो होय न मित ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रज राजस न छुवाइये, नेह चीकने चित ॥४२७॥
जो न जुगुति पिय मिलन की, धूरि मुकुति मुख दीन ।
जो लहिये सँग सजन तौ, धरक नरक हू की न ॥४२८॥
जौ वाके तन की दशा, देख्यौ चाहत आप ।
तौ बलि नेकु बिलोकिये, चालि अचकां चुप चाप ॥४२९॥
जंघ जुगल लोयन निरे, करे मनो बिधि मैन ।
केलि तरुन दुख दैन ए, केलि तरुन सुख दैन ॥४३०॥
ज्यों कर त्यों चहुँटी चलै, ज्यों चहुँटी त्यों नारि ।
छबि सों गति सीलै चलै, चातुरि कातनि हारि ॥४३१॥
ज्यौं ज्यौं आवति निकट निसि, त्यौं त्यौं खरी उताल ।
झमकि झमकि टहलैं करै, लगी रहंचटे बाल ॥४३२॥
ज्यौं ज्यौं जोबन जेठ दिन, कुच मिति अति अधिकाति ।
त्यौं त्यौं छिन छिन कटि छपा, छीन परति सी जाति ।४३३
झीने पट में झिलमिली, झलकति ओप अपार ।
सुर तरु की मनु सिंधु में, लसत सपल्लव डार ॥४३४॥
झुकि २ झपकौं है पलनि, फिरि २ मुरि जमुहाय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीदि पियागम नींद मिस, दीं सब सखी उठाय ॥४३५

झूठे जानि न संग्रहे, मन मुँह निकसे बैन ।
याही ते मानो किये, बातन को बिधि नैन ॥४३६॥

डारे ठोढ़ी गाड गहि, नैन बटोही मार ।
चिलक चौंधि में रूप ठग, हाँसी फाँसी डारि ॥४३७॥

तच्यो आंच अति बिरह की, रह्यौ प्रेम रस भीजि ।
नैननि के मग जल बहै, हियो पसीजि पसीजि ॥४३८॥

तनक झूठ निस वादिली, कौन बात पर जाय ।
तिय मुख रति आरम्भ की, नहिं झूठियै मिठाय ॥४३९॥

तपन तेज तापन तपन, तूल-तुलाई माह ।
सिसिर-सीत क्योंहु न मिटै बिन लपटे तिय नाह ॥४४०॥

तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जल जल छिरकाय ।
पिय पाती बिनहीं लिखी, बांची बिरह बलाय ॥४४१॥

तिय निज हिय जु लगी चलत, पिय नख रेख खरोंट ।
सूखन देत न सरसई, खोंटि खोंटि खत खोट ॥४४२॥

तिय कित कमनैती पढ़ी, बिनु जिह भौंह कमान ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चल चित बेझ्यो चुकति नहिं, बंक बिलोकनि बान ।४४३

तू रहि सखि हौं ही लखौं, चढ़ि न अटावलि बाल ।
सब ही बिनु ससि ही उदै, दैहैं अरघु अकाल ॥४४४॥

तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग ।
अनबूड़े बूड़े तरे, जे बूड़े सब अंग ॥४४५॥

दुसह बिरह दारुन दसा, रह्यौ न और उपाय ।
जात जात जिय राखिये, पिय की बात सुनाय ॥४४६॥

दीठि न परत समान दुति, कनक कनक से गात ।
भूषन कर करकस लगत, परस पिछाने जात ॥४४७॥

ध्यान आनि ढिग प्रान पति, मुदित रहति दिन राति ।
पल कंपति पुलकति पलक, पलक पसीजति गात ॥४४८॥

धुरवा होहिं न अलि इहैं, धुंआ धरनि चहुँ कोद ।
जारत आवत जगत को, पावस प्रथम पयोद ॥४४९॥

नई लगनि कुल की सकुच, बिकल भई अकुलाइ ।
दुहूँ ओर ऐंची फिरति, फिरकी लौं दिन जाइ ॥४५०॥

नहिं अन्हाय नहिं जाय घर, चित चहुंट्यो तकि तीर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परसि फुरुहरी लै फिरति बिहँसति धँसति न नीर ॥४५१॥

नाहिंन ये पावक प्रबल, लुवैं चलत चहुं पास ।
मानहु बिरह बसंत के, ग्रीषम लेत उसास ॥४५२॥

नित संसौ हंसौ बचत, मनहुं सु यह अनुमान ।
बिरह अगिनि लपटनि सकत, झपटि न मीचु सिचान ॥

निसि अंधियारी नील पट, पहिरि चली पिय गेह ।
कहौ दुराई क्यौं दुरै, दीप-सिखा सी देह ॥४५४॥

नेकु हंसौंही बानि तजि, लख्यौ परत मुख नीठि ।
चौका चमकनि चौंध में, परत चौंधिसी डीठि ॥४५५॥

नेकु उतै उठि बैठिये, कहा रहे गहि गेहु ।
छुटी जाति नहंदी छिनकु, महंदी सूखन देहु ॥४५६॥

नेकु न जानी परत यों, पर्यो बिरह तन छाम ।
उठति दिया लौं नादि हरि लिये तिहारो नाम ॥४५७॥

पग पग मग अगमन परति, चरन अरुन दुति झूलि ।
ठौर ठौर लखियत उठे, दुपहरिया से फूलि ॥४५८॥

पर्यो जोर बिपरीत रति रुपी सुरति रनधीर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करत कुलाहल किंकिनी, गह्यौ मौन जंजीर ॥ ४५६ ॥
प्रजरयो आगि बियोग की, बह्यो बिलोचन नीर।
आठौं जाम हियो रहै, उठ्यो उसास समीर ॥४६०॥
पहिरत ही गोरे गरे, यों दौरी दुति लाल।
मनो परसि पुलकित भई, मौलसिरि की माल ॥४६१॥
पत्राही तिथि पाइये, वा घर के चहुं पास।
नित प्रति पून्योई रहत, आनन ओप उजास ॥४६२॥
पावक झरतें मेह झर, दाहक दुसह बिसेष।
दहै देह वाके परस, याहि दृगन ही देख ॥४६३॥
पाय महावर देन कों, नाइन बैठी आय।
फिरि फिरि जानि महावरी, एंड़ी मीड़त जाय ॥४६४॥
प्रीतम दृग मींचत प्रिया, पानि परस सुख पाय।
जानि पिछानि अजान लौं, नेकु न होति लखाय ॥४६५॥
फिरि फिरि दौरत देखियत, निचले नेकु रहैं न।
यह कजरारे कौन पै, करत कजा की नैन ॥४६६॥
फूले फुदकत लै फरी, पल कटाच्छ करवार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करत बचावत विय नयन, पायक घाय हजार ॥४६७

बरन बास सुकुमारता, सब बिधि रही समाय ।
पँखुरी लगी गुलाब की, गाल न जानी जाय ॥४६८॥

बाल छबीली नयन में, बैठी आपु छिपाय ।
अरगट ही फानूस सी, परगट परै लखाय ॥४६९॥

बिनती रति बिपरीत की, करी परासि पिय पाय ।
हँसि अनबोले ही दियो, ऊतर दियो बुताय ॥४७०॥

बिरह जरी लखि जीगनानि, कही न वहि कै बार ।
अरी आव भजि भीतरै, बरसत आजु अँगार ॥४७१॥

बिरह बिथा जल परस बिन, बसियत मो हिय ताल ।
कछु जानत जलथंम बिधि, दुरजोधन लौं लाल ॥४७२॥

बिरह बिकल बिनु ही लिखी, पाती दई पठाय ।
आँक बिहीनी यो सुचित, सूनै बांचत जाय ॥४७३॥

बिहँसि बुलाय बिलोकि उत, प्रौढ़ तिया रस घूमि ।
पुलकि पसीजति पूतको, पिय चूम्यो मुख चूमि ॥४७४

बिहँसाति सकुचति सी हिये, कुच आँचर बिच बाहिं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीजे पट तट को चली, न्हाय सरोवर माहिं ॥४७५॥

बेधक अनियारे नयन, बेधत करन निषेध ।
बरबस बेधत मो हियो, तो नासा को बेध ॥४७६॥

बेंदी भाल तंबोल मुख, सीस सिल सिले वार ।
दृग आँजे राजै खरी, एही सहज सिंगार ॥४७७॥

बेसरि मोती-दुति झलक, परी अधर पर आय ।
चूनो होय न चतुर तिय, क्यौं पट पोंछो जाय ॥४७८॥

बेसरि मोती धन्य तू, को पूछे कुल जाति ।
पीबो करि तिय अधर को, रस निधरक दिन राति ॥४७९

भई जु तन छबि बसन मिलि, बरनि सकै सु न बैन ।
अंग ओप आंगी दुरी, आंगी आंग दुरैन ॥४८०॥

भूषन पहिरि न कनक के, कहि आवत इहि हेत ।
दरपन के से मोरचे, देह दिखाई देत ॥४८१॥

भूषन भारि सँभारि हैं, क्यौं यह तन सुकुमार ।
सूधे पाय न परत धर, सोभा ही के भार ॥४८२॥

मरन भलो बरु बिरहतें, यह बिचार चित जोय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मरन मिटै दुख एक को, बिरह दुहूँ दुख होय ॥४८३॥
मरिबे को साहस ककै, बढ़ै बिरह की पीर।
दौरति है समुहैं ससी, सरसिज सुरभि समीर ॥४८४॥
मृग नैनी दृग की फरक, उर उछाह तन फूल।
बिन ही पिय आगम उमँगि, पलटन लगी दुकूल ॥४८५।
मार्यौ मनुहारनि भरी, गार्यो खरी मिठाहिं।
वाको अति अनखाहटौ, मुसुक्याहट बिन नाहिं ।४८६
मार सु मार करी खरी, मरी मरीहि न मारि।
सींचि गुलाब घरी घरी, अरी बरीहि न बारि ॥४८७॥
मूड़ चढ़ाये हू रहै, परो पीठि कच भार।
रहै गरे परि राखिये, तऊ हिये पर हार ॥४८८॥
मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जो तनकी झांई परे, स्याम हरित दुति होय ॥४८९॥
मैं मिस है सोयो समुझि, मुँह चूम्यो ढिग जाय।
हँस्यो खिस्यानि गल गह्यो, रही गरे लपटाय ॥४९०॥
मैं लै दयो लयो सु कर छुवत छनकि गो नीर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाल तिहारो अरगजा, उर ह्वै लग्यौ अबीर ॥४६१॥

मैं तोसों कैबार कह्यो, तू जनि इन्हैं पत्याय ।
लगा लगी करि लोयननि उर में लाई लाय ॥४६२॥

मैं बरजी कै बार तू, इत कत लेति करौंट ।
पँखुरी लगै गुलाब की, परि है गात खरौंट ॥४६३॥

मोर चंद्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करत गुमान ।
लखिबी पायन पै लुठत, सुनियत राधा मान ॥४६४॥

मोर मुकुट की चंद्रिकनि, यों राजत नँद नंद ।
मनु ससि सेखर के अकस, किय सेखर सत चंद ॥४६५॥

मो सों मिलवति चातुरी, तूं नहिं मानति भेद ।
कहे देत यह प्रगट ही, प्रगट्यो पूस पसेव ॥४६६॥

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय ।
ज्यौं ज्यौं बूढ़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जल होय ॥४६७॥

रस भिजये दोऊ दुहुनि, तउ टिक रहे टरैं न ।
छबि सों छिरकत प्रेम रँग, भरि पिचकारी नैन ॥४६८॥

राति दिवस हौंसैं रहति, मान न ठिकु ठहराय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जे तो औगुन ढूंढिये, गुनै हाथ परि जाय ॥४९९॥
रँगी सुरत रंग पिय हिये, लगी जगी सब राति।
पैंड पैंड पर ठठाकि कै, ऐंड भरी ऐंडाति ॥५००॥
रहि न सकी सब जगत में, सिसिर सीत के त्रास।
गरमी भजि गढ़वै भई, तिय कुच अचल मवास ॥५०१॥
रह्यो ढीठ ढादस गहे, ससिहर गयो न सूर।
मुरयो न मन मुरवान चुभि, भौ चूरन चपि चूर ॥५०२॥
रहौ गुही बेनी लख्यौ, गुहिबे को त्यौनार।
लागे नीर चुचान ये, नीठि सुखाये बार ॥५०३॥
लखि गुरुजन बिच कमल सों, सीस छुवायो स्याम।
हरि सन्मुख करि आरसी, हिय लगाई बाम ॥५०४॥
लगी अनलगी सी जु विधि, करी खरी कटि छीन।
किये मनो वाहीं कसरि, कुच नितंब अति पीन ॥५०५॥
लहलहाति तन तरुनई, लचि लगि लौं लफि जाय।
लगै लांक लोयन भरी, लोयन लेति लगाय ॥५०६॥
ललित स्याम लीला ललन, चढी चिबुक छबि दून।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मधु छाक्यो मधुकर परयो, मनो गुलाब प्रसून ॥५०७॥

लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।
यह मुंह जोर तुरंग लौं, ऐंचत हू चलि जाहिं ॥५०८॥

लाल तिहारे बिरह की, अगिन अनूप अपार।
सरसै बरसै नीर हू, मिटै न झर हू झार ॥५०९॥

लै चुभकी चलि जाति जित, जित जल केलि अधीर।
कीजत केसर नीर से, तित तित केसर नीर ॥५१०॥

लोने मुख डीठि न लगै, यों कहि दीनो ईठि।
दूनी ह्वै लागन लगी, दिये दिठौना दीठि ॥५११॥

सटपटाति सी ससि मुखी, मुख घूंघट पट ढांकि।
पावक झर सी झमकि कै, गई झरोखे झांकि ॥५१२॥

सरस कुसुम मंडरात अलि, न झुकि झपटि लपटात।
दरसत अति सुकुमारता, परसत मन न पत्यात ॥५१३॥

सहज सेत पचतोरिया, पहिरे अति छबि होति।
जल चादर के दीप लौं, जगमगात तन जोति ॥५१४॥

सकै सताय न बिरह तम, निसि दिन सरस सनेह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहै वहै लागी दृगनि, दीप सिखा सी देह ॥५१५॥
सबै सोहाये ई लगैं, बसत सोहाये ठाम ।
गोरे मुख बेंदी लखै, अरुन पीत सित स्याम ॥५१६॥
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यहि बानिक मो मन बसो, सदा बिहारी लाल ॥५१७॥
सीरे जतननि सिसिर ऋतु, सहि बिरहिनि तन ताप ।
बसिबे को ग्रीषम दिनन, परो परोसिन पाप ॥५१८
सुख सों बीती सब निसा, मनु सोये मिलि साथ ।
मूका मेलि गहे जु छन, हाथ न छोड़े हाथ ॥५१९
सुनत पथिक मुँह माह निसि, लुवैं चलत वहि गाम ।
बिन बूझे बिन ही कहे, जियत बिचारी बाम ॥५२०॥
सुदुति दुराये दुरति नहिं, प्रगट करति रति रूप ।
छूटै पीक औरै उठी, लाली अधर अनूप ॥५२१॥
सूर उदित हू मुदित मन, मुख सुखमा की ओर ।
चितै रहत चहुं ओर ते, निश्चल चखनि चकोर ॥५२२॥
सोन जुही सी जग मगै, अँग अँग जोबन जोति ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरँग कुसुंभी चूनरी, दुरँग देह दुति होति ॥५२३॥

सोहत अंगुठा पाय के, अनवट जर्‌यो जराय ।
जीत्यौ तरिवन दुति सु ढरि परयो तरनि मनु पाय ।५२४

सोहति धोती सेत में, कनक बरन तन बाल ।
सारद बादर बीजुरी, भारद कीजत लाल ॥५२५॥

सोवत लखि मन मान धरि ढिग सोयो प्यौ आय ।
रही सुपन की मिलन मिलि तिय हिय सों लपटाय ।५२६

सोवत सपने स्याम घन, हिलि मिलि हरति बियोग ।
तबहीं टरि कितहूं गई, नींदौ नींदन जोग ॥५२७॥

संगति दोष लगै सबै कहे जु सांचे बैन ।
कुटिल बंक भ्रूसंग ते, भये कुटिल गति नैन ॥५२८॥

हेरि हिंडोरे गगन तें, परी परी सी टूटि ।
धरी धाय पिय बीच ही, करी खरी रस लूटि ॥५२९॥

हौं ही बौरी बिरह बस, कै बौरो सब गांव ।
कहा जानि ये कहत हैं, ससिहिं सीतकर नांव ॥५३०॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग कलिंगडा (५३१)

प्यारी बिन कटत न कारी रैन,
पल छिन न परत जिय हाय चैन ।
तन पीर बड़ी सब छुट्यो धीर,
कहि आवत नाहिं कछु मुखहु बैन ।
जिय तड़फड़ात सब जरत गात,
टप टप टपकत दुख भरे नैन ।
परदेस परे तजि देस हाय,
दुख मेटन हारो कोउ है न ।
साजि बिरह सैन यह जगत जैन,
मारत मरोरि मोहिं पाती मैन ।
प्यारी बिन कटत न कारी रैन ॥

(५३२)

बैठी थी सखिन संग पिय को गवन सुन्यो,
सुख के समूह में बियोग आग भरकी ।
"गंग" कहै त्रिबिध सुगन्ध लै पवन बह्यो,
लागत ही ताके तन भई बिथा जरकी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पहँ,
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
जलचर जरे औ सेवार जरि छार भयो,
जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी।

(५३३)

प्यारी खण्ड तीसरे रसीली रंग रावटी में,
तकि ताकी ओर छकि रह्यो नँद नन्द है।
कालिदास बीचनि दरीचिन ह्वै छलकत,
छबि की मरीचिन की झलक अमन्द है।
लोग देखि भरमैं कहा धौं है या घर में,
सुरंग मग्यो जगमगी जोतिन को कन्द है।
लालन को जाल है कि ज्वालनि की माल है कि,
चामिकर चपला कि रवि है कि चन्द है।

(५३४)

कनक बरन बाल नगन लसत भाल,
मोतिन की माल उर सोहैं भली भांति है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चन्दन चढ़ाइ चारु चंदमुखी मोहिनी सी,
प्रातही अन्हाई पगु धारे मुसुकाती है ।
चूनरी बिचित्र स्याम सजि कै "मुबारक" जू,
ढाँकि नख सिख तें निपट सकुचाति है ।
चन्द्र मैं लपेटि कै समेटि कै नखत मानो,
दिनको प्रनाम किये रात चली जाति है ।

(५३५)

भोरी बैस इन्दुमुखी सांकरी गली में मिलि,
सुन्दर गोबिन्द को अचानक ही आय कै ।
कालिदास जगैं जेब अंगनि जवाहिर की,
बाहिर ह्वै फैली चान्दनी सी छबि छाय कै ।
नेरो गह्यो स्याम सोईं बिहँसि बिलोकी बाम,
हरयो तिरछौं हैं नारि नैसुक निवाय कै ।
गोरे तन चोरे चित जोरे दृग मोरे मुख,
थोरे बीच कौरे लागि चली मुसुकाय कै ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५३६)

मन्द ही चँपते इन्द्र बधु के बरन होत,
प्यारी के चरन नखनिन हु ते नर मैं ।
सहज ललाई बरनी न जात घासीराम,
चुईस परत छबि हू की मति भर मैं ।
एडी ठकुराइन की नाइन गहत जबै,
ईंगुट सों रंग दौरि आवै दरबर मैं ।
दियो है कि देवो है विचारे सोचे बार बार,
बावरी सी ह्वै रही महावरि लै कर मैं ।

(५३७)

चन्द की कलासी चपलासी तिय सेनापति,
बालम के उर बीच आनँद के बोति है ।
जाके आगे कंचन में रंचक न पैरो द्युति,
मानो मन मोती लाल माल आगे पोति है ।
देखी प्रीति गाढ़ी ओढे तन सुख ठाढी जोति,
जोबन की बाढी छिन छिन औरै होति है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झलकत गोरी देह बसन झीने में मानों,
फानुस के अंदर दीपति दीप जोति है ।

(५३८)

मेरो मुँह चूमे तेरी पूजि साध चूमिबे की,
चाटे ओस असु क्यों सिरात प्यास डाढे हैं ।
छोटे कर मेरे कहा छ्वावति छबीली छाती,
छ्वावो जाके छ्वाइबे को अभिलाष बाढे है ।
खेलन जो आई हो तौ खेलौ जैसे खेलियतु,
केसोराय की सौं तै ये कौन खेल काढे है ।
फूल फूल मेटति है मोहिं कहा मेरी भटू,
भेटै किन जाय वे जु भेटिबे को ठाढे है ।

(५३९)

कैसे भ्रमर चुम्बन करत ।
नाग केसरि को सुअङ्कन रहसि रहसि हि भरत !
सिरस फूलन कान धर वन युवति मन को हरत ।
देत सोभा परम सुंदर सरस ऋतु लखि परत ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५४०)

फूली फूलबेली सी नबेली अलबेली बधू,
झूलत अकेली काम-केली सी बढ़ति है।
कहै पद्माकर झमंकी की झकोरन सों,
चारों ओर सोर किंकिनीन को कढ़ति है।
उर उचकाइ मचकीन की मचामच सों,
लंकहीं लचाय चाय चौगुनी चढ़ति है।
रति बिपरीत की पुनीत परिपाटी सु तौ,
हौंसनि हिंडोरे की सुपाटी मैं पढ़ति है।

(५४१)

रहसि रहसि हँसि हँसि के हिंडोरे चढ़ि
लेत खरी पेंगै छबि छाजैं उसकन मैं।
उड़त दुकूल उघरत भुज-मूल बढ़ी,
सुखमा अतूल केस फूलन खसन मैं।
बोझल है देखि देखि भए अनिमेख लाल,
रीझत बिसूर श्रम सीकर ससन मैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्यों ज्यों लचि लचि लंक लचकत भावती की,
त्यों त्यों पिअ प्यारो गहै आंगुरी दसन मैं।

(५४२)

गाइहौं मलारें और जनाइहौं हिये मैं छबि,
छाइहौं छिगुनि कुंज कुंजही के कोरे मैं।
कहै पदमाकर पियाइहौं पियाला मुख,
मुख सों मिलाइहौं सुगंध के झकोरे मैं।
नेह सरसाइहौं सिखाइहौं जो सासन मैं,
पाइहौं परी सो सुख मैन के मरोरे मैं।
उर उरझाइहौं हिये सों हिये लाइहौं,
झुलाइहौं कबैधौं प्रानप्यारी को हिंडोरे मैं।

(५४३)

झूलत पाट की डोरी गहे,
पटुली पर बैठन ज्यों उकरू की।
देवजू दै मचकी कटि बाजत,
किंकिनि केहर गोल उरू की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीखन को बिपरीत मनों ऋतु,
पावस ही चटसार सुरू की ।
खोंटी पटैं उचटैं तिय चोंटी,
चमोटी लगै मानो काम गुरू की ।

(५४४)

भूलति ना वह भूलनि बाल की,
फूलनि भाल की लाल पटीकी ।
देव कहै लचकै कटि चंचल,
चोली दृगंचल चाल नटी की ।
अंचल की फहरान हिये,
रहि जान पयोधर पीन तटी की ।
किंकिनि की झमकानि झुलावनी,
झूकनि की झुकि जानि कटी की ।

(५४५)

चोट लगी इन नैनन की दिन हू इन खोरिन सों कढती हौ
देखनमें मन मोहि लियो छिपी ओट झखोरनके झँकती हौ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देव कहै तुम हौ कपटी तिरछी अखियाँ करिकै तकती हौ
जानि परै न कछू मनकी मिलि हौ कबहूं कि हमैं ठगती हौ

(५४६)

यौवन रूप अनूप नवीन यह, जौ बिधि दीन्ह दयाकरि भारी
तौ कोऊ सुन्दर छैल प्रवीण सों प्रीति करौ बिन प्रेम पसारी
चारि घोस की चांदनी है, अपने मनमें यह लेहु बिचारी
ऐसो समय अनमोल को पाय, न व्यर्थ बितावहु प्रेम प्यारी

(५४७)

जैसी तेरी कटी है तु तैसो मान करि प्यारी,
जैसी गति तैसी मति हिये ते बिसारिये ।
जैसे तेरे भौं हैं तैसे पंथ पै न दीजे पांव,
जैसे नैन तैसइ बड़ाई उर धारिये ।
जैसे ओंठ तैसे नैन कीजिये न,
जैसे कुच तैसे बैन मुख ते न उचारिये ।
ऐरी पिकबैनी सुनु प्यारे मन मोहन सों,
जैसी तेरी बेनी तैसी प्रीति बिस्तारिये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिमि कपूर के हँस सों, हँसी धोखा खाय ।
तिमि हम तुम सों नेह करी, रहे हाय पछिताय ॥५४८॥
दोनों भुजा मृनाल सी, सुन्दरी मम गर डारि ।
तीखो ताप अनंग को, प्यारी बेगि निवारि ॥५४९॥
कोयल तरसत आम को, चातक तरसत नीर ।
हम तरसत तुव मिलन को, प्राण धरत नाहिं धीर ।५५०।
जा दिन ते बिछुरन भयो, ता दिन सों नहिं चैन ।
दिया जरत है रैन को, हिया जरत दिन रैन ॥५५१॥
धाराधर तो धर सकूं, धीर न धारयो जाय ।
जिन रस चाख्यो प्रेम को, तिन्हैं न और सुहाय ॥५५२॥
नन जोरि मुख मोरि हँसि, नैसुक नेह जनाय ।
आग लेन आई हिये, मेरे गई लगाय ॥५५३॥
जदपि नारि तु कुपित सी, ताकत है मम ओर ।
तदपि भाव रूखो नहीं, कहत नयन की कोर ॥५५४॥
ताकत तिरछी चाकित सी, नयन छिपाए लेत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कण्ठ लगाये हू डरत, कुचरस लेन न देत ॥५५५॥
चन्द्रबदन उत्पल नयन, रक्त कमल से हाथ ।
कदली खम्भ से उरु जुगल, सोभा कही न जात ॥५५६
अलक मुबारक तिय बदन, लटकि परी यों साफ़ ।
खुस नवीस मुनसी मदन लिख्यो कांच पर काफ़ ॥५५७
जब से देखी मृग नयनी, भूल्यो भोजन पान ।
निसि दिन जिय चिंतित रहे, रुचित और नहिं आन ।५५८
मलय पवन तापत तनही, फूल माल न सुहात ।
चंदन लेप उसीर रस, उल्टो जारत गात ॥५५९॥
कित चित गोरी जौ भयो ऊख रहरि को नास ।
अजहूँ अरी हरी हरी जहँ जहँ खरी कपास ॥५६०॥
इक तो मदन-बिसिख लगे, मूरछि परी सुधि नाहिं ।
दूजे बद बदरा अरी घिरि घिरि बिष बरषाहिं ॥५६१॥
सगब गरब खिंचैं सदा चतुर चतेरे आय ।
पर वाकी बाँकी अदा नेकु न खेंची जाय ॥५६२॥
विरह आंच नहिं सहि सकी सखी भई बेताब ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चनकि गई सीसी गयौ छिरकति छनकि गुलाब ॥५६३॥
भोगवती भोजन रचत मृगलोचन सुखदानि ।
घूंघट पट की ओट करि पिय को आगम जानि ॥५६४॥
दियौ हरखि हित सों हियौ लेत न फेर लजात ।
आन हात प्रीतम सु अब क्यों कर सौंप्यो जात ॥५६५॥
पीवत पीवत रूप रस बढ़त रहै हित प्यास ।
दई दई नेही दृगन कछू अनोखी प्यास ॥५६६॥
अद्‌भुत गति यह प्रेम की लखो सनेही आय ।
जुरै कहूं टूटै कहूं कहूं गांठ परि जाय ॥५६७॥
लाल तिहारे दृगन की हाल कही नहिं जाय ।
सावधान रहिये तऊ चित-बित लेत चुराय ॥५६८॥
अधर रुचिर पल्लव नये भुज कोमल जिमि डार ।
अंगन में यौवन सुभग लसत कुसुम अनुहार ॥५६९॥
तो मन की जानत नहीं अहो मीत बे पीर ।
पै मो मन को करत नित मनमथ अधिक अधीर ॥५७०॥
भानु मंद कर देत केवल गंध कमोदिनि हिं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पै शशि मंडल श्वेत होत प्रात के दरश तें ॥५७१॥

(५७२)

सोओ सुख निंदिया प्यारे ललन।
नैनन के तारे दुलारे मेरे बारे,
सोओ सुख निंदिया प्यारे ललन।
भइ आधीरात बन सनसनात,
पसु पंछी कोउ आवत न जात।
जग प्रकृति भई मनु थिर लखात
पातहु नहिं पावत तरन हलन।
झलमलात दीप सिर धुनत आय,
मनु प्रिय पतंग हित करत हाय।
सतरात बैन आलस जनाय,
सनसन लगि सीरी पवन चलन।
सोए निसि के सब नींद घोर,
जागत कामी चिंतित चकोर।
विरहिनी विरही पाहरु चोर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन कहँ छिन रैनिहु हाय कल न।

(५७३)

पैंजनी गढ़ाई चोंच सोने से मढ़ाई देहौं,
कर पर लाई पर रुचि सों सुधारिहौं ।
कहै कवि तोष छिन अटक न लैहौं कभौं,
कंचन कटोरे अटाखीर भरि धरिहौं ।
ऐरे कारे काग तेरे सगुन संजोग आज,
मेरे पति आवैं तौ वचन ते न टरिहौं ।
करती करार तौन पहले यह करौंगी सब,
अपने पिया को फिरी पीछे अङ्क भरिहौं ।

(५७४)

नैन नीर बरसत देखिबे को तरसत,
लागै काम सर सत पीर उर अति की ।
पाए न संदेसे ताते अधिक अंदेसे बढ़े,
सोचै सुकुमार पै न कहै मन गति की ।
ताही समय औचक ही काऊ आनि चीठी दीनि,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखत ही सेनापति पाई प्रीति रति की।
माथे लै चढ़ाई दोऊ दृगन लगाइ चूमि,
छाती लपटाइ राखी पाती प्राणपति की।

(५७५)

रति रन बिषे जो रहे हैं पति सनमुख,
तिन्हैं बकसीस बकसी है मैं बिहंसि कै।
करन को कंकन उरोजन को चन्द्रहार,
कटि माहिं किंकिनी रही है अति लसि कै।
"शेख" कहै आदर सों आनन को दीन्हों पान,
नैनन मैं काजर बिराजै मन बासि कै।
ऐरे बैरी बार ये रहे हैं पीठि पाछे तातें,
बार बार बांधति हौं बार बार कसि कै।

(५७६)

सीतल समीर ढार मंजन कै घनसार,
अमल अंगोछे आछे मन से सुधारि हौं।
दैहौं न पलक एक लागन पलक पर,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलि अभिराम आछी तपनि उतारिहौं।
कहत "प्रवीन राय" अपनी न ठौर पाय,
सुन बाम नैन या बचन प्रतिपारिहौं।
जबहीं मिलेंगे मोहिं इन्द्रजीत प्रान प्यारे,
दाहिनो नयन मूंदि तोहिं सों निहारिहौं।

(५७७)

भावत न पानी पान आकुल बिकल प्रान,
गरभ के जे निदान ते सबै लुकावने।
जिठानी सों कह्यो चहै सासु तन गई दीठि,
तहीं कियो नैनानि के पलक चुकावने।
इहि बीच पहि लोठीं बाल को बिलोकि आली,
पूछि उठि एहो तुम्हें होत हैं उकावने।
उठि सतराई छबि सुन्दर कही न जाई,
झुकी झहराइ बोल बोली मुसुकावने।

(५७८)

नैनन को तरसैये कहाँ लौं, कहाँ लौं हिये बिरहागी में तैये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक घरी न कहूं कल पैये, कहां लागी प्रानन को कलपैये
आवै यही अब जी में बिचार, सखी चलु सौतिहुँ के घर धैये
मान घटे तो कहा घटि है, जु पै प्राण प्यारे को देखन पैये

(५७९)

आये स्यामसुन्दर सनेही घर सावन में,
सुख सों सखी री अब रैन दिन जीहौं मैं ।
कोकिला कौं कण्ठमाल पटहूं पपीहन कौं,
भौंरन कौं भूषन नवीन अबदीहौं मैं ।
मोहन को मेवा और कुसुम समीरन कौं,
छीर बक पांतिन कौं पाय अब पीहौं मैं ।
तुलसी घटान हूँ कौं नये दुपटान दीहौं,
बादर बहादर कौं आदर सों लीहौं मैं ।

(५८०)

रैन संजोगिनि को सुखदाई ।
तजत मानिनी मानचन्द लखि,
दूती तिन कहँ चलत लिवाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोमल सेज तमोल फूल मधु,
सुखद साज सब धरे सजाई ।
बिरहिं कामिनी कामी जन संग,
लूटहिं सुख पीतम ढिग पाई ।

राग चैती गौरी (५८१)

मन भावनि भई साँझ सुहाई ।
दीपक प्रकट कमल सकुचाने,
प्रफुल्लित कुमुदिनी निसि ढिग आई ।
ससि प्रकास प्रसरित तारागन,
उगन लगे नभ में अकुलाई ।
साजत सेज सबै जुवती जन,
पीतम हित हिय हेत बढ़ाई ।
फूले रैन फूल बागन में,
सीतल पौन चली सुखदाई ।
गौरी राग सरस सुर सब मिलि,
गावत कामिनी काम बधाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राग बिहाग (५८२)

अहो यह शरद शंभु ह्वै आई।
कास फूल फूले चहुं दिसि तें सोइ मनु भस्म लगाई।
चंद उदित सोइ सीस अभूषन सोभा लगति सुहाई।
तासों रंजित घन-पटली सोइ मनु गज खाल बनाई।
फूले कुसुम मुंड माला सोइ सोहत अति धवलाई।
राजहंस सोभा सोइ मानों हास विभव दरसाई।

(५८३)

प्रथम सकल शुचि मज्जन अमल बास,
जावक सुदेश केश पाश को सम्हारिबो।
अङ्गराग भूषण बिबिध मुख बास राग,
कज्जल कलित लोल लोचन निहारिबो।
बोलनि हँसनि मृदु चलनि चितौनि चारु
पल पल प्रति पतिब्रत परिबारिबो।
केशोदास सो बिलास करहु कुंवरि राधे,
इहि बिधि सोरह श्रृंगारनि श्रृंगारिबो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५८४)

नई अबला रसभेद न जानत सेज गई जिय माहिं डरी
रसबात कही तब चौंक चली, तब धायके कंतने बांह गही
उन दोउन की झकझोरन में कटिनाभि ते अंबर छूटपरी
कर कामिनी दीपक झांपिलियो इहिकारन सुंदरि हाथ जरी*

*यह एक समस्या पूर्ति है, जो कि गंगकवि कृत है। कहते हैं कि एक बार अकबर ने दरबार में आकर कवियों से कहा कि "केहि कारन सुंदरि हाथ जरी" इस समस्या की पूर्ति करो। इसका कारण यह था कि हाल ही में अकबर ने एक और शादी की थी और विगित रात उस शादी की सुहाग रात थी। उस समय जो कुछ घटना हुई थी, अकबर ने उसी को लक्ष्य करके यह समस्या दी थी। और तो शायद कोई कवि इस घटना का अनुमान न लगा सका पर गंगजी ने लगा लिया और उपरोक्त पूर्ति पढ़कर सुनाई। सुनकर बादशाह प्रसन्न होगया।

नोट—भूल से कविवर बिहारीलाल कृत दोहों की बिहारी-रत्नावली के बाद भी कई पृष्ठों पर बिहारी-रत्नावली ही शीर्षक छप गयाहै और इसी प्रकार "प्रेम तरंग" के बाद भी ऐसा ही हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस साहित्य

पंचम भाग

नीति और स्फुट विषय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीति दोहावली

सज्जन तजत न नीति पथ, यदपि प्राण तज देत।
भूखो रहत मृगेन्द्र तउ, तृन न कबहूँ मुख लेत ॥५८५॥

गरजैं सो बरसैं नहीं, शरद जलद अनुमान।
बरसैं सो गरजैं नहीं, बर्षा-मेघ समान ॥५८६॥

करत निपुनई गुण बिना, रहिमन निपुन हजूर।
मानो टेरत बिटप चढि, इहि प्रकार हम कूर ॥५८७॥

जानि अनीतिहु जो करै जागत ही रहु सोय।
ताहि बुझाइ जगाइबो, रहिमन उचित न होय ॥५८८॥

जो बडेन को लघु कहो, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ॥५८९॥

बड़े विपतहू में पड़े, तजत न पर उपकार।
राहु ग्रसत शशि जगत को, पुन्य बढावन हार ॥५९०॥

बड़े लहत सुख सम्पदा, बड़े सहत दुख द्वन्द।
उड़गण घटत न बढत कछु, बढत घटत नित चंद ॥५९१॥

सुजन कठिन तउ हेम सम, पिघलत औसर पाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृन सम छोटे मनुज के, पिघलन को न उपाय ॥५६२॥

उद्यम कबहूँ न छांड़िये, पर आसा के मोद ।
गागरी कैसे फोरिये उनयो देखि पयोध ॥५६३॥

संग दोष ते साधुजन, परत न दूषण माहिं ।
विषधर लिपटे रहत तउ, चंदन में बिष नाहिं ॥५६४॥

करै बुराई पै भली, सो साधू अवरेख ।
करै भलाई पै भली, तामें कहा विशेख ॥५६५॥

जो गरीब सों हित करैं, धन रहीम वह लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥५६६॥

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीन-बन्धु सम होय ॥५६७॥

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अठिलै हैं लोग सब, बाँटि न लै हैं कोय ॥५६८॥

सर सूखे पक्षी उडैं, औरै सरन समाहिं ।
दीन मीन बिन पंख के, कहु रहीम कहँ जाहि ॥५६९॥

सम्प्रति सम्पतिवान को, सब कोऊ वसु देत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीन-बन्धु बिन दीन की, को रहीम सुधि लेत ॥६००॥

अब रहीम मुस्किल पड़ी, गाढे दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं, झूठे मिले न राम ॥६०१॥

थोड़े किये बडेन की, बड़ी बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरिधर कहै न कोय ॥६०२॥

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल ॥६०३॥

रहिमन सूधी चाल सों, प्यादा होत वज़ीर।
फरज़ी मीर न हो सकै, टेढे की तासीर ॥६०४॥

दुष्टा भार्या मित्र शठ, उत्तर दायक दासु।
तासु मृत्यु संशय नहीं, सर्प बास गृह जासु ॥६०५॥

नहीं बृति नाहिं बन्धु है, नहीं मान जहि देस।
विद्याहू आगम नहीं, तहां बास नाहिं बेस ॥६०६॥

भूप नदी वेदज्ञ धनि, पंच ये वैद्य गिनाय।
ये पांचों जहाँ नाहिं तहां बसिये न दिवस हू जाय ॥६०७॥

भली जीविका लाज भय, और दातता दान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ये पांचों जहां नाहिं तहां, करियै न संग सुजान ॥६०८॥
परखिय सेवक पठै करि, बन्धु ब्यसन को पाय ।
बिपति परै पै मित्र कहँ, तिय जब विभव नसाय ।६०६।
पाछे काम नसावहिं, मुख पर मीठे बैन ।
बरजै ऐसे मित्र को, पय मुख घट बिष ऐन ॥६१०॥
विष तक्षक के दन्त मैं, माखिन के शिर संग ।
बीछिन के पूछन बसै, दुष्टन के सब अंग ॥६११॥
विश्वासौ नहिं मित्र को, त्यों कुमित्र हू पास ।
रूस्यो मित्र कदापि तउ, करु सब मर्म प्रकास ॥६१२॥
मित्र शत्रु है जात हैं, शत्रु करहिं अति नेह ।
अर्थ नीति बस लोग सब, बदलहिं मानहु देह ॥६१३॥
सचिव दोस सों होत हैं, नृपहू बुरे ततकाल ।
हाथीवान प्रमाद सों, गज कहवावत व्याल ॥६१४॥
करिकै पथ्य बिरोध इक, रोगी त्यागत प्रान ।
पै बिरोध नृप सों किये, नसत सकल नर जान ॥६१५॥
सब कोऊ सब सों करैं, राम जुहार सलाम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हित अनहित तब जानिये, जा दिन अटकै काम ॥६१६॥

मांगे घटत रहीम पद कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पगै बसुधा हरी, तऊ बावनो नाम ॥६१७॥

रहिमन नीचनि संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि मद समुझत नर ताहि ॥६१८॥

बिगरी बात बने नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय ॥६१९॥

रहिमन नहीं सराहिये, लेन देन की प्रीति।
प्राणन बाजी लागही, हार होऊ कै जीत ॥६२०॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहिं।
उन ते पहिले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं ॥६२१॥

रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हू, सांप सहज धरि खाय ॥६२२॥

जैसी परै सु सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सब, शीत घाम अरु मेह ॥६२३॥

जाको जस है जगत में, जगत सार है जाहि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि ॥६२४॥

दान दया घमसान में, जाके हिये उछाह।
सोई बीर बखानिये, ज्यों छत्ता छति नाह ॥६२५॥

पावक वैरी रोग रिन, शेषहु राखिय नाहिं।
ए थोड़ेहु बढहिं पुनि, महा यतन सों जाहिं ॥६२६॥

विप्र न नेगी कीजिये, मूढ़ न कीजै मित।
प्रभू न कृतघनी सेइये, दूषण सहित कवित ॥६२७॥

प्रीति बिरोध समान सन, करिय नीति अस आहि।
जो मृगपति बध मेढुकहि, भलो कहै को ताहि ॥६२८॥

छाया अरु सम्मान गति, एक ही सी दरसात।
अनचाहे पीछे लगत, चाहे दूर परात ॥६२९॥

शूर समर करनी करहीं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥६३०॥

कहि रहीम धन बढ़ि घटै, जात धनिन की बात।
घटै बढै उन को कहा, घास बेंचि जो खात ॥६३१॥

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिपति कसौटी जे कसे, तेऊ साँचे मीत ॥६३२॥
खैर खून खांसी खुसी, बैर प्रीति मद पान ।
रहिमन दाबै ना दबैं, जानत सकल जहान ॥६३३॥
ये रहीम निज संग ले, जनमत जगत न कोय ।
बैर प्रीति अभ्यास यश, होत होत ही होय ॥६३४॥
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन बिष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥६३५॥
खलन करैं खोटे कर्म, फलत साधु पर जाय ।
रावण ने सीता हरी, गयो पयोधि बँधाय ॥६३६॥
सचिव वैद्य गुरू तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तनु तीनि कर, होय बेगिहि नास ॥६६७॥
कहा न पावक जरि सकै, का न समुद्र सुखाय ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाय ॥६३८॥
बचन कठोर जो बड़न के सहे सो होय महान ।
सान रगड़ बिन मनि कि लहु, नृप किरीट परथान॥६३६॥
गुण कर आदर होत है अगुण मान्य नाहिं होय ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोता पाले जात हैं, काक न पूछै कोय ॥६४०॥
यदि सुख हेतु बियोग है, किन्तु नहीं अज्ञान ।
तौ दिन दिन क्यों घटत सो, चहिये होन महान ॥६४१॥
उत्सव युद्ध अकाल दुख, राज दुआर मसान ।
संग देइ इन सबन में तहि स्व-जाति पहिचान ॥६४२॥
संकट तौ उत्तम सहैं, नीच सकत सहि नाहिं ।
घनाघात हीरा सहै, काँच चूर हो जाहिं ॥६४३॥
मूर्ख को पोथी दई बाँचन को गुण गाथ ।
जैसे निरमल आरसी, दई अन्ध के हाथ ॥६४४॥
मूरखता अरु तरुनता, है दोऊ दुख दाय ।
पर घर वसिवो कठिन अति, नीति कहत अस गाय॥६४५॥
ते माता पिता शत्रु सम, सुत न पढावैं जौन ।
राज हंस मधि बक सरिस, सभा न शोभित तौन ।६४६॥
युद्ध शेष प्यारी बिरहा, दर्द बन्धुअपमान ।
दुष्ट राज खल की सभा, दाहत बिनाहि कृशान ॥६४७॥
नदी तीर के वृक्ष औ, राजा मन्त्री हीन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नष्ट होय पर घर तिया, अत्राशि शीघ्र ही तीन ॥६४८॥
घर कुगांव सुत मूढ तिय, खल नीचनि सेवकाइ।
कुमुख सुता विधवा ह्वैं, तन बिनु अगनि जराइ ॥६४६॥
सेत सेत सब एक से, जहां कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहुं न कीजै वास ॥६५०॥
कोयल वायस एक सम, पंडित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहां न नेकु विवेक ॥६५१॥
वसिये ऐसे देस नहीं, कनक दृष्टि जो होय।
रहिये ते दुख पाइये, प्रान दीजिये रोय ॥६५२॥
जहां न धर्म न बुद्धि नाहिं, नीति न सुजन समाज।
ते ऐसे आपुहि नसैं, जैसे "चौपट राज" ॥६५३॥
व्यर्थै बृष्टि समुद्र में, तृप्तहि भोजन दान।
धनिकहि देनो व्यर्थ है, व्यर्थ दीप दिन मान ॥६५४॥
राज तिया अरु गुरु तिया, मित्र तियाहू जान।
निज माता औ सासु यह, पांचों मातु समान ॥६५५॥
धन से लोभी वश करै, गर्वहि जोरि स्वपान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूरख के अनुसरि चलै, बधुजन सत्य कहान ॥६५६॥
कहां कुराज ते प्रजहि सुख, लहि कुमीत सुख केह।
कहां कुशिष्य ते यश मिलै, नाहिं कुनारि रति गेह ॥६५७॥

काफी ताल होली का (६५८)

छलियन सों रहो सावधान नाहिं तो पछताओगे।
इनकी बातन में फँसि रहि हौ सबहि गँवाओगे।
स्वारथ लोभी जन सों आखिर दगा उठाओगे।
तब सुख पैहौ जब सांचन सों नेह बढ़ाओगे।
छलियन सों रहो सावधान० ।

पूरवी (६५६)

करि मूरख मित्र मिताई, फिर पछतैहो रे भाई।
अंत दगा खैहौ सिर धुनिहौ रहिहौ सबै गँवाई।
मूरख जो कछु हितहु करै तो तामैं अंत बुराई।
उलटो उलटो काज करत सब, दैहै अंत नसाई।
लाख करौ हित मूरख सों पै ताहिन कछु समुझाई।
अंत बुराई सिर पै ऐहै रहि जैहौ मुंह बाई।
फिर पछतैहौ रे भाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६६०)

जग मैं तेई चतुर कहावैं।
जे सब बिधि अपने कारज को, नीकी भांति बनावैं।
पढ्यौ लिख्यौ किन होई जु पै नाहिं, कारज साधन जानैं।
ताही को मूरख या जग मैं, सब कोऊ अनुमानै।
छल मैं पातक होत जदपि यह, शास्त्रन मैं बहु गायो।
पै अरि सों छल किए दोस नाहिं, मुनियन यहै बतायो।

चाल लखनऊ की ठुमरी–शाहजादे आलम तेरे लिये
इस चाल की (६६१)

जिनके हित कारक पंडित हैं तिनको कहा सत्रुनको डर है
समुझैं जग मैं सब नीतिन्ह जो तिन्है दुर्ग विदेस मनो घरहै
जिन मित्रता राखीहै लायक सों तिनकों तिनकाहू महासरहै
जिनकी परतिज्ञा टरै न कबौं, तिनकी जय ही सब ही थर है

(६६२)

साईं अपने भ्रात को, कबहुं न दीजै त्रास।
पलक दूर नाहिं कीजिये, सदा राखिये पास।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सदा राखिये पास, त्रास कबहूं नहीं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश, ताहि की गति सुन लीजै ।
कह गिरिधर कविराय, राम सों मिलिओ जाई ।
पाय विभीषण राज, लंकपति बाज्यो साई ।

(६६३)

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हंसाय ।
जग में होत हंसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान, राग रंग मनहि न भावै ।
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माहिं, किये जो बिना विचारे ।

(६६४)

बीती ताहि बिसारि दै, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताहि में चित देइ ।
ताही में चित देइ, बात जोई बन आवै ।
दुर्जन हँसै न कोइ, चित में खता न पावै ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख समुझ, होइ बीती सो बीती ।

(६६५)

मरै बैल गरियार, मरै वह अडिल टट्टू ।
मरै करकसा नारि, मरै वह खसम निखट्टू ।
बांभन सो मरि जाय, हाथ लै मदिरा प्यावै ।
पूत वही मर जाय, जु कुल मैं दाग लगावै ।
अरु बेन्याव राजा मरै, तबै नींद भर सोइये ।
बैताल कहै विक्रम सुनो, एते मरे न रोइये ॥१॥

(६६६)

दया चट्ट ह्वै गई, धरम धँसि गयो धरन मैं ।
पुन्य गयो पाताल, पाप भो बरन बरन मैं ।
राजा करै न न्याय, प्रजा की होत खुवारी ।
घर घर मैं बेपीर, दुखित भे सब नर नारी ।
अब उलटि दान गजपति मंगै, सील संतोष कितै गयो ।
बैताल कहै विक्रम सुनो, यह कलिजुग परगट भयो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६६७)

ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदै सूनो।
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिन तरुवर सूनो।
गज सूनो इक दंत, ललित बिन सागर सूनो।
विप्र सून बिन वेद, और बिन पुहुप बिहूनो।
हरि नाम भजन बिनु संत अरु, घटा सून बिन दामिनी।
बैताल कहै विक्रम सुनो, पति बिन सूनी कामिनी॥

(६६८)

जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नरक दिखावै।
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै।
निज जीभि ओठ एकाग्र करि, बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभि संभारे बोलिये।

(६६९)

टका करै कुल हूल, टका मिरदंग बजावै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टका चढै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै।
टका माय अरु बाप, टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड लडैया।
अब एक टके बिन टक टका, रहत लगाए रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो, धिक जीवन एक टके बिन।

(६७०)

गांठ में न दाम तातें सूनो लगे निजधाम,
आठों घड़ी आठों जाम चिन्ता चितको दहै।
जाके पास जाय कहूं दुखको बखान करै,
एक दुख कहो तो अनेक अपने कहै।
कहै पद्माकर हितू हैं सभी भैया बंधु,
बिपत परे पै कोऊ नेक न भुजा गहै।
झूँठ मूँठ सब कहैं खातिर जमाको राखु,
गांठ में जमा रहै तो खातिर जमा रहै।

जिनके मनमें सियराम बसें, इस धुनकी (६७१)

जग सूरज चंद टरैं तो टरैं पै न सज्जन नेह कबौं बिचलै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धन संपति सर्बस गेह नसै, नहिं प्रेम का मेड़ सों एड टलै ॥
सत वादिनको तिनका सग प्रान हैं रहै तो रहै व ढलै तो ढलै
निज मीत की प्रीत प्रतीत रहौ इकओर सबै जगजाउ भलै ॥

(६७२)

सहत विविध दुख मरि भिटत, भोगत लाखन सोग ।
पै निज सत्य न छाडहीं, जे जग सांचे लोग ।

(६७३)

बरु सूरज पच्छिम उगै, बिंध्य तरै जल माहिं ।
सत्य बीर जन पै कबहूँ, निज बच टारत नाहिं ।

(६७४)

चन्द टरै सूरज टरै टरै जगत व्यौहार ।
पै दृड़ श्री हरिचन्दको टरै न सत्य बिचार ।

(६७५)

सिंह गमन सुपुरुष बचन, कदलि फरै इक सार ।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी बार ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रताप की शिक्षा (६७६)

जिन कुल की मरजाद लोभ बस दूर बहाई ।
जीवन भय जिन खोइ दई आपनी बड़ाई ।
जिन जग सुख हित करी जातिकी जगत हँसाई ।
लखि जिनको मुख वीर सबै सिर रहे नवाई ।
तिनके संग खानो कहा, मुख देखतहू पाप है ।
जाइ सीस वरु धर्म हित, यह सिसोदिया थापहै ।

प्रताप प्रतिज्ञा (६७७)

जब लौं तनमैं प्रान न तब लौं टेकहि छोड़ौं ।
स्वाधीनता बचाइ दासता शृङ्खल तोड़ौं ।
जो निज कुल मरजाद सहित जीवन तौ जीवन ।
नहिं तातें शत गुणित मरन रन मैं जस पीवन ।
जौ पै निज शत्रुहि मारि कै यह परतिज्ञा राखिहौं ।
तौ या सिंहासन पै बहुरि पग धारन अभिलाखिहौं ।

प्रताप की अंतिम शिक्षा (६७८)

जब लौं जग में मान तबहिं लौं प्रान धारिये ।
जबलौं तनमें प्रान न तबलौं धर्म छाड़िये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब लौं राखै धर्म तबहि लौं कीरति पावै।
जब लौं कीरति लहै जन्म स्वारथ कहवावै।
हे बत्स सदा निज वंशकी मरजादा निरबाहियो।
या तुच्छ जगत सुख कारनै जिन कुल नाम हँसाइयो।

राग मल्हार (६७९)

हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी, यह ब्रत टरत न टारे।
भक्तन काज लाज हिय धरके, पांय प्यादे धाए।
जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ तहँ होत सहाए।
जो भक्तन सों बैर करत हैं, सो निज बैरी मेरो।
देख विचार भक्त हित कारण हांकत हौं रथ तेरो।
जीतों जीत भक्त अपने की, हारे हार विचारों।
सूरस्याम जो भक्त विरोधी, चक्र सुदर्शन मारों।

(६८०)

बसैं बिंदुमाधव विसेसरादि देव सबै,
दरसन ही ते लागै जममुख मसी है।
तीरथ अनादि पंचगंगा मनि कर्निकादि,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सात आवरण मध्य पुन्य रूप धसी है।
गिरिधरदास पास भागी-रथी सोभा देत,
जाकी धार तोरैं आसु कर्म रूप रसी है।
ससी सम जसी असी बरना में वसी पाप,
खसी हेतु असी ऐसी लसी बारानसी है।

(६८१)

रचित प्रभासी भासी अवली मकानन की,
जिन में अकासी फबै रतन नकासी हैं।
फिरैं दास-दासी विप्र गृही औ सन्यासी लसैं,
बर गुनारासी देवपुरी हू न जासी है।
गिरिधरदास बिस्व कीरति बिलासी रमा,
हासी लौं उजासी जाकी जगत हुलासी है।
खासी परकासी पुँनवाँसी चंद्रिकासी जाके,
वासी अबिनासी अघनासी ऐसी कासी है।

(६८२)

चारहु आश्रम बर्न वसैं मनि,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कंचन धाम अकास विभासिका ।
सोभा नहीं कहि जाय कछू,
विधिनै रची मानो पुरीन की नासिका ।
आपु बसैं गिरिधारन जू,
तट देव नदी बर बारि बिलासिका ।
पुन्य-प्रकासिका पाप बिनासिका,
हीय हुलासिका सोहत कासिका ।

(६८३)

राजैं सुर ह्वां तो यहां साधु सुर राजैं सदा,
सुधा है वहां तो ह्यां सुधासर दरस है ।
पान किए वांके होत अमर सुमर ह्वेके,
जीवन मुकत यहां सब को परस है ।
ग्वाल कवि योगिन को दुर्लभ कहा है वह,
योगी भोगी दोउन को होत ह्यां दरस है ।
ह्वां है हरि मंदिर ह्यां हरि गुरु मंदिर है
याते गुरुपुर सुरपुर ते सरस है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६८४)

हांसी गई भूल यमदूतन उदासी भई,
पाप की कलासी न तलासी करैं डर के।
सत्य की अटासी दान पुन्य की छटासी,
जहां धर्म की घटासी नाशी शोक दीन तरके।
ग्वाल कवि खासी धुन वेद की प्रकासी वहां,
नारी कमलासी रूपवासी मैनसर के।
कासी कीन चाह अविनासी ह्वै मवासी रहै,
दासी कर राखी मोक्षवासी सुधासर के।

(६८५)

नव उज्जल जलधार, हार हीरक सी सोहति।
बिच बिच छहरति बूँद मध्य मुक्ता-मनि पोहति।
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत।
जिमि नर-गन मन विविध मनोरथ करत मिटावत।
सुभग-स्वर्ग-सोपान-सरिस सब के मन भावत।
दरसन मज्जन पान त्रिविध भय दूर मिटावत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री हरिपद-नख-चंद्रकांत-मनि-द्रवित सुधारस।
ब्रह्म-कमंडल-मंडन भव-खंडन सुर सरवस।
शिव सिर-मालति-माल भगीरथ-नृपति पुन्य फल।
ऐरावत-गज गिरिपति हिम नग कंठ हार कल।
सगर-सुवन सठ सहस परसि जल मात्र उधारन।
अगिनित धारा रूप धारि सागर संचारन।
कासी कहँ प्रिय जानि ललकि भेंट्यो जग धाई।
सपनेहू नहिं तजी, रही अंकम लपटाई।
कहूं बंधे नव घाट उच्च गिरिवर-सम सोहत।
कहुं छतरी कहुं मढी बढी मन मोहत जोहत।
धवल धाम चहुं ओर फरहरत धुजा पताका।
घहरत घंटा धुनि धमकत धौंसा करि साका।
मधुरी नौबत बजत, कहूँ नारी-नर गावत।
वेद पढत कहुँ द्विज, कहुँ जोगी ध्यान लगावत।
कहुँ सुंदरी नहात बारि कर जुगल उछारत।
जुग अंबुज मिलि मुक्त गुच्छ मनु सुच्छ निकारत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धोवत सुंदरि बदन करन अति ही छवि पावत।
बारिधि नाते ससि कलंक मनु कमल मिटावत।
सुंदरि ससि मुख नीर मध्य इमि सुंदर सोहत।
कमल बेलि लह लही नवल कुसुमन मन मोहत।
दीठि जहीं जहँ जात रहत तित ही ठहराई।
गंगा छबि हरिचंद कछू बरनी नहिं जाई।

(६८६)

जम की सब त्रास बिनास करी मुख ते निज नाम उचारन में
सब पाप परतापहिं दूर दुरयो तुम आपन नाम निहारन में
अहो गंग अनंग के शत्रु करे बहु नेकु जलै मुख डारन में
गिरिधारन जू कितने बिरचे गिरि धारन धारन धारन में

(६८७)

देखि गंगा की रीति बाल्यो जमराज ऐसो,
ऐरे चित्रगुप्त मेरे हुकुम में कान दै।
कहै पद्माकर यह नरकन मूंदि करि,
मूंदि दरवाजन को ताजि यह थान दै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखु यह देवनदी कीन्हे सब देव यातैं,
दूतन बुलाय कै बिदाके बेगि पान दै।
फारि डारु फरद न राखु रोजनामा अब,
खाता खत जान दै वही को बह जान दै।

(६८८)

सेवक गुनी जन के चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत चित हित गुन गानी के।
सीधे न सों सीधे महा बाँके हम बाँके न सों,
हरिश्चन्द्र नगद दमाद अभिमानी के॥
चाहिबे की चाह काहू की न परवाह,
नेही नेह के दिवाने सदा सूरत निवानी के।
सरबस रसिक के सुदास दास प्रेमिन के,
सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के॥

(६८६)

जग में घर की फूट बुरी।
घर कै फूटहिं सों बिनसाई, सुबरन लंक पुरी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूट हि सों सब कौरव नासे भारत युद्ध भयो।
जाको घाटो या भारत मैं अब लौं नहिं पुज्यो।
फूटहि सों नव नंद बिनासे गयो मगध को राज।
चन्द्रगुप्त को नासन चाह्यो आपु नसे सह साज।
फूटहि सों जयचन्द बुलायो यवनन भारत धाम।
जाको फल अब लौं भोगत सब आरज होइ गुलाम।
जो जग में धन मान और बल आपुनो राखन होय।
तौ अपुने घर में भूलेहू फूट करो जनि कोय।

(६९०)

बारह बांस बत्तीस गज अंगुल चारि प्रमाण।
इतने पर पतसाह है मति चुकै चौहान॥
फेरि न जननी जनमि है फेरि न खैंचि कमान।
सात बार तुम चूकिओ अब न चूक चौहान॥
धर पलट्यो पलटी धरा पलट्यो हाथ कमान।
चन्द कहै पृथिराज सों जनि पलटै चौहान॥

\+ \+ \+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब की चढ़ी कमान को जानै फिर कब चढ़ै ।
जनि चुक्कै चौहान इक्के मारिय इक्क सर *

(६६१)

खात हैं हराम दाम करत हराम काम,
घर घर तिनही के अपयश छावैंगे ।
दोजख हूं जैहैं तब काटि काटि कीरा खैहैं,
खोपरी को गुदो काग टोंटनि उडावैंगे ।
कहैं करनेस अब घूसखात लाज नहीं,
रोजा औ निमाज अन्त काम नहिं आवैंगे ।
कविन के मामले में करैं जौन खामी तौन,

---

*यह कविता चंदवरदाई कृत है। यह उसने उस समय बनाकर महाराज पृथवीराज को सुनाई थी, जब कि महाराज पृथवीराज शहाबुद्दीन गोरी की कैद में पड़े हुए थे और शहाबुद्दीन के कहने से वह उसी के द्वारा लाई हुई अपनी अंध अवस्था में ही लक्ष्य बेध विद्या से बाण चलाने लगे थे । फलतः महाराज पृथवीराज सचेत होगये और उन्होंने इस प्रकार निशाने से बाण मारा कि शहाबुद्दीन का शिर धड़ से जुदा हो गया । बस फिर क्या था दरबार में तलवारें ही तलवारें निकल आईं और सभी एक साथ मिल कर महाराज पृथवीराज पर प्रहार करने लगे । महाराज पृथवीराज और चंद ने यह सोच कर कि यवनों के हाथ से मरना ठीक नहीं है आपस में ही तलवारें चलाकर संसार से कूच कर दिया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निमक हरामी मरे कफ़न न पावैंगे ।

(६६२)

काबुल में मेवा करे, ब्रज में टेंटी खाँय ।
कहूं कहूं गोपाल की भूल सिटल्लैं जाँय ॥

(६६३)

अरिहुं दन्त तृन धरत ताहि मारत न सबल कोइ ।
निसि दिन हम तृन चरैं बोल बोलैं जु दीन होइ ॥
मधुर न हिंदुहि देहिं कटुक तुरकाहिं न पियावहिं ।
पुत्र एक हम जानहिं जग अतिसय मन भावहिं ॥
गोरक्ष अकब्बर साह सुनु गो बिनवै जोरे करन ।
कहु कौन चूक मोहि मारियतु मुए चाम सेवहिं चरन*॥

खिड़े (६६४)

पतझर नाल मरे बृछ बूटे,
मौसम देख बहार खिड़े ।

---

* यह कविता नर हरि कृत है । कहते हैं कि यह कविता लिख कर उन्होंने एक गाय के गले में लटका दी और अकबर के दरबार में उसे ले जा कर आप उसकी ओर से पढ़ कर अकबर को सुना दी । सुन कर अकबर इतना प्रसन्न हुआ कि उस ने गो घात बंद कर दिया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्त डोडीआं टान्ह कूंबलां,
पा जीवन आधार खिड़े ।
टुण्ड मुण्ड सुकड़े सन जो कल्ल,
अज दिस्सन सुरजीत होए ।
सब्ज़ा जार खेतीआं खिड़ीआं,
चमन बाग गुलज़ार खिड़े ।
पवन सुहानी जल मन भाणा,
कुदरत जापे गुटक रही ।
अण्डज जेरज सेतज उद्‌भिज
मानो खानि चारे खिड़े ।
बुढ़कण नारां भुड़कण हिरदे,
जज़बे उठण उमंग भरे ।
झूमण सब नर नार खिड़े भी,
आशक ते दिलदार खिड़े ।
खिड़िआ खेड़ा पंजाबी जद,
प्यारा नज़र बसंत पिआ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पी-पी के रस भरे घुट्ट,
साहित्य-प्रेम मतवार खिड़े ।
शाला रहे बसन्त हमेशा,
"चरन" बाग पंजाबी ते ।
हर पंजाबी बच्चे दे दिल,
पंजाबी दा प्यार खिड़े* ।

दूई दा बुलबुला (६९५)

शौंकी बंसरी दा नंदलाल मेरा,
मैनूं दरस दिओ नी किहड़ी वल गिआ जे ।
हैं हैं! वेखोनी! हुणे सी कोल मेरे,
हुण अक्खीआं विच्च ओह छल गिआ जे ।
लभो! फड़ो!! नी साँवला कान्ह मेरा,
चन्न चानणी नाल ही रल गिआ जे ।
कज्जल भिन्ने विखाल के नैन तिक्खे,

---

*यह कविता सरदार ऐस० ऐस० चरनसिंह जी शहीद ने, इस पुस्तक के संग्रह कर्ता द्वारा किसी समय निकलने वाले पंजाबी मासिक पत्र "बसंत" के प्रथमाङ्क के लिये लिखी थी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुड़ी जादू दी धूड़ के चल्ल गिआजे ।
नहीं! नहीं!! नी छड्ड के चंद मैनू
जावे किस तरह सखीआं दी रास अन्दर ।
उल्टी चाल न डिठ्ठी ए चन्द्रमा दी,
कदी किसे आकाश इतिहास अन्दर ।

तूंहे दस्स देह सरू दे बूटिआ वे,
कृपानाथ मेरा किहड़े दा गिआ ए ?
मैनूं जापदा ए तेरी देही ते वी,
साया लंघदा लंघदा पा गिआ ए !
तेरे झुल्लण तों नाले प्रतीत हुन्दा,
प्यूंद लग्न दी तैनूं वी ला गिआ ए ।
क्यों नहीं दस्सदा प्रेम दी कुठड़ी नूं,
नंदलाल की पट्टी पढ़ा गिआ ए ?
जे तूं दस्सेंगा गेंदे दे हार गुंद गुंद,
तेरे सीस ते चरनां ते धरांगी मैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माला तुलसी दी पकड़ के हत्थ अंदर,
जाप तेरे उपकार दा करांगी मैं ।

लोए चन्न दीए नी तूहें दस्स मैनूं,
किद्धर गए ने सुंदर सलोने मेरे ।
झाकी फुल्ल त्रेल दी फेर वेक्खीं,
पहिले वेख लै पापने रोने मेरे ।
धागे रिश्मां दे टुट्टदे वेख ओधर,
एधर हञ्झू वी वेख परोणे मेरे ।
ओधर चन्द्रमा खेहनूं दा वेख रिहड़णा,
एधर आहां दे वेख नी टोने मेरे ।
मेरे प्रीतम नूं अज्ज जे मेल देवें,
होवें उच्चीआं नारां दी गोत अंदर ।
करिआ करांगी शाम दी नित्त पूजा,
तेरी चौधवीं रात दी जोत अंदर ।

रेखा सीतले स्वर्गां दे हत्थ दीए,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जमना भुल्ल गई ओहदी पछान तौनूं ।
जीहदे चरनां दे छुहण दा जग्ग अंदर,
मिलिआ सभ कोलों पहिले मान तैनूं ।
नाग कढ्ढ के तेरीआं लिटां विच्चों,
जिन्हें कर दित्ता अवादान तैनूं ।
लहिरां मारन दी जाच सिखा गईए,
जिहदी बंसरी दी सुन्दर तान तैनूं ।
तैनूं ओसे ही भैण दी सहुं है नी,
जिहदे विच्च इह जाने ने फुल्ल मेरे ।
ओस अमृत दे सोमे दा पता दस्सीं,
हाड़े करदिआं सुक्क गए बुल्लह् मेरे ।

धर्म प्यारीए वाए नी हैं तूंते,
छोहके टीसी हिमाला दी औण वाली ।
मोर मुकुट स्याम दा चुमचुम के,
बड़ीआं सद्धरां नाल हिलौण वाली ।
सुरां भिज्जीआं भिज्जीआं प्रेम दीआं,

CC-0: In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रजनारीआं कोल पहुँचाण वाली ।
सच्च पुच्छें ते ओस दी बंसरी दी,
मैनूं तूं हैं दुमूंही लड़ाउण वाली ।
एस चानणी रात दे विच्च पावां,
ओस प्यारे दे प्यार दी सहुं तैनूं ।
मैनूं दस्स नी चंद एकादसी दा,
नज़र आया जे ओस दा नहूं तैनूं ।

शामा ! एह की किहाई बंसरी नूं ?
फूक हौली जही मार के कन्न अन्दर ।
तेरी वांस दी मट्टी ने तीर लक्खां,
मारे राधां विचारी दे मन अन्दर ।
नाड़ नाड़ है जमना दी तड़फ उठी,
अग्ग लग्ग गई लहिरां ते तन अन्दर ।
सुरां घत्त के गोकल दे वासीआं नूं,
खिच्च लिआई बिंदराबन अन्दर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माला बनी स्वासां दे मणकिआं दी।
जपां दिणे रातीं तेरा नाम प्यारे।
नंदलाल गोपाल ते कृष्ण गोविंद।
मोर मुकुट वाले राधे-श्याम-प्यारे।

आओ ब्रिंद बिहारी जी उहें आओ,
कान्हू दूर खलोत्तरे हस्सदे ओ।
मिरग नैनी दे नैन पथराउण लग्गे,
मोर मुकुट दा दरस हुण दस्सदे ओ।
लभ लिआ मैं आप नूं लुको भावें,
जाओ जाओ निशंग जे नस्सदे ओ।
है जग चौखटा आप दी मूरती दा,
जरें जरें दे शीशे विच वस्सदे ओ।
जाओ दम मारो काली नाग अग्गे,
एस डेढ गिठ नाप दी बंसरी दा।
हुण मैं आपणे वैणां दुखिआरिआं तों,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कम्म लवांगी आप दी बंसरी दा ।

सखीओ मेरीओ राधां न कहो मैनूं,
हुण मैं होर कलबूत विच पई जे नी।
अग्गे कृष्ण नूं ढूंडदी लब्भदी सां,
हुण मैं आप ही कृष्ण हो गई जे नी।
टुट्टा बुल बुला दुई दी वा निकली,
सागर नाल हो गई इकमई जे नी।
आखण लग्ग पए लोक सुदाइन मैनूं,
जदों सुध मैं आपणी लई जे नी ।
डिट्ठा आपणे आप नूं कृष्ण बणिआ,
जदों खोल्हीआं राधां ने अक्खीआं ने।
लोभ-कंस नूं टुरी जद "शर्फ़" मारन,
झुरमुट पालिआ मोहदीआं सखीआं ने।

(६९६)

तजि मोहिं काके ऊपर नाथ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोहिं अकेली छोडि गए तजि बालपने को साथ ।
याद करहु जो अगिनि साखि दै पकरयो मेरो हाथ ।
सो सब मोह आज तजि दीनो कीनो हाय अनाथ ।

(६६७)

धन धन भारत की छत्रानी ।
वीर-कन्यका वीर-प्रसविनी वीर-वधू जग जानी ।
सती सिरोमनि धरम-धुरंधर बुधि-बल-धीरज-खानी ।
इन के जस की तिहूं लोक में अमल धुजा फहरानी ।

(६६८)

सेल गई बर्छी गई, गये तीर तरवार ।
घड़ी छड़ी चश्मा भये खत्रिन के हथियार ॥

गीत (६६६)

कोऊ नहिं पकरत मेरो हाथ ।
तीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ ।
जाकी सरन गहत सोइ मारत सुनत न कोऊ दुख गाथ ।
दीन बन्यौ इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन २ विपति बढत सुख छीजत देत कोऊ नाहिं साथ ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारौ नाथ ।

जीवन-संगीत

(७००)

मैनूं डुस्क के आख ना सज्जना उए,
जीवन सुफ़निआं दी निरा लड़ी है जी ।
पैंच्छी ताड़िआ पिंजड़े विच्च जीकन,
इंजे आत्मा देह ने कड़ी है जी ।
टहिक महिक जहाण दी ठग्ग बाजी,
जिला झूठ दी शैआं ते चढ़ी है जी ।
कृपासागरा उक्खली विच्च पाके,
माया मार मूहले जिन्द छड़ी है जी ॥१॥
जीवन असल जाणीं जीवन सच्च जाणीं,
फिरें भुल्लिआ सज्जना झल्लिआ उए ।
मरन नाल एह जीउंण ना मुक्क जांदा,
मढ़ीआं विच्च जे थां जा मल्लिआ उए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोहिं अकेली छोडि गए तजि बालपने को साथ।
याद करहु जो अगिनि साखि दै पकर्यो मेरो हाथ।
सो सब मोह आज तजि दीनो कीनो हाय अनाथ।

(६९७)

धन धन भारत की छत्रानी ।
वीर-कन्यका वीर-प्रसविनी वीर-वधू जग जानी।
सती सिरोमनि धरम-धुरंधर बुधि-बल-धीरज-खानी।
इन के जस की तिहूं लोक में अमल धुजा फहरानी।

(६९८)

सेल गई बर्छी गई, गये तीर तरवार।
घड़ी छड़ी चशमा भये खत्रिन के हथियार ॥

गीत (६९९)

कोऊ नहिं पकरत मेरो हाथ।
तीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ।
जाकी सरन गहत सोइ मारत सुनत न कोऊ दुख गाथ।
दीन बन्यौ इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन २ विपति बढत सुख छीजत देत कोऊ नाहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारौ नाथ।

जीवन-संगीत

(७००)

मैनूं डुस्क के आख ना सज्जना उए,
जीवन सुफ़निआं दी निरा लड़ी है जी।
पैंच्छी ताड़िआ पिंजड़े विच्च जीकन,
इंजे आत्मा देह ने कड़ी है जी।
टहिक महिक जहाण दी ठग्ग बाजी,
जिला झूठ दी शैआं ते चढ़ी है जी।
कृपासागरा उक्खली विच्च पाके,
माया मार मूहले जिन्द छड़ी है जी ॥१॥
जीवन असल जाणीं जीवन सच्च जाणीं,
फिरें भुल्लिआ सज्जना झल्लिआ उए।
मरन नाल एह जीउंण ना मुक्क जांदा,
मढीआं विच्च जे थां जा मल्लिआ उए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनिश्रों मिट्टीश्रों रुलेंगा विच्च मिट्टी,
हुक्म आतमा नूं जदों घल्लिश्रा उए ।
कृपासागर बिरछ जे जाए कायां,
फिर भी आतमा किते नहीं चल्लिश्रा उए ॥२॥
भोग भोगने लई नहीं जन्म बनिश्रा,
दुक्खां नाल भी निरा न जालने नूं ।
ईश्वर नाल तजबीज़ दे आप घड़िश्रा,
गुज्झा नेमा संसार दा पालने नूं ।
कम्म करी जाणा शौंह तरी जाणा,
अगां अगां ई पैर उठालने नूं ।
कृपासागरा पुज्जिश्रों अज्ज एथे,
भल्के चुक्क डेरा अग्गे डालने नूं ॥३॥
कम्म बड़े नी जीउण विच्च करन जोग्गे,
केरू समा तिलकेंदड़ा जांवदा ई ।
डोलन जोग नाहियों भावें सख्त जिगरा,
जिसनूं मरण तों खौफ़ नहीं आंवदा ई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हार हुट्ट खड़के ढिल्ले ढोल वांगर,
कसां टुट्टीआं डगा नहीं खांवदा ई ।
कृपासागरा सुफल है जीऊंण जेहड़ा,
कम्मां नाल शहादतां पांवदा ई ॥४॥

जगत्-जुद्ध दा बड़ा मैदान खुल्ला,
लश्कर जिंदगी दा अग्गे डट्टिआ ए ।
गुंगे डंगरां वांग न फिरीं एथे,
चाबक पवे ते पैर चा पट्टिआ ए ।
बनिओं सूरमा, दस्स दो हत्थ जेकर,
तद तूं जस्स जहाण ते खट्टिआ ए ॥५॥
कृपासागरा रणों जे भज्ज नट्ठों,
तद तूं जीउंण एह चौड़ चुपट्टिआ ए ।

सोहणा समझ भविक्ख न पईं फिसल्ला,
ढोल दूरदा मिट्ठड़ा जानीये ना ।
होये बीतड़े समे दा छड्ड टंटा,
भुल्लां पिछलीआं तों चित्त राणीए ना ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्त्तमान जीऊ दे अन्दर कम्म करीए,
तम्बू शेखीआं दे निरे ताणीए ना ।
कृपासागरा बुद्ध जे चित्त अन्दर,
सिर ते रब्ब क्यों फेर पछाणीए ना ॥६॥
जीऊंण वाड्डिआं दे पए करान चेत्ता,
साडे वस्स वे जीउंण उचिआण अपना ।
जान लगिआं समे दे पैहे उत्ते,
ओहजे छड्ड गये खुरा निशाण अपना ।
जिस नूं वेख तारू शौह जिन्दगी दा,
बेड़ा ठेलके विच्च तुफाण अपना ।
कृपासागरा हौसला धरें खबरे,
भक्खड़ डक्क दे श्रीभगवान् अपना ॥७॥
आओ उट्ठीए असीं फिर कम्म करीए,
किस्मत अपनी आप बनावणे नूं ।
डिग्ग डिग्ग के पैर सम्भाल लईए,
लक्क बन्ह लईए उतां जावणे नूं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिर चाढ़ हक होर चा विढ्ढ लईए,
कम्मां विच्च ई उमर लंघावणे नूं ।
कृपासागरा सिक्ख लै करण उद्दम,
काह्ला पर्वीं ना फलांदे खावणे नूं ॥८॥

(७०१)

सीखत कोउ न कला, उदर भरि जीवत केवल ।
पशु समान सब अन्न खात, पीवत गंगा जल ।
धन विदेश चलि जात, तऊ जिय होत न चंचल ।
जड़ समान ह्वै रहत, अकल हत रचि न सकत कल ।
जीवत विदेश की वस्तु लै ता बिन कछु नहीं करि सकत ।
जाग जाग अब साँवरे, सब कोउ रुख तुम्हरो तक़त ।

राग कालिंगड़ा (७०२)

लहौ सुख सब विधि भारतवासी ।
विद्या कला जगत की सीखौ, तजि आलस की फाँसी ।
अपनो देस धरम कुल समुझहु, छोडि वृत्ति निज दासी ।
उद्यम करिकै होहु एक मति निज बल बुद्धि प्रकासी ।
पंच पीर की भगति छोड़िकै ह्वै हरिचरन उपासी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जग के और नरन सम येऊ होऊ सब गुनरासी।

(७०३)

असि कृपाण खंडो खड्ग, तुपक तवर अरु तीर।
सहस सिरोही सैं हथी, यहै हमारे पीर॥

(७०४)

खल गनन सों सज्जन दुखी मति होहिं हरिपद मति रहै।
उपधर्म छूटै सत्त्व निज भारत गहै कर-दुख बहै।
बुध तजहिं मत्सर,नारि-नर सम होहिं सब जग सुख लहै।
तजि ग्राम कविता सुकवि जन की अमृतबानी सब कहै।

(७०५)

उन्नत चित ह्वै आर्य्य परस्पर प्रीति बढ़ावैं।
कपट नेह तजि सहज सत्य व्योहार चलावैं।
जवन-संसरग-जात दोसगन इन सों छूटै।
सबै सुपथ पथ चलैं नितहि सुख सम्पति लूटैं।
तजि-विविध देव रति कर्म-मति एक भक्ति पथ सब गहैं।
हिय भोगवती सम गुप्त हरि प्रेमधार नित ही बहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मरदाने की*

(७०६)

श्रोतगण! सुनते रहे हो भांति भांति छन्द,
कविन की बानी सुधाधार बरसाने की।
साहिबान? हिरदे सम्भाल लीजियेगा जरा,
बारी अब आई है, फकीर मस्ताने की।
खून उबलेंगे, सुनि संग पिघलेंगे, जबां,
आग उगलेगी 'दुःखी' दिल जले दीवाने की।
हँसने हँसाने की न ज्यू बहिलाने की यह,
पूर्ति करी है मैने ठीक मरदाने की।
भूल गये अरजुन, भीम हनूमान राम,
सिमृति रही न परशुराम के फ़िसाने की।

---

* शायद सन् १९२७ या २८ में कलकता में एक कवि सम्मेलन हुआ था, जिस के प्रधान थे, महाकवि पण्डित अयोध्यासिंह जी उपाध्याय "हरिऔध" उस में सुनाने के लिए जो समस्याएं कवियों को दी गई थीं, उस में यह "मरदाने" की भी एक समस्या थी। जहां और २ कवियों ने इसकी पूर्ति की थी वहां हमारे मित्र सरदार मुन्शासिंह जी 'दुःखी" ने भी की थी। प्रस्तुत पूर्ति उन्हीकी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूल गये आज पृथीराज महाराज हमें,
याद ही रही न विक्रमजीत के ज़माने की।
भूल गया शिवाजी प्रताप का प्रताप हमें,
भूल गई तान ही स्वतंत्रता के गाने की।
और की कहानी क्या, लासानी कुरबानी हमें,
भूली गुरू गोविन्द मृगन्द मरदाने की।
लुटते हैं, पिटते हैं, घटते हैं, रोज रोज,
क्या कहें है बात, अपने ही शरमाने की।
माई भौजाई चाची ताई बहिन जाई जाय,
छाती फटती है, सुनि खबर जनाने की।
निपट निलाज मानो लाज बेच खाई आज,
लाज को भी जुर्रत न हमारे ढिग आने की।
कहो क्यों न गैर हमें ताने दे जनाने कहें,
भीरू मार्गे पहिर पोशाक मरदाने की।
बातों से ही काम न चलेगा अब साहिबान,
पड़ी है समस्या 'मारने' या 'मर जाने' की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो रहा है महा परिवर्तन जहान बीच,
कौमें सोचती हैं घात उठने दबाने की ।
सोए हैं जो सोए ही रहेंगे उन्हें हरगिज़,
फुर्सत मिलेगी नहिं जगने जगाने की ।
सुनने सुनाने की न सीखने सिखानेकी यह,
मर मिटो या 'दुःखी' करो पूर्ति मरदाने की ।
भूल गये देश प्यारे कौम प्यार सदाचार,
लागी धुन लंपटपने की जूए खाने की ।
कलम उठाते कर कांपते हैं हांफते हैं,
याद ही रही न कर तेग चमकाने की ।
दुःखी मनहूस जिंदगी बचाने की पड़ी है,
भूल गये आदत ही इज्जत बचाने की ।
नानी मर जाती है कहानी सुन बीरता की,
भीरू क्या करेंगे खाक पूर्ति मरदाने की ।
आये दिन देवियों की बेपति निहार कभी,
आई है विचार! हा! जगह है मर जाने की ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देख दिन रात उत्पात होत आस पास,
आई है उमंग कभी मिटने मिटाने की ?
बाने मरदाने क्यों धरे हैं ए ज़नानों जो पै,
शरम ही रही न 'दुःखी' शरम बचाने की।
भीरुता नपुंसकता त्यागो जागो शेर बनो,
राखो लाज कुल कान बाने मरदाने की।
आँखें खोल बैठें तो अँधेरा अभी दूर होय,
किस की जुर्रत है हमें आँख दिखलाने की।
किस मरदूद की मजाल जो उठावे हाथ,
टान लें जबान बद जबान जो चलाने की।
ख़्याल भी न लावें उत्पात का विरोधी हम,
ठान लें जो प्रण बार भारत बचाने की।
दर्द दिलों मैं कौमी कर्द कलेजे गढ़े,
मरद बनें तो रहे लाज मरदाने की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तम साहित्य

साहित्य द्वारा श्रेष्ट पुरुषों और विद्वानों का ज्ञान तथा अनुभव सर्व साधारण को प्राप्त होता है। परस्पर भेंट और सत्संग से भी ऐसा लाभ होता है सही पर इस काल में ऐसा सत्संग बहुत दुर्लभ है। और विद्वान सज्जन प्रत्येक स्थान पर आ जा भी नहीं सकते वहां क्या दूर और क्या समीप उनके लेख पुस्तक रूपमें पहुंच सकतेहैं। तथा जो श्रेष्ट व्यक्तियां संसारसे कूच कर जाती हैं उनकी कृपाका प्रसाद भी पुस्तकों द्वारा ही हम को प्राप्त होता है।

गुण ग्राही को पुस्तकें घर में गंगा के समान हैं। जब चाहें स्नान कर लें जल पान कर लें।

प्राचीन और नवीन स्वर्गीय और वर्तमान विद्वानोंकी रची पुस्तकोंका यथोचित संशोधन संपादन और प्रकाशन हमारा उद्देश्य है। और बम्बई कलकत्ता प्रयाग काशी आदि के प्रकाशकों से भी उत्तमोत्तम पुस्तकें मंगा कर विक्री करते हैं।

सूचीपत्र मंगा देखिए।

स...

बा...

SPS
891.431 G 97 M
8203

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानस के मोती

संग्रह कर्ता – श्री गुरांदित्ता खन्ना।

गोसाईं तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस (रामायण) एक अद्भुत ग्रन्थ है। उस में कैसे २ रत्न भरे पड़े हैं, यह बतलाने की जरूरत नहीं, क्योंकि हिन्दू मात्र उससे परिचित है। "मानस के मोती" उसी में से लग भग चार सौ के चुने हुए नीति उद्बोधन और प्रार्थना सम्बन्धी दोहे चौपाइयों का संग्रह है। संग्रह तो ऐसे और भी कई एक होए हुए हैं, परन्तु इस में विशेषता एक तो यह है कि दोहे चौपाइयें बहुत उत्तम २ ही संग्रहीत हैं और दूसरी जो सब से बड़ी विशेषता कही जा सकती है, वह यह है कि प्रत्येक दोहे चौपाई के नीचे उसका अर्थ भी लिखा हुआ है, ताकि थोड़े पढ़े रामायण प्रेमी सज्जन भी इससे लाभ उठा सकें। स्त्रियें और बच्चे भी इस के लाभ से वंचित न रह सकें।

पुस्तक देखने ही योग्य है मूल्य ।।)

मिलने का पता——साहित्य भवन

बाज़ार घण्टाघर अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Rajeev

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE